मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 52 दिसम्बर, 2011 अंक : 6

प्रकाशन तिथि : 2 दिसम्बर, 2011

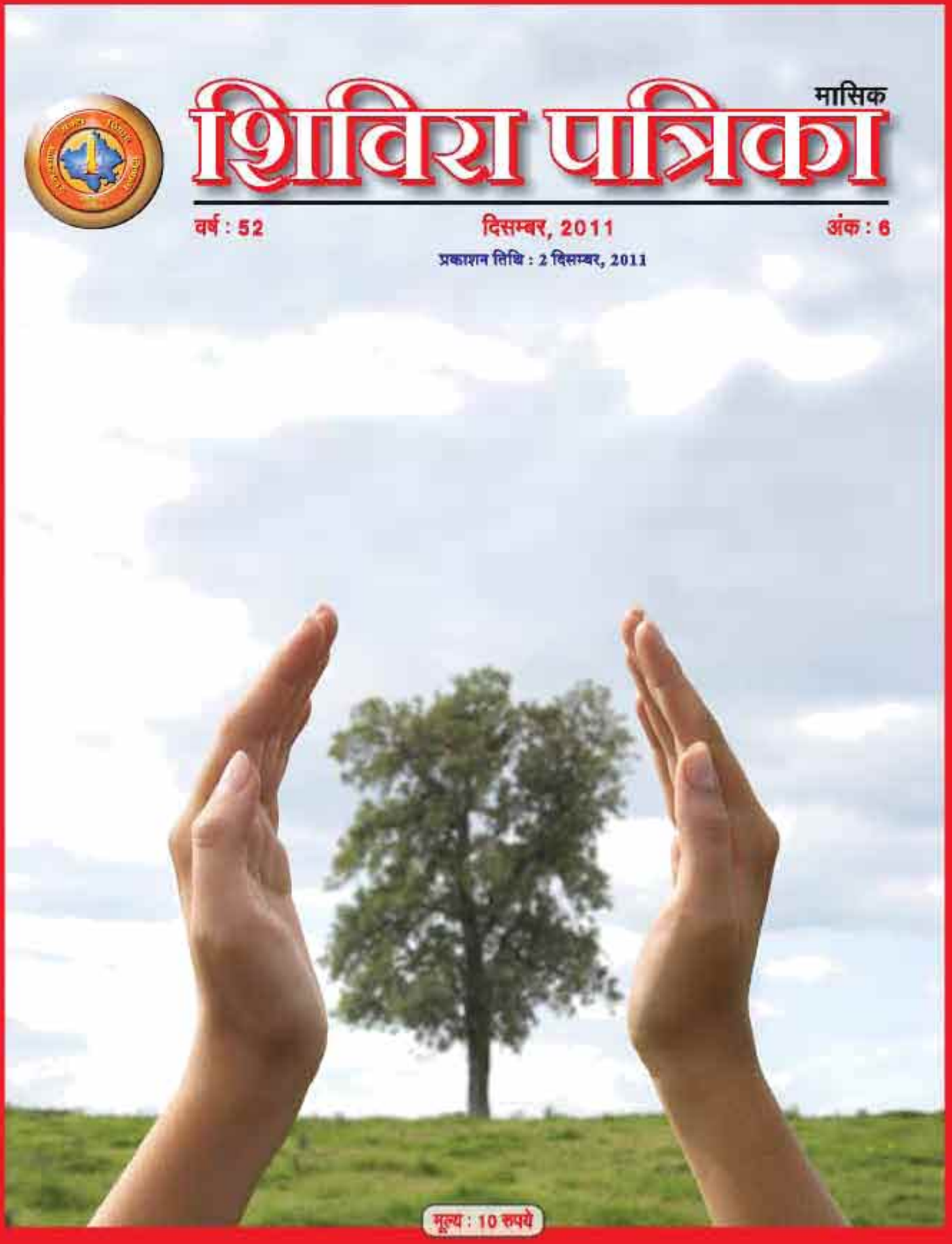

मूल्य : 10 रुपये

इन्दिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार – 2011

दीप प्रज्वलन : इन्दिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार-2011 में मुख्य अतिथि शिक्षा सचिव श्री भास्कर ए. सावन्त एवं शिक्षा अधिकारीगण।

पुरस्कार : मुख्य अतिथि शिक्षा सचिव श्री भास्कर ए. सावन्त के साथ इन्दिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार-2011 से पुरस्कृत छात्राएं (जयपुर)।

श्री निरंजन आर्य, स्टेट चीफ कमिश्नर को प्रशिक्षण केन्द्र अजमेर में स्थानीय संघ बिजयनगर द्वारा प्रकाशित स्काउट डायरी, स्टीकर भेंट।

विश्व हाथ धुलाई दिवस पर राज. प्राथमिक विद्यालय नं. 1, सुजानगढ़ में बच्चों के हाथ धुलवाते हुए शिक्षा अधिकारी एवं अध्यापकगण।

पौधारोपण : (बाएं) उपभोक्ता क्लब द्वारा रा.उ.मा.वि., डूंगरगांव, जिला झालावाड़ में पौधारोपण करते विद्यालय के शिक्षक एवं छात्र। (मध्य में) रा.उ.प्रा.वि., कुमावतों का बाड़िया, पीसांगन (अजमेर) में पौधारोपण करते अतिथिगण एवं स्काउट्स। (दाएं) गो ग्रीन योजना के अन्तर्गत एस.एच. एस. मेमोरियल स्कूल, मुरलीपुरा, जयपुर के ईको क्लब, बुलबुल व टमटोला विद्यार्थियों एवं कॉलोनी की महिलाओं ने भी पौधारोपण किया।

शिविरा पत्रिका

प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा का समाचार-विचार मासिक

वर्ष : 52 अंक : 6

दिसम्बर, 2011

प्रकाशन तिथि : 2 दिसम्बर, 2011

प्रधान सम्पादक
आलोक गुप्ता

•

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश सारस्वत

•

सहायक
लक्ष्मी नारायण शर्मा
मुकेश व्यास

- एक प्रति 10 रु.
- वार्षिक चंदा
  - शिक्षकों/लिपिकों के लिए 50 रु.
  - संस्थाओं/अन्य व्यक्तियों के लिए 100 रु.
- मनी ऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय है।
- पोस्टल ऑर्डर/चैक स्वीकार्य नहीं हैं।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।

पत्र व्यवहार हेतु पता
वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा, राज. बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –व.सं.

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते
श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

इस अंक में

शिक्षा है एक जादू	5	**दिशाकल्प**
पर्यावरण संरक्षण	6	**डॉ. कल्पना शर्मा**
कैसा हो, प्राथमिक शिक्षा का अध्यापक	7	**रवीन्द्र सिंह**
हिन्दी बाल काव्य : दशा, दिशा एवं सम्भावनाएँ	10	**डॉ. रवीन्द्र कुमार उपाध्याय**
झोला पुस्तकालय - 5		
भारत में सुकरात	12	**शिवरतन थानवी**
सृजन का सुख	14	**डॉ. दाऊदयाल गुप्ता**
विद्यार्थियों में सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास	16	**अयुब हुसैन नीलगर**
शिक्षा के द्वारा ही प्रजातंत्र सुरक्षित	18	**कैप्टन सत्यनारायण पंवार**
संस्कारयुक्त विकास का आधार : मूल्यपरक शिक्षा	20	**डॉ. जितेन्द्र लोढ़ा**
बापू की सीख - 7		
सत्य और अहिंसा का पालन	34	**मो.क. गाँधी**
खेल बिना शिक्षा अधूरी	35	**सुधा तैलंग**
शिक्षक की भूमिका एवं सामाजिक कर्तव्य	37	**रेखा शर्मा**
क्या आप अभिभावक होने का फर्ज निभा रहे हैं?	39	**हरीश चन्द्र चौबीसा, लक्ष्मीनारायण चौबीसा**
एड्स एक महादानव	41	**सम्पत लाल शर्मा 'सागर'**

रपट

'मायड़ थारों वो पूत कठै, वो मेवाड़ी सिरमोर कठै' - 36
घनश्याम नाथ कच्छावा
प्रो. भंवर सिंह सामौर सम्मानित - 40
पृथ्वीराज रतनू
57वीं राष्ट्रीय विद्यालयी बास्केटबॉल प्रतियोगिता सम्पन्न - 46
नूतन बाला कपिला
बाल शक्ति - राष्ट्रीय शक्ति - 47
लक्ष्मीनारायण शर्मा

शिक्षक दिवस प्रकाशन - 2011

संवेदना के स्वर - 42, शिक्षा का वातायन - 43, सृजन के आयाम - 44, राता रा फूल रचाव रा - 44, गुब्बारे - 45

स्थाई स्तम्भ

पाठक पीठ - 4/आदेश परिपत्र 23-33/चतुर्दिक 48-49/भामाशाह - 50

आवरण चित्र : नरेन्द्र जोशी ***आवरण संयोजन :*** मुकेश व्यास

पाठक पीठ

स्वागतम्

श्री बृजकिशोर शर्मा ने 17 नवम्बर 2011 को शिक्षामंत्री पद का पदभार ग्रहण किया। आपका जन्म 22 जून 1947 को दौसा में हुआ। आपके पूज्य पिताश्री पं. नवल किशोर शर्मा का नाम सामाजिक एवं राजनैतिक परिदृश्य में बड़े सम्मान के साथ लिया जाता है। आप अभियांत्रिकी की इलेक्ट्रिकल ब्रांच में डिप्लोमा प्राप्त हैं। आपके पास प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, संस्कृत शिक्षा, भाषा एवं भाषाई अल्प संख्यक विभागों के साथ ही देवस्थान विभाग का अतिरिक्त प्रभार है।

श्रीमती नसीम अख्तर इंसाफ ने 16 नवम्बर, 2011 को राजस्थान सरकार के मंत्रिपरिषद् में राज्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की। आपका जन्म 28 मई 1971 को पीसांगन, जिला अजमेर में हुआ। आप बी.ए., बी.एड हैं। राज्य मंत्रिपरिषद् में राज्यमंत्री के रूप में सम्मिलित होने से पूर्व आप महिला एवं बच्चों के कल्याण सम्बन्धी समिति की सदस्या रही हैं। राज्य मंत्री के रूप में आपको प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, भाषा एवं भाषाई अल्पसंख्यक विभाग का दायित्व सौंपा गया है।

चिन्तन

बुजुर्गी ब-अक्लस्त न बसाल,
तवंगरी बदिलस्त न बमाल।

–शेख सादी (गुलिस्तां से)

बुजुर्ग वह है जो अक्लमंद हो, न कि वह जिसकी उम्र ज्यादा हो। धनवान वह है जो दिलवाला हो, न कि वह जो मालदार हो।

बच्चे राष्ट्र की धरोहर

दिशाकल्प 'बच्चे, बाल दिवस और शिक्षा' में व्यक्त निदेशक महोदय जी के विचार सराहनीय लगे। चाचा नेहरू का जन्मदिन बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है। आज के बच्चे कल के भविष्य हैं। बच्चे मुल्क की शानदार इमारत की नींव की ईंटों के समान हैं। अगर मकान की नींव की ईंटें मजबूत होंगी तो मकान भी मजबूत होगा। जिस मुल्क की शिक्षा मजबूत होगी वहाँ का समाज ज्ञानवान, संवेदनशील एवं व्यवहार कुशल होगा। बच्चों को सहज व सरल शिक्षा दी जानी चाहिए। बच्चों को खेल-खेल में शिक्षा दी जानी चाहिए। आज के बच्चे ही देश के भावी निर्माता, कर्णधार हैं। बच्चे राष्ट्र की धरोहर हैं : अनमोल जागीर हैं।

– महेन्द्र सिंह चौधरी, बिलाड़ा, जोधपुर

दिशाकल्प 'बच्चे, बाल दिवस और शिक्षा' पढ़ा। निदेशक महोदय के विचार 'गागर में सागर' भरने जैसे हैं। बच्चों के चाचा नेहरू के माध्यम से बच्चों के सर्वांगीण विकास की ओर जोर दिया है। प्रत्येक विद्यालय का वातावरण ऐसा हो जो बालमन को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करे और उसके मन में विद्यालय एवं शिक्षक के प्रति समाया भय दूर हो सके। निदेशक महोदय के ये विचार प्रत्येक शिक्षक को हृदयंगम करने की आवश्यकता है कि जिस उत्साह और उमंग के साथ बच्चे में शाला की छुट्टी के पश्चात् घर भागने की खुशी होती है। उसी तरह की खुशी, उत्साह और उमंग शाला में आने और अध्ययन करने की भी होनी चाहिए। सभी शिक्षकों को यह जिम्मेदारी लेनी चाहिए।

– देवकीनन्दन भगेगा, नीम का थाना, सीकर

शिविरा नवम्बर 2011 का अंक समय पर मिला। इस अंक का मुखावरण पृष्ठ 'चाचा नेहरू' को समर्पित बहुत ही आकर्षक बन पड़ा है। चाचा नेहरू निःसन्देह बच्चों से बहुत प्रेम करते थे। उनका और बच्चों का एक दूसरे के प्रति अथाह प्रेम था।

'दिशाकल्प' में निदेशक जी ने भी नेहरू जी के बच्चों के प्रति लगाव की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए आम व्यक्ति के लिए भी शिक्षा के महत्व को उजागर किया है। जीवन निर्माण में शिक्षा मूल्यवान भूमिका निभाकर विश्वबन्धुत्व का पाठ पढ़ाती है। निदेशक जी के विचारों का अनुकरण चाहिए।

'रेडियो' के सम्बन्ध में जानकारी ज्ञान-वर्धक व मननीय है। 'बापू की सीख-6' में गाँधी जी द्वारा मनुष्य के जीवन में ब्रह्मचर्य के महत्व एवं पालन सम्बन्धी सीख धारण करने योग्य है।

– रामजीलाल घोड़ेला, कालू, बीकानेर

'दिशाकल्प' के तहत निदेशक महोदय के विचार कल का भविष्य बच्चों पर निर्भर है विचार बहुत अच्छे हैं। बच्चे शाला में आएँ, अध्ययन करें और आगे बढ़ें यह हम सभी की जिम्मेदारी है। शिक्षा जीवन के लिए अत्यन्त उपयोगी और मूल्यवान है शिक्षकों को, बच्चों को भयमुक्त एवं प्रेम व्यवहार से अत्यधिक समझ, धैर्य और प्रेम की एक बड़ी शक्ति की आवश्यकता पर बल दिया है। उचित शिक्षा से ही मूल्यवान समाज का निर्माण किया जा सकता है।

– मानसिंह कस्वाँ, भावठड़ी, झुन्झुनूं

नवम्बर माह की शिविरा पत्रिका के मुखपृष्ठ पर राष्ट्र के प्रथम प्रधानमंत्री का स्नेह बच्चों के प्रति दिखाई देना वर्तमान के लिए नवीन प्रेरणा है। विशेषतः दिशाकल्प में बाल दिवस के महत्व को समझने के लिए समूचे शिक्षक समुदाय के लिए संकेत हैं। बच्चे, बाल दिवस और शिक्षा में बालक के सर्वांगीण विकास की मूल भावना को निदेशक महोदय ने दर्शाया है। नेहरू से सवाल, बच्चों से प्यार का संदेश, डॉ. चन्द्रशेखर वेंकटरमन जीवन परिचय, संस्कारों की प्रथम पाठशाला घर-परिवार सहित अन्य आलेख अभिभावकों और शिक्षकों के लिए प्रेरणादायी है।

– सालगराम परिहार, बालोतरा, बाड़मेर

शिविरांक नवम्बर, 2011 का रंग-बिरंगा चाचा नेहरू का बच्चों को देते प्यार, प्यारा लगा। यह बाल दिवस एवं नेहरू जी को समर्पित अंक वाकई शानदार है। 'दिशाकल्प' में निदेशक महोदय जी ने 'बच्चे, बाल दिवस और शिक्षा' में महापुरुषों के सुविचार देकर हमें उन्हें आत्मसात करने की प्रेरणा दी है। अंक के आलेख पठनीय एवं उत्प्रेरक हैं। मेरी तो चाहत है–

विद्यालय में शिक्षक प्यार से पढ़ाएं।
घर में माता-पिता हृदय से स्नेह लुटाएं॥
तो– बच्चे हँसते-हँसते हर रोज स्कूल जाएं।
बच्चे मौजमस्ती झूमते हुए घर आएं॥

– सौंवलाराम नाथा, भीनमाल, जालौर

शिविरा नवम्बर, 2011 अंक में आवरण चित्र में 'चाचा नेहरू' के बालप्रेम की झलक एवं डा. श्रीलाल मोहता के लेख नेहरू जी से सवाल जवाब में उनकी आत्मकथा 'मेरी कहानी' की छोटी बहिन के जन्म की घटना पर नेहरू जी भावनानुसार प्रत्येक भारतीय को प्रेरणा लेना चाहिए। शिवरतन थानवी जी का 'टीचर जी का कोना जी' शिक्षक जगत को स्वाध्याय, कक्षा शिक्षण, भारतीय शिक्षाविदों एवं महान लेखकों के प्रसंग एवं साहित्य विधा को अनौपचारिक रूप से शिक्षण में प्रयोग करने की विधि बहुत उपयोगी लगी किन्तु, स्वाध्याय हो तब ना।

– बजरंग प्रसाद मजेजी, सांपला, अजमेर

सत्यमेव जयते

आलोक गुप्ता
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

'... शिक्षा इसलिए जरूरी है कि पढ़-लिखकर हम एक नया संसार बना सकते हैं। शिक्षा जादू है, क्योंकि पढ़ने-लिखने के बाद हर इंसान का एक नया जन्म होता है।'

दिशाकल्प

शिक्षा है एक जादू

नवम्बर माह की ग्यारह तारीख (11.11.11) के दिन हमने शिक्षा दिवस मनाया और इस दिन से सम्पूर्ण देश में 'शिक्षा का हक अभियान' का शुभारम्भ किया। दरअसल यह दिन हमारे देश के प्रथम शिक्षामंत्री और महान शिक्षाविद् मौलाना अबुल कलाम आजाद का जन्मदिन है और उनके जन्मदिन को ही शिक्षा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

आपको विदित ही है कि निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 हमारे देश में 01 अप्रैल, 2010 से लागू हो चुका है। राजस्थान में इसे अंगीकृत करते हुए विस्तृत नियम-निर्देश जारी कर दिए गए हैं।

शिक्षा अब याचना का नहीं बल्कि अधिकार का विषय बन गया है। अतः यह आवश्यक है कि 'शिक्षा का हक अभियान' के माध्यम से इस महत्वपूर्ण अधिनियम की जानकारी जन-जन तक पहुँचाई जाए। इसी मंगल उद्देश्य से शिक्षा का हक अभियान का श्रीगणेश किया गया है।

इस अवसर पर हमारे प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने देश के बच्चों के नाम एक संदेश भिजवाया है। महान देश के होनहार बच्चों को शिक्षा का महत्व बताते हुए उन्होंने लिखा है, 'मेरे पास एक जादू है जिससे आप बहुत बड़े काम कर सकते हैं। उस जादू का नाम है– शिक्षा। शिक्षा सिर्फ इसलिए ही जरूरी नहीं है कि पढ़-लिख जाने के बाद नौकरी मिल सकती है या समाज में आदर-सम्मान मिल सकता है। शिक्षा इसलिए जरूरी है कि पढ़-लिखकर हम एक नया संसार बना सकते हैं। शिक्षा जादू है, क्योंकि पढ़ने-लिखने के बाद हर इंसान का एक नया जन्म होता है।'

इसी अवसर पर हमारे मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने प्रदेशवासियों के नाम अपनी अपील में सबके सहयोग की कामना की है। उन्होंने लिखा है, 'मेरा मानना है कि केवल कानून बना देने से ही इसमें सफलता नहीं मिल सकती। जब तक समाज के सभी वर्गों के सहयोग से हम सब मिलकर समूचे प्रदेश को शिक्षित करने का संकल्प नहीं लेंगे, तब तक यह लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता।'

माननीय प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री के संदेश यह सिद्ध करते हैं कि शिक्षा उनकी सर्वोच्च प्राथमिकताओं में है। मुझे विश्वास है कि प्रदेश के शिक्षक सम्पूर्ण मनोयोग से शिक्षा का अधिकार अधिनियम की व्यवस्थाओं के अनुरूप काम करते हुए होनहार बच्चों की सुदृढ़ पीढ़ी तैयार करके भारत को महान देश बनाने में अपनी आचार्य भूमिका को सार्थक करेंगे।

इस माह में अर्द्धवार्षिक परीक्षाएं हो रही हैं। बोर्ड परीक्षाओं के सत्रीय अंक इसी के आधार पर भिजवाए जाएंगे। मेरी विद्यार्थियों से अपील है कि वे पूर्ण तैयारी एवं गम्भीरता के साथ इस परीक्षा में सम्मिलित होवें। इस बात को हृदयंगम करें कि परीक्षा उनके शैक्षिक स्तर की दर्पण है।

शिक्षकों को भी चाहिए कि वे गुरुकुल परम्परा के अनुकूल बच्चों का पथ प्रदर्शन कर इस महान देश को महानतम् बनाने की दिशा में अपना अमूल्य योगदान दें।

(आलोक गुप्ता)

पर्यावरण संरक्षण

❑ डा. कल्पना शर्मा

सन् 1809 में जर्मन वैज्ञानिक अर्नेस्ट हैकील ने कहा था कि किसी भी जीव जंतु के समस्त कार्बनिक, अकार्बनिक वातावरण के पारस्परिक अंतर सम्बन्धों के अध्ययन को पारिस्थितिकी (ECOLOGY) कहते हैं। इकोलोजी ग्रीक भाषा के दो शब्दों OIKOS एवं LOGY से मिलकर बना है जिनका क्रमशः अर्थ है– आवास का अध्ययन। समस्त जीव जंतुओं और वनस्पति के चारों ओर उपस्थित आवास के विभिन्न घटक वायु, जल, भूमि ही पर्यावरण का निर्माण करते हैं।

हमारे स्वस्थ रहने के लिए पर्यावरण का उत्तम होना आवश्यक है। बढ़ती जनसंख्या, वैज्ञानिक औद्योगिक विकास तथा अनियमित नगरीयकरण के फलस्वरूप पर्यावरण सम्बन्धी समस्याएँ दिन-प्रतिदिन उग्र रूप धारण कर रही हैं। पर्यावरण के जैविक, अजैविक घटकों के असंतुलन से पारिस्थितिक तंत्र अव्यवस्थित हो जाता है, जिसे हम पर्यावरणीय असंतुलन एवं पर्यावरण प्रदूषण भी कहते हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार पर्यावरण को संतुलित बनाये रखने के लिए लगभग 35 प्रतिशत भूभाग वनों से आच्छादित होना चाहिए। एक सर्वेक्षण के अनुसार भारत में लगभग 14.10 प्रतिशत वन क्षेत्र है जिसमें सघन वन मात्र दो प्रतिशत भूमि में ही हैं। राजस्थान में वनों का क्षेत्र 9 प्रतिशत माना जाता है परन्तु विंध्याचल एवं अरावली के ज्यादातर पर्वतों का सफाया होने से सघन वन मात्र 2 प्रतिशत ही रह गये हैं। वनों के घटने से जीव जंतु भी कम होते जा रहे हैं। अनियंत्रित एवं अनियोजित खनन एवं जल के अविवेकपूर्ण दोहन के कारण स्थिति भयावह हो गई है। गाँव-गाँव में आरक्षित देव वन जो कि पशु-पक्षियों की प्राकृतिक शरणस्थली थे, मानव के निजी स्वार्थों की बलि चढ़ गये हैं।

प्राकृतिक संसाधनों के निर्ममतापूर्वक दोहन से ग्रीन हाउस इफैक्ट, ओजोन मंडल में छेद होना व ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याएँ पैदा हो गई हैं। जल, जंगल, जमीन, जलवायु और जीव जन्तु आज तबाही के कगार पर खड़े हैं। प्रकृति से दुश्मनी के फलस्वरूप सुनामी की त्रासदी, भूकम्प, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोप उत्पन्न हो रहे हैं। हाल ही में जापान में भूकम्प से उत्पन्न सुनामी लहरों के तांडव ने पूरी दुनिया को झकझोर दिया है।

पर्यावरण प्रदूषण आज हमें विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर हो रहा है, जैसे– वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, रेडियोधर्मी प्रदूषण एवं नैतिक प्रदूषण आदि। पर्यावरण प्रदूषण से विभिन्न प्रकार के रोग जैसे श्वांस सम्बन्धी रोग, कैंसर, तनाव, लकवा जैसे रोगों में बेतहाशा वृद्धि हो रही है। आज हमें प्रकृति व मनुष्य के बीच की खाई को पाटकर प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने की आवश्यकता है। हम पर्यावरण की रक्षा करेंगे तभी पर्यावरण हमारी रक्षा करेगा। विद्यालय स्तर पर पर्यावरण प्रदूषण के निवारण एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु निम्नांकित बिन्दुओं पर क्रियान्विति आवश्यक है– (1) विद्यालय पर्यावरण को स्वच्छ, आकर्षक एवं हरा भरा बनाने हेतु शिक्षक को विद्यार्थियों का सहयोग लेकर वृक्षारोपण करना चाहिए। साथ ही वृक्षों की सार संभाल प्रत्येक बालक को सौंपी जाए तो यह प्रेरणा बच्चों से होती हुई अभिभावकों तक जाएगी एवं धीरे-धीरे पूरे राष्ट्र में फैलेगी। बालकों व अभिभावकों के माध्यम से गाँवों व शहरों में आवासीय क्षेत्रों में तथा आसपास वृक्ष लगाने की प्रेरणा दी जानी चाहिए। विद्यालय में संचालित ईको क्लब, भामाशाह, स्वयंसेवी संस्था आदि के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण व वृक्षारोपण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र व पुरस्कारों से सम्मानित किया जाना चाहिए। इससे जहाँ बालकों में विद्यालय व अपने परिवेश के लिए पर्यावरण संचेतना जागृत होगी वहीं दूसरी ओर जिस कार्य की प्रगति हम देखना चाहते हैं उसकी शुरुआत स्वयं ही हो जाएगी। (2) औद्योगिक इकाइयाँ पर्यावरण प्रदूषण का प्रमुख कारण है। इनसे निकलने वाले हानिकारक धुएँ, रासायनिक अपशिष्ट व कर्कश ध्वनि ने जहाँ वन क्षेत्रों को संकुचित करके रख दिया है वहीं दूसरी ओर वन्य जीवों के जीवन में भी घातक जहर मिला दिया है। गन्दे पानी के नाले नालियों में चाहे वे औद्योगिक इकाइयों से निकले हानिकारक अपशिष्ट पदार्थ हों चाहे आवासीय बस्तियों से विसर्जित मलमूत्र हों पर्यावरण को प्रदूषित करते हैं। इस हेतु हमें पर्यावरण संरक्षण व प्रबन्धन के लिए ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में पर्यावरणीय शिक्षा की अलख जगानी होगी। विद्यार्थियों को विज्ञान क्लब, ईको क्लब आदि के माध्यम से समय-समय पर कूड़े, कचरे, पॉलीथिन आदि के उचित निस्तारण एवं प्रबंधन की सटीक वैज्ञानिक जानकारी, प्रयोग, प्रदर्शन, सेमीनार, कम्प्यूटर शिक्षा आदि के द्वारा दिखाई जानी चाहिए जिससे विज्ञान व प्रौद्योगिकी की उन्नति के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों को निष्कृत करने के उपाय पूर्व में ही अन्वेषित कर लेंगे। विद्यालय के बरामदों में पर्यावरण संरक्षण के लिए आदर्श वाक्य लिखवाकर, प्रसंग सुनाकर गंदे पानी के उचित प्रबन्धन के मॉडल, पोस्टर आदि लगाकर भी छात्रों को पर्यावरण शिक्षा दी जा सकती है। (3) उद्योगों, वाहनों, रेडियो, टेप, लाउडस्पीकरों के शोर के प्रति जनचेतना जागृत की जानी चाहिए। बालकों द्वारा समय-समय पर गाँवों व शहरों में रैली निकाल सेमीनार द्वारा नुक्कड़ नाटक, दूरदर्शन आदि के द्वारा वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने पर ही मानसिक शांति संभव है का संदेश जन-जन तक पहुँचाया जा सकता है। (4) पशु व पक्षियों के संरक्षण के लिए उनके शिकार व पशुक्रूरता विरोधी कानूनों को सख्ती से लागू करने के लिए जन-जन में जीव जंतुओं के प्रति जागृति पैदा करनी चाहिए। विद्यालयों में पक्षियों के लिए जलपात्र लगाना, चुग्गा डलवाना व पशुओं के पीने के लिए जलपात्र रखकर पानी की व्यवस्था जैसे कार्यों से जैव विविधता संरक्षण की अलख जगाई जा सकती है।

विकास व विनाश दोनों सहोदर हैं। अतः पारस्परिक पारिस्थितिकीय संतुलन बनाये रखने के लिए पर्यावरणीय शिक्षा द्वारा पर्यावरण संरक्षण हेतु सक्रिय भूमिका निभानी होगी। मानवीय विकास को ही असली विकास मानना होगा और प्रकृति के मित्र के रूप में आचरण करना होगा।

–प्रधानाध्यापिका, रा. बालिका माध्यमिक विद्यालय
ब्राह्मणों की सरेरी, जिला भीलवाड़ा (राज.)

कैसा हो, प्राथमिक शिक्षा का अध्यापक

❑ रवीन्द्र सिंह

रिश्ते केवल इंसान की दुनिया में हैं, पशु, पक्षियों की दुनिया में नहीं। बच्चे के जन्म लेते ही अनेक रिश्ते उसके साथ जुड़ जाते हैं। परिवार के बाद, किसी बच्चे का हृदयी बन्धन जुड़ता है, तो केवल शिक्षक के साथ। बस छोटी सी उम्र में बच्चा अपने अध्यापक के सम्पर्क में आ जाता है। फिर वह अपने मन के खाली पृष्ठों की किताब, शिक्षक के सामने खोलकर रख देता है। शिक्षक की इच्छा है, उस पर अच्छा लिखे या बुरा। नन्हा कुसुम शिक्षक के हर अन्दाज को सूक्ष्मता से देखना प्रारम्भ कर देता है। एक मर्यादित अध्यापक का प्रभाव उस पर इस तरह छाने लगता है कि माता-पिता का प्यार व विश्वास भी दूसरे स्थान पर दिखाई देने लगता है। अध्यापक की एक ही आवाज से सारी कक्षा का अनुशासित हो जाना, उसे भी अनुशासन का पाठ सिखाने लग जाता है। कभी-कभी अपने गुरु जी के प्रति उसके समर्पित भाव इस तरह झलकने लगते हैं कि बड़े सहज व भोले स्वभाव में दो विद्यालयों के बच्चे, आपस में अपने-अपने अध्यापक की बात मजबूती से रखने लगते हैं। मसलन– 'मेरे गुरुजी कर सकते हैं।' धीरे-धीरे बच्चों की दुनिया में अध्यापक उनके सब कुछ बन जाते हैं।

बस प्रश्न यहीं से शुरू होता है– क्या शिक्षक के मन में भी बच्चे का कोई स्थान बन पाया है ? गुरुजनों, प्राथमिक स्तर से ही बच्चों का शाला त्याग देना, तो इस प्रश्न के हाँ में गवाही नहीं भरता। क्या कभी एकतरफा प्यार व विश्वास परवान चढ़ा है, तो फिर उनसे एकलव्य व काली बाई जैसी गुरु भक्ति व श्रद्धा की उम्मीद रखना कहाँ तक उचित है। है ना चिन्तन का विषय। हमें स्वीकार तो करना ही पड़ेगा। आखिर कैसा हो ? इन बच्चों का अपना अध्यापक।

अध्यापक बच्चों को पढ़े केवल पुस्तकों को नहीं– अध्यापक बच्चों का ज्ञाता हो या न हो, विषय ज्ञाता अवश्य हो, हमने अध्यापक को केवल इसी रूप में स्वीकार किया है। यही कारण है, बच्चे अध्यापक के अपने नहीं बन पाते। अध्यापक पढ़ाता है, जाँच करता है व सजा देता है इससे आगे वह निकलना ही नहीं चाहता। बच्चों के अपने निजी जिन्दगी के अनेक सवाल हैं। उन सवालों को जाने बिना पाठ्य पुस्तकों के प्रश्न कोई मायने नहीं रखते। उनकी व्यक्तिगत समस्याओं को समझकर व उनके दिलों में जगह बनाकर ही हम उनके मस्तिष्क में अंकों व शब्दों के जाल बुन सकेंगे। इसी कारण से अधिकांश बच्चे शिक्षा से वंचित रह जाते हैं जो कि इनका मूल अधिकार है। एक बार मैंने अपनी ससुराल जलन्धर में लगभग प्रातः 11 बजे पड़ौस के घर की दो बच्चियों को घर से बाहर खड़े, गले में बस्ता लटकाए रोते हुए देखा। जिसमें से बड़ी बच्ची की उम्र 10 वर्ष की होगी। मैंने उन बच्चों को बुलाना चाहा तो मेरी सास ने मुझे रोक दिया। उन्होंने मुझे बताया इन बच्चों का रोज का यही काम है। स्कूल से भाग आते हैं। मां इस कारण से परेशान रहती है। इसलिए वह इन बच्चों को घर में नहीं आने देती। लगभग 3 बजे मेरी निगाह फिर उसी जगह पर पड़ी। बड़ी बच्ची अभी भी रो रही थी। उसके रोने का स्वर मन्द हो चुका था उसके गालों पर आँसू की धारा सूख कर अपना निशान बना चुकी थी। बच्चों के चेहरे पर थकान स्पष्ट नजर आ रही थी। जबकि बच्चों की माँ, सामने मुख्य द्वार पर बैठी, तटस्थ भाव लिए, कपड़े धो रही थी। मुझसे रहा नहीं गया। मैंने बच्चों को अपने पास बुलाने के लिए इशारा किया। बच्चों के खड़े होने की सीमा इस कदर छूट चुकी थी, उसी समय मेरी ओर चले आए। मैंने बड़ी बच्ची से उसकी सारी समस्या को ध्यान से सुना। पढ़ाई में कमजोर होने के कारण, गृह कार्य ठीक ढंग से नहीं कर पाती। अध्यापक केवल कार्य चाहते हैं। इसलिए बहाना बनाकर वह स्कूल से छुट्टी लेना चाहती है। उसे छुट्टी मिलती नहीं इसलिए स्कूल से भाग आती है। मजबूरी से छोटी बहिन भी उसके साथ आ जाती है। मैंने बच्चों की माँ को बुलाया। उसने आते ही गुस्से से कहा– जब तक शाला की छुट्टी नहीं हो जाती मैं इन्हें घर पर कदम नहीं रखने दूँगी। मैंने बच्चों की माँ को समझाया, ये बच्चे निर्दोष हैं। इन बच्चों की मैं गारन्टी लेता हूँ। ये कभी भी स्कूल नहीं छोड़ेंगे। मैं बच्चों को लेकर शाला गया व प्र.अ. से मिला। मैंने उनसे बड़ी बच्ची के गृह कार्य हेतु विशेष रियायत माँगी तथा उनके सम्मुख बच्ची से कहा आज के बाद आप कभी भी स्कूल नहीं छोड़ेंगी। हाँ, जिस दिन स्कूल नहीं जाना अपने गुरुजी से अनुमति माँगेगी और गुरुजी से भी छुट्टी देने के लिए कह दिया।

गुरुजनों ! आप यकीन करें, बच्ची ने उस दिन के बाद कभी भी स्कूल नहीं त्यागा, न कभी छुट्टी माँगी। वर्तमान में उस बच्ची ने 10+2 कक्षा प्रथम श्रेणी से पास कर ली है। जब भी ससुराल जाता हूँ बच्ची खुशी के साथ आकर मिलती है। तब अध्यापक होने का गर्व महसूस करता हूँ।

मेरी शाला की कक्षा 7 का एक छात्र भारत है। बाप नहीं है, माँ घरों में बर्तन माँजती है। शाला में प्रवेश देने पर किसी अभिभावक का मुझे फोन आया। 'गुरुजी- आपने भारत को प्रवेश दिया है तो मेरे, बच्चों की टी.सी. काट दो। यह गलत संगत में पड़ा है, जिससे हमारे बच्चे भी खराब हो सकते हैं' मैंने उन्हें भरोसा दिलवाया कि यह काम हमारे पर छोड़ दो। भारत को बारीकी से देखने की कोशिश की। पढ़ाई में कमजोर है, उसके घर व मोहल्ले का वातावरण अच्छा नहीं है। हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती थी उसे शाला से जोड़ने की। शाला की हर गतिविधि ही उसे अच्छा बना सकती है। वह आँखें बन्द करके प्रार्थना करेगा, शाला प्रांगण में पौधों की देखभाल करेगा, बच्चों के साथ बैठ भोजन करेगा, कतार में खड़ा अपनी बारी का इन्तजार करना ही तो उसे अनुशासन का पाठ सिखाएगा। मैंने उसे कक्षा में आगे बैठने के लिए कह दिया। मेरे बैग में पड़ी ऐनक, मोबाइल आदि वस्तुओं की निकालने की जिम्मेदारी भी उसे सौंप दी। कक्षा में प्रश्नों के उत्तर जाँच करने में भी उसकी हिस्सेदारी निश्चित कर दी। व्यावहारिक प्रश्नों के उत्तर वह दूसरे छात्रों से बेहतर जानता था। इस तरह के अवसर प्रदान कर उसमें विश्वास जगाने का प्रयास शुरू किया।

बच्चों ने बताया कि भारत मुँह से विभिन्न आवाजें बड़ी बखूबी से निकाल लेता है। बस मुझे इन्तजार था उसकी कला को प्रदर्शन करने का। 15 अगस्त के सांस्कृतिक कार्यक्रम में भारत ने विभिन्न पशु, पक्षियों, हवाई जहाज, कलाकारों व एम्बूलेन्स गाड़ी की आवाज सुनाई। बच्चों की तालियों की गड़गड़ाहट में ईनाम पाकर, स्कूल की चारदिवारी में वह हमेशा के लिए समर्पित हो गया।

बच्चे को शाला से जोड़ने की कीमत बस आपको इतनी चुकानी है, बच्चा कहीं भी मिले उसे बस प्यार से बुलाना है। शाला समय बाद, बच्चा कहीं भी मिले, आप उसके चेहरे पर आए भाव पढ़ कर देखें, वह घबराता है, शरमाता है, कभी मुस्कराता है यदि आपने उसका दिल जीतना है तो कुछ दूर निकलकर उसे पलट कर अवश्य देखें, निश्चित ही वह आपको देख रहा होता है। इस बार आपका देखना उसके मन में स्थान बना ही लेता है। बन्धुओं, दूर जा रहे बच्चों में से यदि किसी की अंगुली आपकी तरफ इशारा कर रही होती है तो मैं यकीन से कह सकता हूँ वह बच्चा अपने साथियों से कह रहा होता है– 'वो मेरे गुरुजी हैं'। यदि हम भी उसी विश्वास से कह सके कि 'वो मेरा शिष्य है' फिर तो बात ही बन जाए। एक शाम गली में शाला के दो छोटे बच्चे मुझे जाते हुए मिले। बच्चे कुछ खा रहे थे। पास से गुजरने पर बच्चों ने नमस्ते बुलाई। एक ने बड़े प्रेम से मुझे कहा– लो गुरुजी बेर खा लो। बच्चे खाने की वस्तु अधिकतर किसी का देते नहीं हैं लेकिन अपने गुरुजनों को वस्तु देकर बड़ी खुशी महसूस करते हैं। कक्षा में आप एक पेन्सिल ही माँग कर देख लें हर कोई बड़ी शीघ्रता के साथ अपने बैग से पेन्सिल निकाल कर देने का प्रयास करता है। बच्चों का दिल रखने के लिए मैंने उनके नन्हें हाथों से बेर ले ही लिए। शायद भगवान श्री राम ने ही ऐसा रसास्वादन शबरी के बेरों से पाया होगा। बच्चे अपने अध्यापक को कितना चाहते हैं। उनके प्रति मन में कितना सम्मान भाव रखते हैं। इसका हम अनुमान भी नहीं लगा सकते। बच्चा अपने शिक्षक की एक-एक गतिविधि, पहनावा, भाषा, आदत व स्वभाव को बड़ी गहराई से देखता है। यदि अध्यापक के व्यवहार में उसे स्नेह, कोमलता, शीतलता व मिठास का अनुभव होता है तो बस उसी का बनकर रह जाता है। वह अपने गुरुजनों से बहुत बड़ी उम्मीद भी रखता है। नामांकन अभियान के समय माँगकर जीवनयापन करने वाले झुग्गी झोपड़ी के परिवारों के पास जाने का अवसर मिला। मैं झोपड़ी के अन्दर बिछी चारपाई पर बैठ गया। अभिभावकों से बच्चों के प्रवेश हेतु बातचीत शुरू हुई। पास में ही खड़ा छः वर्षीय 'सेठी' सारी बातें ध्यान से सुन रहा था। गुरुजी को अपने घर बैठा देख, 'सेठी' ने आसानी से कल शाला आने की हामी भर ली। अगले दिन शाला में सेठी की निगाहें सभी अध्यापक के बीच मुझे ढूँढ़ रही थी। सेठी की बहुत सी आदतें अन्य बच्चों से नहीं मिलती। बच्चों के बीच बैठने में झिझक महसूस करता है। हर चीज को माँग कर लेना चाहता है। वह अपने हिस्से का पोषाहार भी माँगकर लेता है। बच्चे उसकी आदतों पर हँसते हैं उसे अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों को सीखने में कुछ समय तो लगेगा। उससे अभी तक अनुशासित विद्यार्थी की उम्मीद रखना कहाँ तक उचित है। कक्षा में आने पर सेठी मुझसे कहने लगा– गुरुजी, मुझे वर्दी दे दो। मैंने पूछा– कैसी वर्दी। उसने कहा– पुलिस की। वह पुलिस अफसर बनना चाहता है। एक रात लगभग 11 बजे मैं मोटर साइकिल से झुग्गी झोपड़ी के सामने से जा रहा था। तभी मुझे शान्त, रात्रि में डूबी उस बस्ती में सेठी की आवाज सुनाई दी– 'मेरा गुरुजी जावै।' जब एक छोटा सा बच्चा अंधेरी रात में अपने गुरुजी को पहचान लेता है तो क्यों हमें उसे रोशनी में भी पहचानने में मुश्किल आती है। देर रात तक उसकी करुणामयी आवाज रुक-रुक मुझे मेरे कर्तव्य का अहसास करवा रही थी। क्यों गुरुजी– सेठी को पुलिस अफसर बना पाओगे?

अध्यापक बच्चों को नियमों में न बाँधे– अधिकतर अध्यापक यही चाहते हैं कि मेरी कक्षा अनुशासित हो। बच्चे चुपचाप बैठ जाएँ, चाहे अध्यापक कक्षा में हो या न हो। शिक्षक पढ़ाएँ या न पढ़ाएँ। बच्चे छोटी कक्षा के हों या बड़ी कक्षा के। गिजुभाई का कहना है– बच्चों को अपनी रीति से, मर्जी से, सब कुछ करने दो। हम बच्चों की स्वतन्त्रता में क्यों बाधक बनते हैं। वह कैसा आँगन होगा– जहाँ बच्चे तो हैं पर बच्चों की किलकारियाँ नहीं सुनाई देती। हम उनकी आवाज क्यों नहीं सुनना चाहते ? उन्हें एक खूँटी के साथ क्यों बाँधना चाहते हैं ? ऐसे वातावरण में वे क्या सीख पाएँगे। यदि वह कुछ सीख भी जाएँ तो क्या सीखने में खुशी महसूस कर पाएँगे स्वतंत्र व खुले वातावरण में, वे आपसे बिना हिचक कुछ कह पाएँगे। हमें उन्हें कुछ सिखाना नहीं बल्कि सिखाने के लिए केवल अवसर प्रदान करना है। उन्हें ये महसूस ही न हो कि वे कुछ सीख रहे हैं। आत्मीयता से सुनाई आपकी बात उन्हें शान्त कर देगी। बच्चे विषय को नवीन ढंग से सुनना चाहते हैं। वे विषय सम्बन्धित हर बात को अपने परिवेश के साथ जोड़कर देखना चाहते हैं।

प्रार्थना सभा में हम बच्चों के नाखून, कपड़े व स्नान आदि की जाँच करते हैं। कुछ बच्चे बार-बार कहने पर भी सफाई का ध्यान नहीं रखते। एक दिन हमने शाला में पानी की टूटी के नीचे एकत्रित पानी में कुछ पक्षियों को नहाते हुए देखा। विचार आया क्यों न इस दृश्य का संदेश बच्चों तक पहुँचाया जाए। चिड़ियों का कूद-कूद कर, पंख फड़फड़ाकर नहाने का करतब बच्चों को दिखाया गया। बच्चों से पूछा क्या नहाती हुई चिड़ियाँ खुशी महसूस कर रही हैं? क्या इन्हें नहाने के लिए कोई कह रहा है? नहाना शरीर के लिए कितना जरूरी है। जब पशु पक्षी भी इसका महत्व समझते हैं। फिर हम क्यों नहीं? बच्चे इस संदेश को अच्छी तरह समझ चुके थे।

शिक्षक बच्चों को छोटा न समझें– अक्सर अध्यापक बच्चों के मानसिक स्तर को निम्न मानते हुए, ज्ञान देते हुए संकोच कर जाते हैं। चाहे विषयवस्तु, पाठ्यक्रम का ज्ञान विज्ञान, नैतिक मूल्यों या आध्यात्मिक स्तर का हो। जबकि बच्चों में बहुत कुछ सीखने की क्षमता होती है। आप उन्हें बताने का प्रयास करते रहें। धीरे-धीरे वह आपकी कल्पना से कहीं अधिक सीख जाएँगे। मेरे मित्र अध्यापक का बच्चा दूसरी कक्षा में पढ़ता है। प्रार्थना में सामूहिक रूप से बताई गई बातें घर आकर बतलाता है। 'पापा, आपको पता है - टीचर डे क्यों मनाते हैं? पापा आज रवीन्द्र नाथ टैगोर का जन्म दिन है। बताओ कहाँ कमी है, बच्चों में सीखने की।

मैंने कक्षा 5 के एक बच्चे को आध्यात्मिक स्तर की एक बात बताई। जिसका

परिणाम लगभग 5-6 माह बाद देखने को मिला। शाला में एक दिन जिला मुख्यालय से एक कलाकार आया जो छात्रों को स्वच्छता एवं साक्षरता सम्बन्धित बातें रुचिकर ढंग से बता रहा था। उसने बच्चों से पूछा– बताओ, ऐसा कौन सा कार्य है जो आसान भी है और मुश्किल भी ?

एक बच्चे का उत्तर सुनकर वह हैरान हो गया। कहने लगा– मेरा उत्तर तो कुछ और था पर बच्चे ने जो उत्तर बताया। वह मेरी जानकारी में भी नहीं था। बच्चे का उत्तर था– 'परमात्मा को पाना'।

उच्च प्राथमिक स्तर तक मैंने देखा, बच्चे कुछ सीखने को हमेशा लालायित रहते हैं। कमी तो बस हमारी रह जाती है। हम ठीक ढंग से बता नहीं पाते। नव वर्ष की शुभकामना, प्रार्थना सभा में बच्चों को दे रहा था। मैंने बच्चों से इस अवसर पर कोई एक संकल्प लेने को कहा जिसे वे सहजता के साथ जीवन में निभा सकें। किसी एक बच्चे ने इसे अन्तर्मन से स्वीकार कर लिया उसने इस प्रण को किस हद तक निभाया, जरा इसे पढ़िए।

कक्षा चार की एक छात्रा निम्मी रो रही थी। पूछने पर बताया उसे बहुत तेज बुखार है। उससे पूछा इतने बुखार में वह स्कूल क्यों आई। छात्रा ने बताया– मैंने नव वर्ष पर शाला रोज आने का संकल्प लिया है। बच्ची की पिछले 5-6 माह की उपस्थिति जाँच की, तो उसमें एक भी अनुपस्थिति नहीं थी। बच्ची को समझाया ऐसी स्थिति में अवकाश लेने पर संकल्प नहीं टूटता। शिक्षण कार्य करवाते समय कभी भी बच्चे के मानसिक स्तर को छोटा नहीं आँकें। बच्चों का शिक्षा में पिछड़ने का यह भी कारण है।

शिक्षक अपना मूल्यांकन अवश्य करे– कोई भी व्यक्ति वह नहीं है जो उसके प्रति दूसरों के विचार हैं। एकान्त स्थान में उसके मन में चल रहे विचार ही उसी व्यक्ति के चरित्र को दर्शाते हैं। शायर भी यही कहना चाहता है– *औरों से तो हर रोज मिला करते हो। क्या कभी खुद से भी मुलाकात करोगे।* यदि कोई व्यक्ति अपने लिए स्वयं जज बन सके, फिर दुनिया से अपने लिए कुछ कहने की इच्छा ही नहीं रहती। अतः किसी भी शिक्षक को अपनी पहचान कुछ समय बाद ही होती है। जब उसे अपने ही हाथों लगाए पौधशाला से मीठे व कड़वे फल चखने को मिलते हैं। छोटी उम्र में बच्चा आपके व्यवहार को देखता तो है, कहता नहीं है। कुछ वर्ष बाद केवल देखता नहीं बल्कि आपसे व समाज से बहुत कुछ कहता भी है। उसके द्वारा कहे गए एक-एक वक्तव्य हमें अतीत में ले जाते हैं। फिर मन ही मन हमें सच को स्वीकार करने के लिए विवश करते हैं। यह सत्य है, जिस तरह समाज, कानून व इज्जत के डर से बिना सतर्क हुए, एक चोर, चोरी करने में सफल नहीं हो सकता, मौत के डर को रखे बिना एक भक्त, भक्ति नहीं कर सकता, भविष्य में अपने ही शिष्यों से मिले। मान, अपमान के डर रखे बिना, एक शिक्षक अच्छा अध्यापक नहीं बन सकता। हम अपने बच्चों के अभिभावकों से, उनके विद्यार्थी जीवन के किस्से सुनते रहते हैं। वे अपने गुरुजनों की कार्यशैली निःसंकोच बयां करते हैं। कुछ बातों पर हमें शर्म भी महसूस होती है। जब किसी मेहनती व ईमानदार अध्यापक की बात उसके जुबां पर आती है तो हमें अपने अध्यापक होने का मान महसूस होता है। मेरे वर्तमान विद्यालय रा.उ.प्रा.वि. नं. 3 के भूतपूर्व अध्यापक श्री शंकरलाल जिनकी मृत्यु हो चुकी है, उनकी कर्तव्यनिष्ठता व समर्पण की भावना कई अभिभावकों से सुनने को मिलती है। उनकी यादों को बयां करते मैंने एक अभिभावक की आँखों में आँसू छलकते भी देखे हैं। बस यही है, एक विद्यार्थी की अपने प्रिय गुरु के प्रति सच्ची श्रृद्धांजली। रास्ते में मिलने वाले भूतपूर्व विद्यार्थी के अभिवादन से ही आप अनुमान लगा सकते हैं कि अमुक छात्र के दिल में आप कितना स्थान बना पाए हैं। चाहने वाले छात्र की आँख तो भीड़ में भी आपको ढूँढ़ लेगी। अन्यथा वह आपके पास से, बिना कुछ कहे गुजर जाएगा। बच्चों के साथ दरी पर बैठना, खेलना, सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेना व रुचिकर ढंग से पढ़ाना ही, उन्हें आपके करीब लाता है। मैंने अपने जीवन में केवल एक छात्र को अभिवादन करते हुए नहीं देखा उसका नाम है– राजू गोसाईं। मैंने जब अतीत की तरफ देखा, गलती साफ नजर आ गई। वह कई बार स्कूल से अनुपस्थित रहता था। एक बार वह मुख्य द्वार के सामने से गुजर रहा था। बच्चों ने कहा– गुरुजी राजू स्कूल नहीं आया। मैंने उसे पकड़कर लाने के लिए कह दिया। मेरे कहते ही 5-6 बच्चे उसकी ओर दौड़े बच्चों को देखकर वह भागने लगा लेकिन भाग नहीं पाया। बच्चों ने उसे हाथ-पैर से पकड़कर मेरे सामने ला खड़ा कर दिया। बस मेरे इसी व्यवहार ने उसे मुझसे हमेशा के लिए दूर कर दिया। हमें अपने मूल्यांकन को पूर्ण ईमानदारी के साथ स्वीकार करना होगा तभी अपनी बात बच्चों के बीच प्रभावी ढंग से कह पाएँगे। अन्यथा नैतिकता का पाठ कितना भी पढ़ा लो उसका असर कहीं देखने को नहीं मिलेगा। मेरे एक मित्र अध्यापक ने अपने छात्र से पूछा– आप स्कूल देरी से क्यों आए हो? बच्चे का जवाब था– गुरुजी आप भी तो कल लेट आये थे। वास्तविकता है, तो स्वीकार करना ही पड़ेगा।

बच्चों के प्रति अध्यापक का व्यवहार लोकतांत्रिक हो– शाला त्यागने में अध्यापक का व्यवहार बच्चे को ज्यादा प्रभावित करता है। पढ़ाई से पिछड़े कई बालक अध्यापक के मधुर व्यवहार के कारण शाला से लम्बे समय तक जुड़े रहते हैं। बढ़ती उम्र के साथ अपने अनुभव व व्यवहार से वह उच्च शिक्षा ग्रहण करने में सफल हो जाते हैं। शिक्षा की यह आदर्श स्थिति है। अध्यापक छात्र की परिस्थिति समझे बिना जब उसे दण्डित या अपमानित कर देता है। डर व सहमा हुआ बालकहीन भावना का शिकार हो जाता है। ऐसे बच्चों में कई बार विद्रोह देखने को मिलता है। आखिर उन बच्चों के पास शाला त्यागने के सिवाय अन्य कोई रास्ता नहीं होता। शिक्षण कार्य में बच्चों को दण्डित करना अध्यापक के स्वयं की कमजोरी साबित करती है। क्योंकि वह अध्यापक कथन को सही ढंग से ग्रहण नहीं कर पा रहा। शिक्षण कार्य के अतिरिक्त कुछ अन्य कारणों में जैसे– अनुशासन न बनाए रखना, लड़ाई झगड़ा करना या आदेशों की पालना न करने में अध्यापक अक्सर अपनी प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाकर, बच्चों को सीमा से अधिक प्रताड़ित कर देते हैं। ऐसी स्थिति में छात्र दण्ड स्वीकार कर तो लेते हैं लेकिन गुरु-शिष्य के पावन रिश्ते में कड़वाहट पैदा हो जाती है। बच्चों में ईर्ष्या, जलन व अहंकार जैसी भावना नहीं होती। वे आपके आदेशों की अवहेलना कभी नहीं करते। कुछ बातों में हमें

अपने नजरिए को बदलने की आवश्यकता होती है। मेरे स्कूल की कक्षा-7 का एक विद्यार्थी हरिओम है। शरीर से मजबूत लेकिन दिमागी रूप से कुछ कमजोर है। कक्षा में वह किसी बच्चे का हाथ मरोड़ रहा था। मेरे आने पर कुछ झेंप गया। मैंने पूछा– ऐसा क्यों कर रहे थे? उसने मेरा हाथ पकड़ लिया और कहने लगा– गुरुजी, मैंने आपका हाथ पकड़ लिया, बताओ अब आप क्या कर लोगे ? बच्चे के भोले व सरल स्वभाव पर मुझे तरस आ गया। बस मैंने कुछ ऐसा मान लिया। जब बच्चे ने मेरा हाथ ही थाम लिया– मेरा दायित्व और बढ़ गया है अब मैं इसे बीच में तो नहीं छोड़ सकता। सफल शिक्षक बच्चे को सजा देने से पहले उन्हें अपनी गलती का पूर्ण अहसास करवा देते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चा सजा पाने में कठिनाई महसूस नहीं करता। मेहनतशील अध्यापक से बच्चे डाँट खुशी के साथ स्वीकार कर लेते हैं।

शिक्षक हर बच्चे को कुछ करने का अवसर दें– प्रत्येक कक्षा में कुछ बच्चे होशियार, कुछ सामान्य व कुछ कमजोर होते हैं। कमजोर बच्चे शाला में अपनी सहभागिता दिखा नहीं पाते। आखिर भविष्य में पढ़ाई से वंचित रह जाते हैं। ईश्वर ने हर बच्चे को एक दूसरे से अलग बनाया है अर्थात् हर बच्चा कुछ अलग करने की क्षमता रखता है। अतः अध्यापक अपनी पारखी नजरों से पहचान करे कि अमुक छात्र किस क्षेत्र में आगे निकल सकता है। फिर उस बच्चे को कुछ करने का अवसर प्रदान करे। पढ़ाई में कमजोर छात्र, खेल, संगीत, चित्रकला, अभिनय, साहित्य समाज व देश सेवा जैसी शाला गतिविधियाँ, स्काउट, एन.एस.एस. व एन.सी.सी. में भाग लेकर, अन्य छात्रों से कहीं आगे निकल सकता है। उ.प्रा. स्तर से ही बच्चे अपने भविष्य के कर्म क्षेत्र को चुनने का मानस बना सके। इसके लिए शिक्षक मार्गदर्शक के रूप में अपना पूर्ण दायित्व निभाए।

सन्त सिंह जी मसकीन अपने प्रवचन में कहते हैं कि किसी भी धार्मिक सभा की 10 हजार की भीड़ में एक जिज्ञासु होता है तथा 10 हजार जिज्ञासु में केवल एक सन्त होता है। बच्चे तो सभी जिज्ञासु होते हैं लेकिन फिर भी हम उनमें से सन्त पैदा नहीं कर पाते।

शिक्षक एक व्यवसाय नहीं बल्कि एक सम्मानजनक पद है। दुनिया के सभी शिक्षित वर्ग इसी से प्रेरणा लेकर अपने जीवन में कुछ कर पाते हैं। शिक्षक का यह सौभाग्य है, उसका रिश्ता बच्चे की अबोध अवस्था से प्रारम्भ हो जाता है। अब वह चाहे तो इस रिश्ते को महानता के शिखर पर ले जा सकता है।

अन्त में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में दर्ज गुरु महिमा के इन शब्दों को गुरुवाणी रूप में अवश्य स्वीकार करें– 'जेसऊ चन्दा ऊगवहि, सूरज चड़हि हजार, ऐते चानण होदिआं, गुर बिनु घोर अन्धार।'

–अध्यापक, रा.उ.प्रा.वि. नं. 3,
रायसिंह नगर-335051, श्रीगंगानगर

हिन्दी बाल काव्य : दशा, दिशा एवं सम्भावनाएँ

❑ डॉ. रवीन्द्र कुमार उपाध्याय

साहित्य मानव मन की व्याकुलता की अभिव्यक्ति है। जो साहित्य बाल मन की विविध भावनाओं को अभिव्यक्त कर बालकों की तरफदारी करे, वही बाल साहित्य है। कठोर अनुशासन, उच्च नैतिकता, सत्य, न्याय, धर्म आदि के ऊँचे-ऊँचे सिद्धान्त बाल साहित्य के मापदण्ड या नीति निर्धारक तत्व नहीं हो सकते। यहाँ तो उन्मुक्त गगन में मुक्त पंछी की भाँति बालकों में उड़ने की चाह पैदा करना ही बाल साहित्य का लक्ष्य होना चाहिए। एक बार बालक निर्भय होकर निर्द्वन्द्व-भाव से उड़ना तो सीखें। आज के हिन्दी बाल साहित्य को पढ़कर लगता है कि इतनी ऊँची नैतिकता और सिद्धान्तों की बातें केवल बच्चों के लिए ही है या परिपक्व मानव भी इनका पालन करता है?

हिन्दी साहित्य की दोनों धाराओं– गद्य एवं पद्य में बाल साहित्य सृजित हुआ है। बालकों को प्रारम्भ से ही पद्य के रूप में बालकाव्य एवं दादी-नानी से सुने जाने वाले गद्य के रूप में कहानियों ने ज्यादा प्रभावित किया है। बालकाव्य को पढ़कर तुतलाती आवाज में बोलने वाला बालक एक ओर प्रौढ़ मानव को हर्षित करता है तो दूसरी ओर स्वयं बालक को भी आनन्दित करता है।

प्राचीन हिन्दी बाल काव्य में बाल गणेश, बाल हनुमान, बालकृष्ण, ध्रुव, सूर्य, तारे, चन्द्रमा आदि होते थे। धीरे-धीरे इनका स्थान पशु-पक्षियों, वनस्पतियों, सर्दी-गर्मी-वर्षा, तीज-त्यौहारों आदि ने ले लिया है। विडम्बना है कि आज के हिन्दी बाल साहित्य में कॉमिक हीरो, जासूस, रोबोट, कम्प्यूटर आदि छा रहे हैं।

अर्थ पिशाच युग में हर स्तर पर धन बटोरने की लालसा और अनैतिक माध्यमों से अर्जित धन को खर्च करने के भोण्डे प्रदर्शन की प्रवृत्ति ने आज घरों से बाल साहित्य को बहिष्कृत कर दिया है। आज आलीशान घरों और आसमान छूती हुई कोठियों में पलने वाले बालकों के हाथों में बाल साहित्य की कोई पुस्तक नजर नहीं आती अपितु महँगे और आयातित वीडियो गेम्स, कम्प्यूटर, रोबोट, हेरी पार्टर आदि नजर आते हैं। अब माता-पिता को तुतलाते बालमुख से कोई कविता सुनकर अच्छा नहीं लगता है, अपितु बालक को वीडियो गेम्स चलाते हुए, आयातित पाश्चात्य साहित्य के हिंसक कॉमिक्स पढ़ते हुए, कम्प्यूटर और रोबोट से खेलते हुए देखकर गर्व की अनुभूति होती है। विडम्बना है कि कुछ ज्यादा ही पढ़े-लिखे एवं कॉस्मोपोलिटन शहर के माता-पिता बच्चों के मुख से माँ, बापू, बाई आदि सम्बोधन सुनकर लज्जित हो जाते हैं तथा मॉम, डैडी, पा, आदि शब्द सुनकर गर्वित होते हैं। यह हिन्दी बाल साहित्य से लुप्त होती हुई भारतीय संस्कृति एवं नैतिकता के अभाव का परिणाम है।

आज का बालक अपने दादा-दादी और नाना-नानी की तस्वीर नहीं पहचानता है, अपने चाचा, भुआ और मामा के नाम नहीं जानता है, किन्तु सलमान खान, अक्षय कुमार आदि फिल्मी हीरों की तस्वीर देखकर तुरन्त ताली बजा देता है। यह सब बालक को बचपन में 'ग गणेश का' के स्थान पर 'ग गधे का' पढ़ाने का दुष्परिणाम है। आज का बालक पंचतन्त्र की कहानियों से और 'चंदा मामा दूर के, पोहे पकाये पूर के .....' जैसी कविताओं से अन्जान होकर

अंग्रेजी की 'ट्वींकल ट्वींकल लिटिल स्टार ...' जैसी कठिन और नहीं समझ में आने वाली कविताओं को रट रहा है और कृत्रिम हँसी हँस रहा है।

भविष्य का जन्म वर्तमान से होता है और वर्तमान बीते हुए भूत का परिणाम है। आज चारों ओर बढ़ती हुई बेचैनी, आपाधापी और अशान्ति का प्रमुख कारण यह है कि हमने मानवता को बचपन में ही दानवता की ओर धकेलना शुरू कर दिया है। कश्मीरी बालकों को कलम के स्थान पर कार्बाइन (हथियार) पकड़ा दिया है, नक्सलियों ने अपने बच्चों को खेलने के लिए हथियार दे दिये हैं। आज शहरी माता-पिता आतंक-अपहरण आदि के भय से बच्चों को शाम के समय घर से बाहर खेलने भी नहीं जाने देते हैं और उसके सामने टी.वी., मल्टीमीडिया आदि चालू कर देते हैं। परिणाम यह होता है कि इन्हीं बच्चों पर पाश्चात्य संस्कृति का ऐसा रंग चढ़ता है कि ये बड़े होने पर विवाह के समय पुरोहितों से शीघ्रतापूर्वक वैवाहिक कार्य निपटाने की जिद करते हैं, किन्तु डी.जे. की धुन पर नाचते-गाते समय सीमा भूल जाते हैं।

बालक तो बूढ़ी मानवता के ठूँठों में फूटी हुई नई-नई कोपलें हैं, विध्वंस की भूमि पर निर्माण के बीज हैं और मृत्यु से भयभीत मानवता में आशा की तरंगें हैं। फिर हम बाल साहित्य में अनैतिकता, असत्य और आतंक का वीभत्स चित्रण क्यों कर रहे हैं? बाल साहित्य सदैव अहिंसावादी एवं हँसता हुआ होना चाहिए।

बाल साहित्य में और विशेष कर बाल कविताओं में कई बार हास्य के नाम पर बच्चों द्वारा बूढ़ों की धोती खींचना, किसी पण्डित बालक की चोटी खींचना, विकलांगता का क्रूर मजाक अथवा अन्य कई फूहड़ क्रियाओं का वर्णन कुछ समय के लिए बालकों और पाठकों को हँसा सकते हैं, किन्तु अन्ततोगत्वा ऐसे प्रसंग बालकों में बड़ों के प्रति अनादर की भावना ही पैदा करते हैं।

बालकाव्य में केवल मात्र परियों का चित्रण भी बालक को जीवन के यथार्थ से कोसों दूर ले जाकर उसे एकांकी और काल्पनिक जीवन व्यतीत करने वाला व्यक्ति बना देता है।

आज बाल काव्य में सत्य, न्याय, प्रेम, अहिंसा और देश प्रेम के स्थान पर सयानापन घर कर चुका है। हम बालकों को शीघ्रताशीघ्र वयस्क जैसा चतुर, चालाक, वाचाल, हाजिर जवाब, 'शाणा' और बुद्धिमान बना देना चाहते हैं। इसी आकांक्षा के वशीभूत होकर हम बालक से उसका बचपन छीनते जा रहे हैं। पहले बालक दस वर्ष बाद पाठशाला में प्रवेश लेता था। दस वर्ष की लम्बी अवधि में वह अपने दादा-दादी, नाना-नानी के यहाँ जी भरकर खेलता-कूदता था और अपना शारीरिक-मानसिक विकास कर लेता था। कुछ समय बाद छः वर्ष के बालक को विद्यालय में प्रवेश दिलाया जाने लगा। आजकल कान्वेन्ट स्कूलों ने विद्यालय में प्रवेश की न्यूनतम उम्र तीन वर्ष घोषित कर दी है। कुछ मोन्टेसरी स्कूल तो दो वर्ष के बालक को ही विद्यालय में प्रवेश देने के लिए आतुर हैं। आश्चर्य नहीं कि आने वाले समय में एक वर्ष या एक माह के बाद और हो सकता है कि पैदा होते ही बालक को किसी किंडरगार्टन स्कूल या शिशुघर शाला में पढ़ने भेज दिया जाए ताकि एकल माता-पिता को भी बच्चों के रोने-धोने, मल-मूत्र सफाई बार-बार दूध पिलाने जैसी झुंझलाहट पैदा करने वाली क्रियाओं से मुक्ति मिल जाए और बच्चा पैदा करते ही वे भी पुनः अपने कैरियर की ओर शीघ्रतापूर्वक ध्यान दे सकें।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि एयर कंडीशन युक्त विद्यालयों में कृत्रिम मातृत्व, कृत्रिम वात्सल्य, कृत्रिम प्रेम और सप्रयास रचित कृत्रिम बाल साहित्य से कृत्रिम मानव जीवन व्यतीत करने हेतु बाध्य बालक में कौनसे सम्वेदनशील मानवीय व्यक्तित्व का विकास होगा ?

आज के बालकाव्य में निरंतर दृष्टिगोचर होने वाले पक्षी, नदी, झरने, पशु आदि को देखकर बालक आश्चर्य के साथ पूछता है कि कोयल कैसी होती है? शेर कैसा होता है? झरना कैसे बनता है? क्योंकि लालची मानव ने इन सभी के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगा दिया है। आज के बालकाव्य में विद्यमान रोबोट, कम्प्यूटर, मिसाइल, कॉमिक्स और फूहड़ता की प्रमुखता से बालकों में सम्वेदना के स्थान पर कृत्रिमता और स्वार्थ की शुष्क दानवीय प्रवृत्तियाँ विकसित हो रही हैं।

अपने कैरियर को ऊँचाइयों के शिखर तक पहुँचाने की लालसा ने एकाकी परिवार के बाद एकल माता-पिता के परिवार की अवधारणा को जन्म दिया है। पहले बच्चों के चारों ओर रिश्तों का घना आवरण होता था। उसे दादा-दादी, नाना-नानी, चाचा-चाची, ताऊ-ताई, भाई-भाभी, मामा-मामी, फूफा-भुवा, बड़े भाई-बहिन, चचेरे भाई-बहिन आदि कई रिश्तेदार हाथों में ही नहीं, पलकों पर बिठाये रहते थे। चारों ओर से उस बालक पर प्रेम वात्सल्य की ऐसी बरसात होती थी कि वह स्नेह के सागर में ही डूबा रहता था। उसमें कभी कुण्ठा, संत्रास, उदासी, अवसाद, हताशा जैसी भावनाएँ ही पैदा नहीं होती थी। किन्तु आज की विडम्बना है कि पिता दिल्ली में, माता मुम्बई में और उनकी एकमात्र सन्तान देहरादून के हॉस्टल में स्कूली पढ़ाई कर रही है। वहाँ भी आधुनिकता के नाम पर उसे हिन्दी बाल साहित्य नहीं, बालकाव्य नहीं, अपितु मल्टीमीडिया, कम्प्यूटर, वीडियो गेम्स आदि यांत्रिक खिलौने और भावना शून्य पाश्चात्य साहित्य मिलता है जिनसे खेलकर पढ़कर वह बालक सम्वेदनाशून्य मानव के रूप में विकसित होता है। वही बालक छुट्टियों में जब अपने माता-पिता के यहाँ आता है तो काम पर आने वाली नौकरानी को, माता या पिता की बहिन को और पड़ौस की सभी महिलाओं को केवल आंटी कहता है तथा कॉलोनी के चौकीदार से लेकर सारे रिश्तेदार पुरुष उसके लिए केवल अंकल मात्र हैं।

सम्वेदना रहित और भावना शून्य बाल साहित्य को पढ़ाने का ही दुष्परिणाम है कि कैरियर के पीछे भागते युवा और देश को प्रगति के पथ पर ले जाने का स्वप्न संजोने वाले युवा नेता 40 साल की उम्र हो जाने पर भी विवाह और परिवार की नहीं सोच रहे हैं। कैसे भारत का निर्माण करने जा रहे हैं हम ?

सारांशतः आवश्यकता इस बात की है कि हम सबसे पहले बालकों को उनका बचपन लौटाये, फिर उन्हें बालकों की तरफदारी करने वाला बाल साहित्य दें और उन्हें बचपन की निर्धारित सर्वस्वीकृत अवधि तक उन्मुक्त गगन रूपी संसार में मुक्त पंछी की भाँति विचरण करने दें। फिर देखो ! कैसे अपने यहाँ राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, हनुमान, गणेश, गाँधी आदि दोबारा जन्म नहीं लेते ?

–40, महेश नगर, निम्बाहेड़ा-312601 चित्तौड़गढ़

झोला पुस्तकालय-5

भारत में सुकरात

❑ शिवरतन थानवी

पिछले माह मैंने प्रो. वी.वी. जॉन की पुस्तक 'प्लेटो'ज इंडियन रिपब्लिक' की चर्चा करनी चाही थी किन्तु अन्य कई ऐसे-ऐसे विषय ध्यान आते गए जिनकी चर्चा होती चली गई और इस पुस्तक की चर्चा होनी शेष ही रह गई। आज ऐसा नहीं होने देंगे। कभी-कभी निर्बंध मुक्त विचरण करना, भटकना भी अच्छा लगता है किन्तु कभी जमकर किसी एक विषय पर गहरी चर्चा करने में भी खूब आनंद आता है। आज हम वही आनन्द लेंगे।

पुस्तक का नाम है 'प्लेटो का भारतीय गणतंत्र' (Plato's Indian Republic) जिसमें सुकरात के संवादों से 'गणतंत्र के गुणों का अंग-अंग खुलता चलता जाता है। सुकरात का यह कथन प्रो. जॉन कई बार व्यक्त किया करते थे– 'ऐसा जीवन किस काम का जिसे कभी जाँचा परखा न जाए ('द अनइग्जामिण्ड लाइफ इज नॉट वर्द लिविंग')। उन्हें यह उक्ति बहुत प्रिय थी। वे जीवन के भिन्न-भिन्न पहलुओं की जाँच अपने लेखन द्वारा करते ही रहते थे। मेधावी थे। वास्तविकता की जाँच करने के लिए आडंबर के आवरण को व्यंजना शक्ति की तीखी मार से विदीर्ण कर दिया करते थे। सत्य की खोज शिक्षा का परम उद्देश्य होता है। उनका हर लेख सत्य की खोज वाली साहित्य की सुंदर रचना होती थी। साहित्य प्रेमी थे। शिक्षा के कोने-कोने की सफाई के लिए साहित्य की शैली अपनाते थे। संवाद उनका सबसे बड़ा अस्त्र था। दो अंग्रेजी दैनिकों, टाईम्स ऑव् इण्डिया तथा हिन्दुस्तान टाईम्स के लिए उन्होंने कई ऐसे लेख लिखे जिनमें सुकरात की संवाद-शैली अपनाई गई थी। इन्हीं लेखों के संग्रह का नाम है 'प्लेटो का भारतीय गणतंत्र (Plato's Indian Republic)। रूपा एण्ड कं., 7/16 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 इसके प्रकाशक हैं। इनके जरिए लेखक ने सोए हुओं को जगाने का काम किया है। किसी भी विषय पर राय बनानी हो तो इन संवादों को पहले पढ़ें। संवाद ही शिक्षण की सर्वश्रेष्ठ विधि होती है। संवाद के ज्ञान को जो जितना मान सके, उन्नत बना सके उतना ही अच्छा। इस दृष्टि से प्रो. जॉन ने सुकरात को आदर्श बनाया और भारतीय गणतंत्र में सुधार लाने के उपायों पर विचार के लिए संवाद विधि पर बल दिया। दिल्ली, अजमेर या जोधपुर, जहाँ भी इन्होंने पढ़ाया संवाद से शिक्षण के लिए वे प्रसिद्ध रहे क्योंकि इस विधि में वे अद्वितीय थे।

इस पुस्तक में सुकरात भारत आता है अपने एक शिष्य के साथ और जब गुरु-चेला दोनों यूनान लौटते हैं तो वहाँ के लोग इनसे भारत के समाचार पूछते हैं। अखबारों में भारत के जो समाचार वे पढ़ चुके हैं उनके आधार पर वे सुकरात से और उसके शिष्य से कई प्रश्न पूछते हैं और यों बातचीत होती है। भारतीय गणतंत्र की वर्तमान दशा पर। तर्क-वितर्क होता है। यह तर्क-वितर्क ही इस पुस्तक की जान है। प्रो. वी.वी. जॉन ने सुकरात के साथ उसके मित्रों व शिष्यों के बीच संवाद के जरिए भारत की वर्तमान दशा का चित्रण किया है।

भारतीय गणतंत्र जिस संविधान पर टिका है वह दुनिया का सबसे बड़ा संविधान है, फिर भी इसकी कई धाराओं पर संशय पैदा होता रहता है और नाना व्याख्याएं लोग देते रहते हैं। कितनी ही बार इसमें संशोधन हो चुका है। कानून बनाने वाली सभाओं में जनता के प्रतिनिधि संवाद करते-करते सहिष्णुता खो देते हैं और हाथा-पाई पर उतर आते हैं। हाथा-पाई करते-करते मारपीट और तोड़-फोड़ करना शुरू कर देते हैं। समझते हैं कि स्वतंत्र होने का यही अर्थ है। सुकरात के संवादों में प्रकट होता है। कि जो मन में आए वह करने की छूट का नाम स्वतंत्रता नहीं है। स्वतंत्रता का अर्थ है खुद पर पूरा नियंत्रण और समाज के प्रति उत्तरदायी बनना। एक जिम्मेवार सामाजिक प्राणी बनने को और अपने आप पर पूरा अधिकार रखने को आप आज़ाद हैं। माना कि आजादी आपका जन्मसिद्ध अधिकार है लेकिन व्यवहार में इस आजादी का आचरण कैसे हो यह तो आपको सीखना ही पड़ेगा। और इसका एकमात्र उपाय है शिक्षा। शिक्षा पाए बिना भले-बुरे का ज्ञान नहीं हो सकता।

धर्मनिरपेक्ष घोषित किया है देश को भारतवासियों ने बिन्दु सुकरात और उसके साथियों को यह समझ नहीं आता कि अलग-अलग लोग इसका अलग-अलग अर्थ क्यों लगाते हैं। राजनेता यों तो धर्मनिरपेक्ष संविधान के पालन की शपथ लेते हैं किन्तु धार्मिक कृत्यों में शामिल होने चले जाते हैं। कारण कि उन्हें वोट की फिक्र रहती है। अपने आपको बड़ा प्रगतिशील बताने वाले राजनीतिक दल की नजर भी वोट बैंक पर रहती है। टिकट बाँटते हैं तो धर्म और जातियों के समीकरण पर। कोई कोई राज्य धर्मांतरण पर प्रतिबंध लगाते हैं क्योंकि एक भी वोट की कमी चुनाव का फैसला बदल सकती है।

कैसी विसंगति है ? संविधान धर्म और उपासना का अधिकार देता है और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार भी। मनचाहा धर्म पालन करने के लिए तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ही काफी है। लेकिन यहाँ दो-दो तरफ से स्वतंत्रता के अधिकार की उपस्थिति के बावजूद धर्मांतरण पर प्रतिबंध लगाया जाता है, क्यों? सुकरात पूछते हैं कि तो फिर क्या हर नया भाषण देने से पहले किसी मजिस्ट्रेट को रिपोर्ट करना होगा ? भाषण देने से प्रभाव तो पड़ता ही है, विचार तो बदलते ही हैं। विचार बदलता है तो कर्म-धर्म भी बदलता ही होगा। तो भाषण देने पर उसका प्रभाव न हो, यह कैसे संभव होगा ? भाषण भी अभिव्यक्ति है और धर्म भी अभिव्यक्ति है। जब जो चाहे बदले, न बदले। आजाद क्यों न रहे।

लोकतंत्र है तो चुनाव तो होंगे ही। ये भी समस्याएं पैदा करते हैं। अनाप-शनाप बेहिसाब पैसा खर्च होता है इन चुनावों में। इस उम्मीद में कि चुने गए तो तिकड़म से सब हिसाब चुकता हो जाएगा, बल्कि अच्छी-खासी और कमाई भी कर लेंगे। बहस होती है, शंकाएं की जाती हैं और सुझाव सामने आते हैं। एक सुझाव– हर पार्टी हिसाब दे अपने जमा-खर्च का। दूसरा सुझाव– हर उम्मीदवार अपनी संपत्ति का ब्यौरा दे। फिर सुझाव– दीवारें प्रचार की रंग-बिरंगी पुताई और पोस्टरों से मुक्ति पाएं।

सीधी सरल सी बातें पर कोई माने तब न ? एक और बात मनवा लो इनसे, कहा सुकरात के एक साथी ने, कि 15 साल जो सदस्य रह चुका हो वह वापस खड़ा न हो सके। बना दो ऐसा कानून। वाह, लम्बे अनुभव से प्राप्त ज्ञान और बुद्धि को व्यर्थ गँवा दें ? पूछा एक

मित्र ने। दूसरा बोला– व्यर्थ कैसे जाएगी ? संसद और विधान-सभाओं में उनकी भीड़ न बढ़ाकर समाज के अन्यान्य अनेक कामों में उपभोग कर लेंगे उनका। बात यह भी बुरी नहीं। मतदाता के शिक्षित होने की शर्त लगा दें तो ? शिक्षितों में तो विश्वविद्यालयों में चुनाव न करवाने की सिफारिश की थी। यूनिवर्सिटी एज्यूकेशन कमीशन ने उसी माह जिस माह प्रत्येक वयस्क को मताधिकार दिया था संविधान निर्माताओं ने। तो कैसे करें ? यही तो विशेष विचार की बात है।

आरक्षण का क्या करें ? हर आदमी या तो पक्ष में है या विपक्ष में। लगता है विचार करने की आदत ही खो चुका है हर आदमी। होना तो चाहिए समान अवसर हर व्यक्ति को। यही सामाजिक न्याय है। किन्तु कुछ का मत है कि असमान लोगों को समान अवसर क्यों ? विकलांग कैसे दौड़ेगा सबके बराबर? कहीं यह ऐसा तो नहीं है कि सैकड़ों वर्ष पहले पूर्वजों ने जो पाप किये उनकी सजा आज भी उनकी संतानों को दी जा रही है ? ऐसा भी सोचते हैं कुछ लोग कि जिनका जो देय छीन लिया गया था वह लौटाएँ हम। नौकरियों में आरक्षण पर भी मतभेद हैं। योग्य-अयोग्य की वही लम्बी बहस है। पढ़िए आप भी।

परिवार नियोजन पर चर्चा होती है तो कहा जाता है कि गाँधीजी तो कृत्रिम उपायों के पक्ष में नहीं थे, वे तो केवल संयम को ही एकमात्र प्राकृतिक साधन मानते थे। लेकिन सुकरात और उसके मित्रों को चैन कहाँ? एक ने कह डाला कि संयम भी तो कृत्रिम उपाय है, वह प्राकृतिक कैसे हुआ ? मनुष्य की सहज प्रकृति पर रोक लगाना कृत्रिम नहीं तो क्या है? अभियान चला तो लाखों-करोड़ों पोस्टर बने, गांव-गांव, गली-गली लगाए गए। भारत की अशिक्षित जनता। माता-पिताओं ने बच्चों से पूछा। बच्चों ने पढ़कर समझाया। समझाया तो बच्चे भी जान गए प्रजनन का रहस्य। माता-पिताओं और बच्चों की यौन शिक्षा साथ-साथ हो गई। ऐसे-ऐसे विनोदी चटकारे लिए हैं सुकरात व सुकरात के मित्रों ने।

गाँधीजी के तथाकथित अनुयायियों की भी अच्छी खबर ली गई है। शानदार ऊँची अट्टालिकाओं में रहते हैं नेताजी और खादी पहनते हैं। महँगी इतनी कि कोई गरीब खरीद न सके। उसे भी सरकार सब्सिडी देकर कम मूल्य पर बिकवाती है। नाम गाँधीजी का, पैसा सरकार का, जो आता है गरीब गाँव वालों की जेब से टैक्स के रूप में। है न मजेदार बात ?

और भी मजेदार बात यह कि नेताजी के परिवार वाले खादी नहीं पहनते। कल-कारखानों के कीमती वस्त्र पहनते हैं। सत्य-अहिंसा का उपदेश तो बड़े-बड़े लोग खूब देते हैं, लेकिन लोग पीठ पीछे कहते हैं- पागल हैं। नेताओं का आचरण देखो और पूछो कि यह क्या है तो उत्तर देते हैं– भाई, सिद्धान्त की बात और है, व्यवहार की बात और है। गाँधीजी लड़े थे देश की आजादी के लिए और देशवासियों के आपसी भाईचारे के लिए, किन्तु स्कूलों के छोकरे लड़ते हैं पाठ्यक्रम हल्का करवाने को और बड़े-बूढ़े लड़ते हैं जिलों-राज्यों की सीमाएं बदलवाने को। इस देश में अहिंसा के पथ पर चलने का दायित्व आता है तो मात्र पुलिस दल पर। वे थोड़ा भी बल प्रयोग करें तो हायतौबा मच जाती है।

हमारे वैज्ञानिक यहाँ देश में शिक्षा पाकर विदेशों में जा बसते हैं। इसे लोग ब्रेन ड्रेन या प्रतिभा-पलायन कहते हैं। प्रो. जॉन का सुकरात उसी को पलायन मानता है जो पैसे के लोभ में बाहर जाता है और रहता है। जो यह सोचकर विदेश जाता है और रहता है कि वहाँ अपने ज्ञान को बढ़ाने को भारत की तुलना में अच्छी प्रयोगशालाएँ और सुविधाएँ मिलेंगी। उसे सुकरात पलायन नहीं मानता। भारत की प्रयोगशालाओं की एक भारी कठिनाई सुकरात ने यह देखी कि विदेशों से बहुमूल्य यंत्र तो मँगा लेते हैं किन्तु जब वे खराब हो जाते हैं तो विदेशों से आकर ठीक करने वाले विशेषज्ञों के न आने तक वे यंत्र अलग रख दिए जाते हैं। भारत की टेक्नोलॉजी अभी इतनी भी विकसित नहीं हुई है। वैज्ञानिक दृष्टि का भी विकास होना भी अभी बाकी है।

धरना देने वालों की मनोदशा भी देखी। क्या शिक्षक भी वैसा ही व्यवहार करेंगे जैसा कारखानों के मजदूर करते हैं? सुकरात तो धरना व जुलूसों में उनके व्यवहार को देख दुःखी हो गया। सरलता, सादगी और संयम की बातें गाँधीजी से सीखीं लेकिन व्यवहार में लाये नहीं भारतवासी उनकी सीख। त्याग-तपस्या की बात क्या करें। भारत के नेता और मंत्री तो लाखों-करोड़ों पर ही हाथ मारने में लगे रहते हैं। कैसी सादगी, कैसा संयम ?

सुकरात ने देखा कि 'संपूर्ण क्रांति की बात आई तो लोग हँसने लगे। किसी ने एक अर्थ लगाया तो दूसरे ने दूसरा। अमीर और गरीब की खाई बढ़ती ही जा रही है। शोषण करने वाले अमीर भी संपूर्ण क्रांति आंदोलन के साथ हो लिए किन्तु इस आशा के साथ कि उन्हें हानि नहीं होगी। यह तो वही हुआ कि स्नान कर लो पर पाँव न भीगें। एक ऐसा समाज आएगा जहाँ कोई किसी का शोषण नहीं करेगा, प्रत्येक को अपना कर्तव्य ज्ञात होगा, और हर आदमी हर दूसरे आदमी के कल्याण की चिंता करेगा। तब होगी सम्पूर्ण क्रांति। होगी न?

जो लोकसेवक (पब्लिक सर्वेंट) कहलाते हैं, जो नौकरशाह हैं या जनप्रतिनिधि हैं, वे सब मालिक बन बैठे हैं। पब्लिक की परवाह ही नहीं करते। विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी और शिक्षक कैसा आचरण करते हैं या कैसे कितना अपना कर्तव्य पालन कर रहे हैं यह भी विचारणीय है। देश में छिपा हुआ पैसा बहुत है जो नौकरशाहों के लॉकर भरने में काम आता है। ऊपर सब ठीक दिखाई देता है किन्तु देश में चारों ओर भीतर-भीतर भ्रष्टाचार भरा है। इस समस्या की भी चर्चा विस्तार से की गई है। कथनी और करनी में इतना भारी अंतर है कि इसे पाखंड के सिवा और कुछ कह नहीं सकते। त्रिभाषा-सूत्र में भी यह पाखंड कम नहीं किया लोगों ने। इसी भारतीय भाषाओं के शिक्षण में भी छल-कपट हुआ। कहना पड़ा कि त्रिभाषा-सूत्र का तो अवसान ही हो गया है, कहा किसी ने। है कोई आशा अभी भी? पढ़िए पुस्तक। सुनिए चर्चा सुकरात और उसके साथियों की।

प्रो. वी.वी. जॉन की किताब और शिक्षकों की चर्चा न हो यह तो कोई मान ही नहीं सकता। शिक्षा और शिक्षक तो उनके जीवनदर्शन के अभिन्न अंग थे। एक पूरा अध्याय

ही शिक्षक पर चर्चा का है। शिक्षक की आचार संहिता बनाने को लोग आमादा हैं। भारतीयों की आदत है कि विदेशियों की राय उन्हें खूब पसंद होती है। सुकरात आये यूनान से तो उनसे भी कहा कि वे ही बना दें शिक्षकों की आचार संहिता। क्या हों प्रतिमान शिक्षक के मूल्यांकन के ? लोग प्रतिमान आचरण के नहीं, नैतिकता के माँगने लगे। और किसी ने कहा, काम के प्रतिमान माँगो, काम की बात करो काम की। पर काम की कीमत कहाँ? वेतनमान बढ़े तो इस कारण कि मुद्रा की कीमतें ही गिर गईं थीं। काम की कीमत हो तो व्यावसायिक प्रतिमान की भी कोई बात हो।

सुकरात शिक्षकों की आचार-संहिता बनाने बैठे तो कैसे-कैसे प्रस्ताव आए, कुछ नमूने देखिए– शिक्षक अपना काम ईमानदारी से करें। साल में कम से कम 25 किताबें पढ़ें। कक्षाएं पढ़ाने के अलावा शैक्षणिक मंचों पर दो-तीन भाषण दें, पत्रिकाओं में 2-3 लेख लिखें, खुद के विषय की दो-तीन स्तरीय पत्रिकाएं पढ़ें, और कम से कम 150 घंटे पुस्तकालय में बैठें। बड़े विचित्र-विचित्र प्रस्ताव आये। इन प्रस्तावों को किसी ने कहा– बेकार, किसी ने कहा– रद्दी, और किसी ने कहा– मूर्खतापूर्ण। पर शिक्षकों के इस कार्य का, उनकी योग्यता व शिक्षणक्षमता का, मूल्यांकन करेगा कौन? अब तक तो उनका मूल्यांकन वे लोग करते आये हैं जो प्रशासन से अधिक जुड़े हैं और वास्तविक शिक्षण से कम। वे तो यही जान सकते हैं कि किसने कक्षा में कितना समय गुजारा या किताबों के कितने पन्ने पलटे। सुकरात की नजरों में तो इतना ही होना जरूरी था कि शिक्षक खुद लगातार सीखते रहने की मिसाल बनें। बाहर से थोपे गए आदर्श के कोई प्रतिमान उनके किसी काम के नहीं हैं।

इस तरह की चर्चाओं में कई सवाल-जवाब सुकरात से उसके मित्रों व शिष्यों द्वारा किए गए हैं जो इस पुस्तक में विस्तार से पढ़कर आप प्रो. जॉन की चिंतन-लेखन शैली का आनंद ले सकते हैं। आनंद भी ले सकते हैं और शैक्षणिक व सामाजिक ज्ञान की शक्ति व स्फूर्ति भी प्राप्त कर सकते हैं।

–मोची स्ट्रीट, फलोदी-342301
जोधपुर (राज.)

सृजन का सुख

❑ डा. दाऊदयाल गुप्ता

अब यह रहस्य तथ्य ही है कि सृष्टि के मूल में सृजन ही होता है। सृष्टि की उत्पत्ति, विकास और विनाश सभी में सृजन ही निहित है। वस्तुतः सृजन और परिवर्तन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। दोनों में परस्पर कार्य-कारण का सम्बन्ध है। सृजन, परिवर्तन के फलस्वरूप होता है। परिवर्तन होता है तो उसके पीछे सृजन की प्रेरणा होती है। अस्तु, जीवन में ताजगी बनाये रखने, सड़ी-गली तथा जीर्ण-शीर्ण को दफन करने के लिए सृजनशीलता आवश्यक है। विनाश के भय से अथवा सृजन की क्षण भंगुरता के कारण सृजनहीन बने रहना व्यर्थ है। श्री हरिवंश राय 'बच्चन' ने इसी सत्य को स्वीकार करते हुए यही आह्वान किया है–

'नीड़ का निर्माण फिर-फिर
नेह का आह्वान फिर-फिर।'

नई-नई तकनीकों का अन्वेषण, सूचना प्रौद्योगिकी का दिग्दर्शन, वैज्ञानिक उपकरणों का अधुनातन प्रदर्शन आदि मानव की सृजन में गहरी आस्था के प्रमाण ही हैं। सृजन के आधार पर ही हम 21वीं शताब्दी के विकसित मानव हैं।

सृजन का क्षेत्र अति व्यापक है। जीवन के जितने व्यापक फलक हैं, वे सभी पृथकतः सृजन से जुड़े हैं। इसीलिए सृजन में अतीत का इतिहास, वर्तमान का हास-परिहास और संभास एवं भविष्य का स्वर्णिम आभास की प्रतीति होती है। जीवन का छोटे से छोटा पहलू सृजन का आकांक्षी है। कहना न होगा कि सृजन ही किसी व्यक्ति को तुच्छ एवं महान बनाता है। व्यक्ति के व्यक्तित्व में सृजन ही बोलता है। संसार में जितने महान व्यक्ति हुए सभी सृजनशील थे। उनके मनोमय कोश में सृजन की विलक्षण पूँजी ही बनी रही जिसके कारण वे सृष्टि के अनुपम सृजक बने रहे।

व्यक्ति की सृजनशीलता उसकी विशिष्ट रुचि अथवा क्षेत्र विशेष में रुझान पर अवलंबित है। जैसा पहले कहा जा चुका है कि सृजन व्यक्ति को महान बनाता है। यह सृजन ज्ञान की किसी शाखा से सम्बद्ध हो सकता है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो विज्ञान, संगीत अथवा साहित्य में सृजन का परचम न फहरा सके परन्तु चित्रकारिता या पेन्टिंग में उन्होंने करिश्मा कर दिखलाया। कभी-कभी बच्चों पर बड़ों की महत्त्वाकांक्षाएं लाद दी जाती हैं। इससे वे जिस कला में कमाल दिखलाते वह कुंठित हो जाती है। उन्हें बेमन से एक आज्ञाकारी पुत्र/पुत्री का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए उस ज्ञान-प्राप्ति में सर खपाना पड़ता है जो उसके बूते का है ही नहीं। आप किसी खेल के चोटी के खिलाड़ियों, वैज्ञानिकों अथवा अन्य साहसिक कार्य करने वाले प्रख्यात नायकों से बात करेंगे तो पाएँगे कि उनके माँ-बाप ने उन्हें उस दिशा में बढ़ने दिया जिसमें उनकी रुचि थी। क्रिकेट के कप्तान धोनी अथवा क्रिकेट के प्राण सचिन तेंदुलकर के जीवन में सृजन का यही मर्म छिपा है।

तय है कि संसार का प्रत्येक व्यक्ति महत्त्वपूर्ण है। वह कुदरती तौर पर किसी विशिष्ट कार्य को सम्पन्न करने के लिए जन्मित है। यह अंतर व्यर्थ है कि कौन उच्च कुल में जन्मा है तथा कौन कच्ची बस्ती या झुग्गी-झोंपड़ी में। आवश्यकता यह है कि हम एक बालक से दूसरे बालक के अन्तर को समझने की कोशिश करें कि उसका कार्य-क्षेत्र कौनसा वरेण्य है। यह कार्य साथी शिक्षकों तथा माता-पिता का है। इन सबमें अपार धैर्य तथा पैनी दृष्टि की अपेक्षा है।

निःसंदेह बाल्यकाल ही वह स्वर्णिम काल है जिसमें भावी मानव के महान व्यक्तित्व के अंकुर प्रस्फुटित होते हैं। एक ही कक्षा में बैठा बालक सुदामा भी बन सकता है और कृष्ण भी। दोनों महान हो सकते हैं पर क्षेत्र तो पृथक्-पृथक् रह सकते हैं। जगदगुरु श्रीकृष्ण ने गीता का ज्ञान अर्जुन की पारंगता को देखकर दिया, दुर्योधन को नहीं। एक ही पंक्ति में बैठने वाला युधिष्ठिर हो सकता है तो अश्वत्थामा भी। लेकिन पात्रता सभी की सर्वथा भिन्न है। राजा शुद्धोधन का पुत्र राजा न बनकर महान तपस्वी महात्मा बुद्ध बना। रानी लक्ष्मीबाई ने बचपन में शस्त्र विद्या सीखकर अपना नाम अमर किया। अभी कुछ दिन से राजस्थान पत्रिका में देख रहे हैं कि जिन्हें अध्यापक बनना था वे अभिनेता या अभिनेत्री

बने। जिन्हें डाक्टर बनना था वे नृत्य-कला में पारंगत बने। हमने एक ऐसे आई.ए.एस. अधिकारी को देखा जो सदैव चित्र बनाने में मशगूल रहते थे। यह सब उदाहरण उन महान हस्तियों के हैं जो वे अपनी रुचि-रुझान के मुताबिक अपना विकास कर सके। जिन्हें यह मौका नहीं मिल सका वे सिमट कर रह गये।

प्रत्यक्षतः यह प्रारंभिक स्तर पर शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षक पर बहुत कुछ निर्भर है। इसमें किंचित सावधानी तथा व्यवहारगत क्रिया-कलापों के सूक्ष्म अध्ययन की आवश्यकता है। कई बालक-बालिकाएँ अंतर्मुखी होते हैं तो कई बहिर्मुखी। वस्तुतः अन्तर्मुखी बालक/बालिकाओं की रुचियाँ जानना बहुत कठिन है। फिर भी यदि उनको विविध क्रिया-कलापों में संलग्न कर दिया जाए तो आसानी रहेगी कि हम उनके मनोभावों को पहचान सकें क्योंकि– *'करतूती कह देत आप कहिये नहीं साँई।'*

एक गिलास जो जल से आधा भरा है, बता सकता है कि कौन बालक/बालिका आशावादी है तथा कौन निराशावादी। हम पचासों पशु-पक्षियों के चित्र दिखाकर बच्चों से अपनी पसन्द के चित्र बनाने के लिए कह सकते हैं। इससे हम यह जान सकते हैं कि अमुक बच्चा किस पशु-पक्षी के व्यवहार को पसन्द करता है। स्पष्ट है कि गायन के प्रति रुझान रखने वाला कोयल को प्राथमिकता देगा। नृत्य में रुचि रखने वाला मोर को चुनेगा। सौन्दर्य प्रेमी किसी सुन्दर पशु-पक्षी का वरण करेगा। इसी से हम शाकाहारी-मांसाहारी, उड़ने वाले दौड़ने वाले, शक्तिशाली या भोले-भाले बच्चों की पहचान प्रारम्भिक स्तर पर कर पाएँगे। उनमें सृजनशीलता अंकुरित करने के लिए हम उनको मुक्तावस्था में विहार करने दें।

प्रायः देखा जाता है कि बच्चे कुछ न कुछ बनाने, काढ़कर दिखाने, आड़ी-तिरछी आकृति काढ़ने, गीली मिट्टी या गोबर से चीतने, किसी अजनबी चीज को उलट-पुलट कर देखने, ताश के पत्तों से महल बनाने, तुकान्त कविता रचने अथवा छोटी-छोटी कहानियाँ सुनने-सुनाने में विशेष रुचि लेते हैं। रिक्त कक्षा-कक्ष में शिक्षक की गैर हाजिरी का लाभ उठाते हुए वे चॉक लेकर श्यामपट्ट पर कुछ न कुछ खींचने लगते हैं। कुछ बच्चे अध्यापक की कुरसी पर बैठकर किताब खोलने की आज्ञा देते हैं जबकि कुछ कठिनाइयों को पूछकर सामूहिक रूप से उन्हें हल करने की पहल करते हैं। कुछ चोर-सिपाही या अन्य खेलों को खेलने में संलग्न होते हैं। कुछ अपने बड़ों की शक्ल बनाते हैं। वैसा ही लहजे में बोलते हैं जैसा बड़े बोलते हैं। समझ लीजिये यहीं से सृजनशीलता के अंकुर फूट रहे हैं। यदि हम और आप गुरु चाणक्य की भूमिका में हैं तो पहचान सकते हैं कि कौन इनमें चन्द्रगुप्त बनने की क्षमता रखता है। इस प्रकार यह सृजनशीलता उन बच्चों को तो सुख देती ही है जो इससे अप्रत्यक्ष रूप से जुड़कर विविध क्रिया-कलापों को अंजाम देने में लगे हैं। साथ ही यह अध्यापक और माता-पिता को भी सुख का कारण है जिससे उनकी भावी-भूमिका पहचान में आ रही है।

सृजनशीलता के प्रति बालक/बालिकाओं की रुचि-रुझान पहचानने के लिए उन्हें मुक्त वातावरण में संलग्न रखकर सूक्ष्म अध्ययन करना अपेक्षित है। इस हेतु निम्नांकित क्रिया-कलाप सुझाये जा सकते हैं– (अ) बच्चों को दिये हुए 25-30 शब्दों के आधार पर कोई कहानी गढ़कर परस्पर सुनाने का कार्य-संपादन। (आ) बच्चों को पूरी कहानी न सुनाकर अधूरी को उनके द्वारा मनचाहे रूप में पूरी करवाना। (इ) पशु-पक्षियों के उनकी रुचि के अनुसार चित्र बनवाकर। (ई) बालक/बालिकाओं को विभिन्न स्थानों पर भ्रमण के अवसर प्रदान करना तथा ऐसी संस्थितियाँ पैदा करना जिनका मुकाबला वे स्वविवेक से कर सकें। (उ) विद्यालय के कक्षा-कक्षों को इस प्रकार तैयार कराना ताकि उनके औसत कद की ऊँचाई तक की दीवार पर वे मनचाहा लिखने अथवा काढ़ने के लिए स्वच्छन्द हों। (ऊ) छोटी-छोटी नाटकीय भूमिका में बच्चों की रुचि के अनुसार अभिनय करने की स्वतन्त्रता। (ए) विज्ञान सम्बन्धी सरल उपकरणों को एक कक्ष में अवलोकनार्थ रखना। साथ ही ऐसी सामग्री उपलब्ध कराना जिससे वे स्वयं जोड़-तोड़कर उपकरण बनाने का प्रयास कर सकें। (ऐ) अधूरी बाल कविता को पूरी करने के लिए कहना। (ओ) बालक/बालिकाओं को शारीरिक/मानसिक खेल खेलने की सुविधा प्रदान कराना। (अं) भाषा, गणित, विज्ञान अथवा सामाजिक ज्ञान तथा पर्यावरण से सम्बन्धित पहेलियाँ पूछना तथा उन्हें भी ऐसी ही स्वच्छन्दता प्रदान करना। (अः) बालक/बालिकाओं से प्रेमपूर्वक अत्यन्त अनौपचारिक रूप में बातचीत करना तथा यह तलाश करना कि भविष्य में वे क्या बनना चाहते हैं। (क) जिस समुदाय में वे रहते हैं, वहाँ यह जानना कि उनकी पसन्द का कौन व्यक्ति/महिला है तथा उसकी कौनसी कुशलता उन्हें अच्छी लगती है।

उनकी अन्तरइच्छा जानने, कुशलता पहचानने तथा उनके क्रिया-कलापों का सूक्ष्म अध्ययन कर उनकी रुचि व रुझान से अवगत होने के ऐसे अन्यान्य तरीके हो सकते हैं। इनके लिए अब तो कई प्रकार की प्रयोगशालाएँ, ऑब्जरवेटरीज आदि उपलब्ध हैं परन्तु वे महँगी हैं। अतः संवेदनशीलता, सहृदयता व प्रेम-प्रगाढ़ता के साथ शिक्षक के स्तर पर यह कार्य करना भारत जैसे देश में समीचीन रहेगा।

बच्चों में सृजनशीलता की पहचान स्वयं सृजन कार्य है। इसमें शिक्षक गढ़ने का कार्य करता है। बालकों को गढ़ने में जो असीम सुख की अनुभूति होती है, वह व्यक्त नहीं की जा सकती। तत्पश्चात् बालक/बालिकाएँ स्वयं सृजन करने लगते हैं तो उन्हें भी अतुलित सुख की प्राप्ति होती है। इस प्रकार सृजन में सुख ही सुख है। शिक्षक या माता-पिता के स्तर पर सुख तथा सृजन करते हुए बालक/बालिकाओं में सुखानुभूति। अस्तु यह आनन्द का विषय है। इसे परमानन्द का विषय बनाना स्वतन्त्र भारत के लिए कितना उपादेय है, यह सोचा जा सकता है। हम तो शिक्षकों से सादर यही कह सकते हैं–

यों रहीम सुख होत है, उपकारी के अंग।
बाँटनवारे कै लगै ज्यों मेहँदी कौ रंग॥

बालक/बालिकाओं के साथ शिक्षक भी सृजनशीलता के रंग में रँगे रहें तो सर्वत्र लाभ ही लाभ है।

–दही वाली गली, ब्यानियान मौहल्ला
भरतपुर (राज.)

विद्यार्थियों में सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास

❑ अयुब हुसैन नीलगर

मानव जीवन में अनेक परिवर्तन आ रहे हैं। पग-पग पर उसे चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। नवीन परिस्थितियों का सामना तभी हो सकता है जबकि छात्रों में 'सृजन' की प्रतिभा को विकसित किया जाए। सृजनात्मकता का अर्थ है मौलिक और सामान्य से हटकर कार्य करने की योग्यता। इसके कई अर्थ यथा-विभिन्न विचारों को उत्पादित करना, आविष्कार करना, परिचित वस्तुओं के नए उपयोग सोचना और समस्याओं के कई हल खोज पाना हो सकते हैं।

आइजेक के अनुसार सृजनात्मकता वह योग्यता है जिसके द्वारा नये सम्बन्धों का ज्ञान होता है, इसकी उत्पत्ति में चिन्तन के परम्परागत प्रतिमानों से हटकर असाधारण विचार उत्पन्न होते हैं। यह अपसानी चिन्तन (Divergent thinking) के फलस्वरूप उत्पन्न होती है। बैरान (1965) ने अपने अध्ययनों के आधार पर सिद्ध किया कि बुद्धि और सृजनात्मकता में धनात्मक सहसम्बन्ध है परन्तु यह सह सम्बन्ध निम्न स्तर पर होता है। 5-19 वर्ष की आयु तक सृजनात्मकता को उभारा जा सकता है। सृजनात्मक प्रक्रियाओं को उनके अन्तिम परिणामों के द्वारा समझा जा सकता है, जैसे चित्रांकित किया हुआ एक रंगीन चित्र या रेडियो के संकेत भेजने की कोई नई विधि। सृजनात्मकता सामान्य या उच्च स्तर की हो सकती है। यह एक विरली (असाधारण) प्रतिभा के स्तर पर कार्य कर सकती है जैसे– आइन्सटीन और रवीन्द्रनाथ ठाकुर या दिन-प्रतिदिन के सामान्य कार्यों में सूझ का ढंग। सृजनात्मकता परीक्षण के उदाहरणार्थ एक प्रश्न हो सकता है 'एक समाचार पत्र में क्या-क्या असामान्य उपयोग आप सोच सकते हैं?' एक बालक उत्तर देता है कि इसका उपयोग समाचार छापने में, दूसरा टेबल पर बिछाने में, तीसरा उत्तर मिलता है आग जलाने में कर सकते हैं, चौथा उत्तर समाचार पत्र को मरोड़कर गेंद बना सकते हैं जिससे खेला जा सकता है। इसी प्रकार पाँचवे, छठे, सातवें, आठवें, नवें, दसवें बालकों में क्रमशः इसकी डाट बनाकर पानी का रिसना रोक सकते हैं, मोड़कर इसकी पतंग या हवाई जहाज बनाई जा सकते हैं, अखबारी कागज का कवर कापियों एवं पुस्तकों पर चढ़ाया जा सकता है, पानी पोंछ सकते हैं, मछली लपेट सकते हैं, धूप से बचने के लिए सिर पर रख सकते हैं, पंखा झल सकते हैं, खिलौने बना सकते हैं, आदि-आदि।

बालकों से प्राप्त ये उत्तर दर्शाते हैं कि पहले बालक ने कम उपयोग बताये जो असामान्य भी नहीं थे। दूसरे और आगे वाले बालकों के समाचार सम्बन्धित उत्तर अधिक उपयोग एवं असामान्य हैं। कतिपय आधुनिक अन्वेषकों ने बालकों में सृजनात्मकता को मापने के लिए कई विधियों का उपयोग किया है जैसे कहानी पूरा करना, विभिन्न वस्तुओं के मध्य समानताएँ बताना और बालकों से विभिन्न प्रकार के रेखाचित्रों का वर्णन करने को कहना। हमारी तकनीकी संस्कृति यदि विकसित होती रही, तो मानव की शारीरिक शक्ति पर माँग कम होगी और सृजनात्मक विचारों पर अधिक बल होगा। माँग होगी अनूठे विचारों की और नई समस्याओं को हल करने के मौलिक तरीकों की। सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक और औद्योगिक प्रगति को प्रतिष्ठित रखना पर्याप्त सीमा तक समाज के सदस्यों की सृजनात्मकता पर निर्भर करता है। जिनमें सृजनात्मकता की सर्वाधिक सम्भावनाएँ हैं उनका पता लगाना आवश्यक है, जिससे इनकी ओर विशेष ध्यान दिया जा सके।

कड़ोर काचरो मीठी माला/आओ रे छोरा छोरी खेलबा चालां। और आकड़ा की लकड़ी धोखड़ा को बीज/ल्यावो रे छोरा छोरी खेलबा की चीज। ये आवाजें लगते ही मोहल्ले के बच्चे अपने अपने घरों में से खेलने के लिए बाहर निकलने लगते। शाम का खाना जल्दी खाकर वे अपनी उपस्थिति गली के सृजनात्मक खेल कार्यक्रमों में जरूर देते।

फिर देर रात तक चलती रहती बच्चों की खेल गतिविधियाँ। कुछ अभिभावक भी साथ जुड़ जाते तो कुछ महिलाएँ भी। कभी चद्दर तान कर 'शेडो थिएटर' करते तो कभी खरगोश बनकर लघु नाटिका। कभी राम-रावण वार्तालाप करते तो कभी 'नृत्य-नाटिका'। खेल नाटक करके वे अपने सृजन एवं अपनी अभिव्यक्ति को ऊँचाइयों पर ले जाते।

दिन में बच्चे कुछ चीजें बीनते और उनसे खेलते। मोर पंख, माचिस की छाप, टूटी लकड़ियाँ, पुराने चिथड़े, कतरनें, टूटे खिलौने, रद्दी कागज, पुराने कार्टून, धागे और न जाने क्या-क्या। वे सभी चीजें जो बड़े-बूढ़ों द्वारा बेकार समझकर फेंक दी जाती हैं, वही सामग्री बच्चा अपने पास रख लेता है। उसके पास घर में एक कोना, फटा थैला अथवा टूटी संदूकची होती है। इनमें वह इन चीजों को सजाता, सँवारता है। टूटी फूटी चीजों से अपने विचारों के साथ तालमेल बिठाने की कोशिश करता है। कागज और कैंची लेकर नई सोच को मूर्त रूप देने लग जाता है, तो गीली मिट्टी लेकर खिलौनों का सृजन करने लगता है।

कुछ ऐसी गतिविधियाँ होती हैं जो वह कच्चे आंगन में अपने साथियों के साथ मिलकर करता है। मिट्टी के घरौंदे बनाना, पेड़ लगाना और उन्हें सजाना, सँवारना। टेलीफोन के खम्भे गाड़ना। बिजली का उत्पादन करके घरों में विद्युत व्यवस्था करना। कुआँ खोदना। तालाब बनाना। नहरें निकालना। सिंचाई की व्यवस्था करना। बगीचा लगाना। स्कूल बनाना। दुकान खोलना। खेती करना। व्यापार करना आदि ढेरों गतिविधियाँ हैं जो वह स्वयं करता रहता है और उन्हें बिगाड़-बिगाड़ कर पुनः नया बनाने में लग जाया करता। अपने परिवेश में जो चीजें, क्रियाकलाप देखता है, उन्हें ही नन्हें हाथों से मूर्त रूप देने लग जाता। कभी मिट्टी में कई आड़ी-तिरछी लाइनें खींचेगा तो कभी दीवार पर चित्र बनाएगा। इसके अलावा विभिन्न तरीके के गीत वह गुनगुनाता रहता है। सूख-सूख पट्टी, चंदन घट्टी। आल्या घोल्या/रातां-रातां रेतूल्या। और ढेरों गीत जिन्हें बच्चे गुनगुनाते जाएंगे और कूदते-फाँदते रहेंगे। इसमें भूल जाएंगे खाना खाना भी।

इस तरह की तमाम गतिविधियों से बालकों में सृजनशीलता, संप्रेषणीयता, सहभागिता, आशा, भरोसा, धैर्य, विश्वास,

नेतृत्व क्षमता, संवेदनशीलता, गतिशीलता, नैतिकता जैसी शिक्षा मिलती है। वे अपना सीखना अपने आप जारी रखते हैं। अपने से बड़ों के साथ मिलकर वे तुरन्त ही समीक्षा भी कर बैठते हैं। प्रत्येक समूह आधारित क्रिया का नियोजन करना बच्चे शुरू से सीखते चले चलते हैं। फिर इसकी क्रियान्विति और मूल्यांकन भी करते। कार्यक्रम की समीक्षा फीड बैक के आधार पर करते। इनसे उनमें लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना एवं स्वस्थ सामाजिकता का विकास होता है। ये सब बातें किसी औपचारिक या अनौपचारिक स्कूल में हरगिज नहीं सिखायी जा सकती। धैर्य पर तीन घंटे का व्याख्यान या पाठ पढ़ा देने पर धैर्य का गुण विकसित नहीं किया जा सकता। परन्तु पिछले दशक से बच्चों की ये सब गतिविधियाँ खत्म सी हो गई है। अब गाँव की गलियाँ सूनी पड़ गईं। चौपाल पर कोई बच्चा नहीं जाता। दादी माँ की न कोई कहानी सुनता और न ही उन्हें कहानी सुनाने का कोई समय है। खेलना, तो अब दुष्कर हो गया है। सब बच्चे अपने-अपने घरों में सिमट कर रह गए हैं। या तो वे टी.वी. के सामने होंगे या तेज कानफोडू संगीत सुन रहे होंगे अथवा बोझिल व नीरस समझे जाने वाले गृहकार्य को कुंजियों से उतार रहे होंगे।

भूले भटके कोई बच्चा अपने द्वारा संगृहीत चीजों को सजाने लए जाए तो मार खानी पड़ती है। झिड़क सुननी पड़ती है। इतना गंदा ? फलानी चीज उस कमरे से उठा लाया। कागज और कैंची का प्रयोग करें तो डाँट। मिट्टी से खेलें तो स्वप्न जैसा लगता है। अब कोई नाटक/नकल करे तो फटकार। आखिर करे क्या ? मन मारकर किताबों से उलझे रहो। टी.वी. देखो और सो जाओ।

असल में स्कूल, शिक्षक और अभिभावक को मिलकर इस पक्ष पर विचार करना चाहिए। बच्चों को अच्छी लगने वाली इन गतिविधियों के संचालन में उनके मददगार बनने चाहिए। स्कूल को चाहिए कि वे अपने स्कूल में बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए बालप्रिय सृजनात्मक गतिविधियाँ संचालित करें। शनिवारीय कार्यक्रम, प्रार्थना सभा, शून्य कालांश, शिविर, खेल कालांश, बालसभा इत्यादि में बच्चों की गतिविधियों के लिए जगह तलाशी जा सकती है। विद्यालय के पिछवाड़े सफेदी पुतवाकर एक दीवार को बच्चों के द्वारा गेरू के मांडने, अल्पना अथवा चित्र बनाने के काम में ली जा सकती है। उनके स्थानीय गीतों अथवा चरित्र का अभिनय करने के क्षेत्र ढूँढे जा सकते हैं। उनके द्वारा संगृहीत सामग्री की प्रदर्शनी आयोजित की जा सकती है। शिक्षक स्वयं आगे आकर इस कार्यक्रम में बच्चों की नैसर्गिक प्रतिभा को आगे लाने में इन क्रियाओं को बच्चों के द्वारा पूरा कराने के प्रयास के लिए तैयार करे।

अभिभावक स्वयं भी बच्चों को घर में एक ऐसी जगह दें जिसमें वह अपनी सामग्री रख सके। उसे एक छोटी संदूकची अथवा बस्ता दे दें। जिसमें वह अपनी चीजें सजा सके। एक कैंची, कागज व लेई बनाकर दे दें। कुछ मिट्टी के सूखे रंग दे दें। उसे अपनी संदूकची में मनचाही चीजों को रखने दें। उसे अपनी मर्जी से खेलने दें। हो सके तो स्वयं भी समय निकाल कर कभी-कभी बच्चों के साथ खेलें। बच्चों के द्वारा की जाने वाली प्रत्येक गतिविधि में उनकी मदद करें। उन्हें मांडना बनाने दें। ढूली-फूंत्या क्रिया खेल खेलने दें। उनसे कहानी सुनें-सुनाएं। उनको किसी की नकल उतारने दें और उन्हें अभिव्यक्ति के अवसर दें।

अगर स्कूल, शिक्षक और अभिभावक बच्चों के मौलिक सोच, सृजन और चिंतन में उसके मददगार बने तो निश्चय ही शिक्षा में सरसता, सहजता और सरलता आ सकेगी। बच्चों में सक्रिय सीखना, सीखने में आनंद एवं सीखने का आनंद आने लगेगा। तब हम कह सकेंगे कि उनके सर्वांगीण विकास में समाज और स्कूल पूरी सहभागिता से अपना कर्तव्य निर्वाह कर रहे हैं।

सभी विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का विकास करने के लिए शिक्षक, संरक्षक (अभिभावक), माता-पिता व मित्र आदि को निम्नानुसार उचित मार्गदर्शन किया जा सकता है– 1. अध्यापकों को ऐसी समस्याएँ उठानी होगी और ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न करनी होंगी जिनसे नवीन और अपूर्व विचारों का सृजन हो सके और समस्याओं को नए दृष्टिकोण से देखना सिखाया जा सके। 2. सृजनात्मक शिक्षण के लिए समस्या-समाधान के संदर्भ में तथ्यों का अधिगम कराया जाए। इसमें क्या किया गया, क्या किया जाना चाहिए आदि प्रश्नों के माध्यम से आगे बढ़ा जा सकता है। 3. अध्यापकों को चाहिए कि वह छात्रों में सही मूल्यांकन करने की प्रवृत्ति विकसित करे। इससे सृजनात्मकता में अधिक विकास होता है। 4. बालकों में चिन्तन की जाँच की विधि की कुशलता विकसित की जाए। 5. बालकों को अपनी जिज्ञासा व्यक्त करने की खुली छूट होनी चाहिए। उसे शान्त करने की सुविधा एवं प्रोत्साहन भी मिलना चाहिए। 6. विद्यालय के अतिरिक्त घर पर संरक्षकों को चाहिए कि वे बालकों को अपूर्ण और टूटे फूटे खिलौने और साधन इस प्रकार उपलब्ध कराएँ कि बालकों को सृजनात्मकता के विकास के लिए साधन उपलब्ध हों। 7. विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण, सामाजिक सुगमता, सफलता के अधिक अनुभव आदि भी सृजनात्मकता के विकास हेतु आवश्यक है। 8. बालकों में धनात्मक सामाजिक अभिवृत्तियों को ही विकसित किया जाए। ऋणात्मक सामाजिक अभिवृत्तियाँ पनपने से बालकों से उनके साथी, संरक्षक, अध्यापक आदि के सम्बन्ध बिगड़ जाते हैं जो उनकी सृजनशीलता में बाधक हैं। 9. छात्रों को ऐसे अवसर दिये जाने चाहिए जिनसे वे अनुशासन में रहें और असाधारण कार्य में भागीदार बन सकें। सेमीनार, कान्फ्रेंस, अध्यापक-अभिभावक संघ, छात्र संघ, आचरण संहिता, समाज सेवा, सामूहिक खेल आदि के द्वारा अनुशासन का विकास किया जा सकता है। 10. छात्र अध्यापक सम्बन्ध एवं छात्र प्रधानाध्यापक सम्बन्ध मधुर होना चाहिए। अध्यापक को छात्रों की सम्पूर्ण पृष्ठभूमि तथा उनकी क्षमताओं का पता लगाना चाहिए। इसके साथ उसे अध्यापक एवं शाला प्रधान का उचित मार्गदर्शन एवं सहयोग भी मिलते रहना चाहिए। 11. इसके अतिरिक्त पाठ्य-सहगामी क्रियाओं का विकास भी कक्षा को समान्तर रूप में विभक्त कर किया जाना चाहिए। विद्यालय पत्रिका, प्रदर्शनी, मेले, बुलेटिन बोर्ड, साहित्यिक एवं वाद-विवाद सभाएं, नाट्य-क्लब, शिविर, बालचर, एन.सी.सी., एन.एस.एस. खेल, अजूबे एवं पहेलियाँ आदि के भली-भाँति आयोजनों से सृजनात्मकता का विकास एवं पोषण किया जा सकता है। सृजनात्मकता सम्बन्धी परीक्षण एवं प्रयोग भी शिक्षक द्वारा बालक पर कराने चाहिए ताकि इस प्रतिभा का पता चल सके और तद्नुरूप विकास के विभिन्न मार्ग खोजे जा सकें।

–अध्यापक

रा.उ.प्रा.वि., ऊँचा, पं.स. निम्बाहेड़ा, चित्तौड़गढ़

शिक्षा के द्वारा ही प्रजातंत्र सुरक्षित

❑ कैप्टन सत्यनारायण पंवार

हमारा देश एक लोकतांत्रिक गणराज्य है। देश की सामाजिक और राजनैतिक संस्थाओं को लोकतांत्रिक तरीके से चलाने के लिए उनके सभी सदस्यों को शिक्षित होना चाहिए। इतना ही नहीं उनमें कुछ खास क्षमताएं होनी चाहिए नहीं तो वे विचार विमर्श के कानूनों का उल्लंघन करते हैं और भावनाओं में बह जाते हैं। कुछ लोग आवेश में आकर इतने उतावले हो जाते हैं कि वातावरण अव्यवस्थित हो जाता है और संस्था को चलाने का कार्य बन्द हो जाता है।

लोकतंत्र का सिद्धान्तहीन कट्टरपंथियों, दृष्टिहीन पूंजीपतियों, विचारों से विहीन संचार तंत्रों और विवेकहीन राजनीतिज्ञों ने सदैव नाजायज फायदा उठाया है। इस अनुचित लाभ उठाने वालों से बचने के लिए शिक्षा को प्रबंधन, उसकी कार्य विधि और विचार-धाराओं को इस प्रकार आयोजित करे जिससे शिक्षित नागरिकों में बुनियादी गुणों का संचार हो। ये बुनियादी गुण हैं– सामाजिक न्याय के प्रति आस्था और सामाजिक चेतना का त्वरित संचरण, जिसके द्वारा सभी शिक्षित नागरिकों में किसी भी जाति के पंथ के वंश के या किसी देश के लोगों के प्रति आदर की भावना हो।

लोकतंत्र के उद्देश्य प्राप्त करने के लिए हमें लोकतांत्रिक शिक्षा को अपनाना होगा और शिक्षा के द्वारा लोकतंत्र को सुरक्षित बनाना होगा। लोकतंत्र में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है– देश के सभी लोगों को लोकतांत्रिक अच्छे नागरिक बनाना, जो देश की क्लिष्ट सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक समस्याओं को सुलझा सके। इतना ही नहीं प्रजातंत्र को सुरक्षित रखने के लिए शिक्षा व्यवस्था पर विचार करते समय हमें अनेक बातों की ओर ध्यान देना चाहिए।

सभी शिक्षण संस्थाओं के वातावरण में प्रजातंत्र की गंध आनी चाहिए। सभी शिक्षण संस्थाएं हमारे समाज का एक लघुचित्र होनी चाहिए, जहाँ प्राचार्य, अध्यापकों और छात्रों की आवश्यकताओं का शिक्षा निर्धारण नीति में ध्यान रखा जाए। प्रजातंत्र की गंध तभी आयेगी जब सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप कक्षाओं के पाठ्यक्रम बदले जाएं, कक्षा शिक्षण में अध्यापकों को स्वतंत्रता मिले तथा शिविरों के माध्यम से मित्रतापूर्ण सहयोग की भावनाएं पैदा की जाएं। शिक्षण संस्थाओं के प्राचार्य, अध्यापकों और छात्रों के बीच में प्रजातांत्रिक सम्बन्ध स्थापित किये जाएं। प्रबंधन की समालोचना से बात नहीं बनती। प्राचार्य और अध्यापकों को अपने रचनात्मक सुझावों के द्वारा संस्था का विकास करना चाहिए।

शिक्षण संस्थाओं में सामूहिक जीवन की समस्याओं को किसी समुदाय द्वारा सुलझाने पर ज्यादा जोर दिया जाए, क्योंकि उसमें इसकी ज्यादा आवश्यकता है। शिक्षाशास्त्रियों के अनुसार सामूहिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए चार प्रविधियाँ हैं। 1. सामूहिक विचार विमर्श, 2. सामूहिक नाटक, 3. सोसियोमेट्री के तरीके, 4. नवीन प्रक्रिया को लागू करना। चारों प्रविधियों के तत्वों को शामिल करके एक ऐसा प्रोग्राम बनाया जाए जिससे छात्रों में सामूहिक जीवन का विकास हो।

नागरिकता एक विषय नहीं एक जीने की राह है। नागरिकता की शिक्षा पुस्तकें पढ़ने से नहीं आती। छात्रों में ऐसी दक्षता पैदा करनी चाहिए कि उनकी बात का, उनके व्यवहार का अपने साथियों पर प्रभाव डाल सकें। लोकतंत्र में ऐसे नागरिकों की अधिक आवश्यकता है। शिक्षण संस्थाओं में युवा संसद प्रतियोगिता के द्वारा यह सही शिक्षा दी जा सकती है। संस्था में ऐसे वातावरण का निर्माण करें, जिससे समाज का उत्थान और देश की प्रगति हो।

सभी शिक्षण संस्थाओं के अध्यापकों को कल्पनाशील, प्रतिभासम्पन्न, सुशिक्षित एवं सुयोग्य होना चाहिए, जिससे वे समाज के सभी समुदायों से अच्छे सम्बन्ध रख सके और तभी वे प्रजातांत्रिक मूल्यों में आस्था रखने वाली पीढ़ी का निर्माण कर सकेंगे। अध्यापक आज के प्रजातंत्र के और उनके छात्र कल के प्रजातंत्र के मेरुदंड हैं। छात्र अपने गुरुओं के आदर्शों का अनुगमन करते हैं। शिक्षक, शिक्षण द्वारा विद्यार्थियों को ज्ञान ही नहीं देते बल्कि चरित्र निर्माण भी करते हैं। उनमें जीवनपर्यन्त सीखने की ललक पैदा की जा सकती है और उन्हें अच्छा नागरिक बनाया जा सकता है।

अध्यापक भावी कर्णधारों को ऐसी विद्या और ज्ञान दे कि वे जात-पाँत, ऊँच-नींच, सम्प्रदायवाद, भाषावाद, सीमावाद आदि से ऊपर उठकर अपने आप को प्रजातांत्रिक देश का सच्चा और अच्छा नागरिक बनाकर देश के विकास में अपनी अहम भूमिका अदा कर सकें।

हमारी शिक्षण संस्थाओं के सभी अध्यापकों में प्रतिबद्धता, पुरोगामिता, धैर्य, आत्मालोचन और परिवर्तन के लिए तत्परता के अपेक्षित गुण मौजूद होने चाहिए, जिससे वे अधिगमोत्सुक समाज की रचना कर सके। गुरु-शिष्य सम्बन्धों की यह पवित्र परम्परा का ज्ञान हो, चाहे विद्या का, चाहे सत् शिष्य एवं सद्गुरु का सम्बन्ध हो, इन तीनों सम्बन्धों से ही भारत की संस्कृति की रक्षा होती है, तथा संस्कृति का ज्ञान आगे से आगे एक दूसरे के हवाले किया जाता है। इस प्रकार एक प्रकार की संस्कृति विकसित होगी, तो हम सब भारतीय कहने के लायक बनेंगे।

शिक्षक अपने विद्यार्थियों को किताबी ज्ञान देने के अलावा वातावरण को शिक्षण सामग्री बनाकर छात्रों को सोचने, समझने और अपने आपका मूल्यांकन करने का अवसर दें। कक्षा के बाहर खेलकूद स्काउटिंग, सांस्कृतिक कार्यक्रम एन.सी.सी. समाज सेवा और अन्य गतिविधियों के द्वारा मानवीयमूल्यों का विकास, शारीरिक शक्ति और चुस्ती का विकास, जोखिम उठाने की आदत का विकास और

बौद्धिक विकास कर सके, जिससे वे देश के अच्छे खिलाड़ी, नेता, अभिनेता, उद्योगपति और समाजसेवी बनें और अपने देश और समाज का नाम रोशन कर सकें। शिक्षकों को भौतिकवाद की चकाचौंध से दूर रखें, राजनीति से निरपेक्ष रहे और अपने शिक्षण कार्य को ईमानदारी और शौक से करें, जिससे हमारे देश के प्रजातंत्र को भविष्य में सुरक्षित रख सकें।

विद्यालय में शिक्षण के अलावा छात्रों के लिए ऐसे अवसर प्रदान किये जायें जिससे छात्रों में नेतृत्व, चेतना, सजगता, सहनशक्ति, उदारता, श्रम, विभिन्न, संस्कृतियों के प्रति आदर का भाव आदि गुणों का विकास हो। शिक्षा के द्वारा वास्तविक जीवन और बढ़ते ज्ञान में तालमेल बनाये रखें क्योंकि यह सही तालमेल ही सभ्यता की कुंजी है। शिक्षण संस्थाओं में छात्रों के शरीरों को मजबूत बनाया जाये जिससे वे अपने शरीर और देश की रक्षा कर सकें।

छात्रों में सच्ची राष्ट्रीय भावना का विकास करने के लिए सदैव की प्रार्थना के बाद सभी छात्र प्रतिज्ञा लें। 'भारत मेरा देश है। मैं भारतवासी हूँ– अच्छा और मजबूत। मेरे देशवासी सभी भाई-बहिन हैं। मुझे अपने देश से प्रेम है। मुझे इसकी समृद्धि तथा विविधरूपा संस्कृति पर गर्व है। मैं इसके योग्य बनने का निरन्तर करता रहूँगा। मैं अपने माता-पिता, अध्यापक तथा समस्त बड़ों का सम्मान करूँगा। मैं अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा की प्रतिज्ञा करता हूँ। उसकी समृद्धि तथा सम्पन्नता में ही मेरा सुख निहित है।'

शिक्षण संस्थाओं में 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस, 26 जनवरी-गणतंत्र दिवस और 02 अक्टूबर-गाँधी जयंती के दिन उत्सव मनाकर राष्ट्र के प्रति जागरूकता पैदा की जा सकती है। स्वतंत्रता सेनानियों और खासकर महात्मा गाँधी जी के त्याग और राष्ट्रीय प्रेम की कहानियाँ सुनाकर छात्रों के हृदयों में स्वदेश का प्यार जगाया जा सकता है। राष्ट्रीय प्रेम के पोस्टर, नाटकों, टी.वी. कार्यक्रमों और अन्य कार्यक्रमों के द्वारा छात्रों में अपने स्वार्थ को त्यागकर राष्ट्र के हित में सोचने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है, लेकिन कुछ प्रान्तों के स्वार्थी राजनेता हिन्दी-भाषा को अपनाने में आनाकानी कर रहे हैं। हालांकि शिक्षा के माध्यमिक शिक्षा स्तर तक हिन्दी भाषा अनिवार्य विषय है, लेकिन कुछ भारतवासी इस भाषा को तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं। आजादी के पहले हम अपनी स्वतंत्रता को पाने के लिए सर्वस्व लुटा देने के लिए तैयार थे, तो आजादी मिलने के पश्चात् क्या हम राष्ट्रभाषा हिन्दी सीख नहीं सकते।

आजकल हिन्दी फिल्मों और टी.वी. में हिन्दी कार्यक्रमों को हमारे देश की जनता शौक से देखती है फिर देश के मुट्ठी भर लोगों को हिन्दी सीखने से इंकार क्यों? देश की सभी शिक्षण संस्थाओं और सभी कार्यालयों में हिन्दी को हमारी राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाना होगा तभी हम अपने लोकतंत्र को सुरक्षित रख सकेंगे।

हमारे देश में अधिकतर लोग गाँव में रहते हैं। प्रान्तीय सरकारों ने गाँवों में रहने वाले लोगों की शिक्षा की अवहेलना की है। प्रजातंत्र को सुरक्षित रखने के लिए देश के सभी नागरिक शिक्षित होने चाहिए। हमारे देश की अनपढ़ और अधूरी पढ़ी-लिखी जनता के कारण देश में अराजकता, घूसखोरी, अन्याय और अत्याचारों का बोलबाला है।

आज भी हमारे देश में 'सबके लिए समान शिक्षा', निःशुल्क शिक्षा और समान शिक्षा को ध्यान में रखते शिक्षा व्यवस्था नहीं हो पाई है जिसकी प्रजातांत्रिक देश में आवश्यकता है। वास्तव में हमारे देश में लोकतंत्र हमारी आशाओं और इरादों को साकार नहीं कर पाया है, क्योंकि सभी लोग शिक्षित नहीं हैं। हमारे देश में सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रजातंत्र के बिना राजनीतिक प्रजातंत्र का कोई फायदा नहीं, क्योंकि सिद्धान्तहीन कुर्सी के लिए लालायित लोगों ने प्रजातंत्र को अपने हाथ की कठपुतली बना लिया है।

–68, गोल्फ कोर्स स्कीम
जोधपुर (राज.)

एक रुपया सार्थक हुआ

❑ साँवलाराम नामा

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर कोलकाता के बड़े बाजार से होकर गुजर रहे थे कि रास्ते में उन्हें 13-14 वर्षीय एक लड़का मिला। नंगे पैर, फटे-पुराने अधधोए कपड़े और बुझा हुआ सा चेहरा, उसकी दीन-हीन दशा बताने के लिए पर्याप्त थे। उस लड़के ने ईश्वरचन्द्र विद्यासागर से गिड़गिड़ाते हुए कहा– 'कृपया मुझे आप एक आना दे दीजिए। मैं दो-चार दिन से भूखा हूँ। केवल पानी पी दिन गुजारे हैं मुझ बदनसीब ने।' 'ठीक है, आज मैं तुम्हें एक आना दे दूँगा, लेकिन कल क्या करोगे?' 'कल मैं किसी दूसरे से माँग लूँगा, लड़के ने कहा।' और अगर चार आने दे दूँ तो क्या करोगे?' विद्यासागर ने उससे तत्काल पूछा। 'उसमें से एक आने का भोजन करूँगा और शेष तीन आने के संतरे लाकर यहीं सड़क पर बैठकर संतरे बेचूँगा', उस लड़के ने अपने मन की सच्चाई बताई।

'और एक रुपया दे दूँ तो?' 'तब तो व्यवस्थित रूप से गली-मोहल्लों में फेरी लगाऊँगा' लड़के ने अत्यन्त प्रसन्नता के साथ कहा।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने उसे एक रुपया खुशी से दे दिया। वह लड़का उस रुपये से काफी फुटकर सामान लाकर बेचने लगा। धीरे-धीरे उसकी मेहनत रंग लाई और दुकान जम गयी। बहुत दिनों बाद में एक दिन वह लड़का दुकान पर बैठा था। तभी उसकी दृष्टि ईश्वरचन्द्र विद्यासागर पर पड़ी। वह तत्क्षण उन्हें पहचानकर अपनी दुकान पर ले आया और हाथ जोड़कर सारी अपनी बातें बताते हुए उनसे विनम्र भाव से विनय किया कि– 'आपने मुझ गरीब, बेसहारा पर जो उपकार किया था, उसे मैं अपनी जिंदगी में कभी नहीं भूल सकता हूँ। अब कृपया आपका उधार लिया रुपया ले लीजिए।'

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने मुस्कराते हुए कहा– 'इसमें उपकार, आभार मानने की कतई जरूरत नहीं है।'

'एक देशवासी होने के नाते मेरा कर्तव्य था। तुम्हें दिया मेरा वह एक रुपया तुम्हें अपने पैरों पर खड़ा कर सार्थक हुआ। हमें किसी को दया ही दिखाने की, दया की भीख देने की आवश्यकता नहीं है, अपितु ऐसा आर्थिक सहयोग प्रेरणा देकर जीवन सही जीने की कला सिखानी चाहिए। अब यह रुपया तुम अपने जैसे किसी और योग्य एवं जरूरतमंद को दे देना।

–सदर बाजार रोड, निकट बड़ा चौहरा,
भीनमाल, जालौर

संस्कारयुक्त विकास का आधार : मूल्यपरक-शिक्षा

❑ डॉ. जितेन्द्र लोढ़ा

शिक्षा मनुष्य के विकास की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। विश्ववंद्य स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा के संदर्भ में यह कहना एकदम सत्य है कि 'शिक्षा का अर्थ है, उस पूर्णता को व्यक्त करना, जो सब मनुष्य में पहले से विद्यमान है।'(आचार्य, पं. श्रीराम शर्मा, 'शिक्षा एवं विद्या', अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 1996 पृ.सं. 1.8) इन अर्थों में शिक्षा मनुष्य के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को विकसित करती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि शिक्षा वह अभिकरण है, जो समाज की आवश्यकता व माँग के अनुकूल विद्यार्थियों का भविष्य व व्यक्तित्व गढ़ती है। अर्थात् जैसा उसके हितधारी-वर्ग (स्टेक-होल्डर्स) चाहते हैं, शिक्षा वह स्वरूप ले लेती है। वर्तमान के समाज की दशा व दिशा को देखकर शिक्षा के क्षेत्र में 'मूल्यों की शिक्षा' एवं तद्नुरूप 'व्यक्तित्वों का समग्र विकास व परिष्कार' की तीक्ष्ण आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में भारत के विख्यात कवि एवं उपन्यास लेखक विनायक कृष्ण गोरूक का यह कथन एकदम समीचीन है कि 'ज्ञान, कौशल, संतुलन, बोध और सौम्यता, शिक्षित व्यक्ति के प्रमाण-चिह्न है। आज के भारत में कोई यह नहीं कह सकता कि हमारे शिक्षितों में यह लक्षण है। अतः आज की शैक्षिक-प्रक्रियाओं में मूल्यों के सरोकारों को स्थापित करना उचित प्रतीत होता है।'(गोरूक, विनायक कृष्ण, 'शिक्षा में मानव मूल्य', भारत में विद्यालयी शिक्षा वर्तमान स्थिति और भावी आवश्यकताएँ, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1986, पृ.सं. 30) पूर्व केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री मुरली मनोहर जोशी ने राजस्थान पत्रिका में दिये अपने उद्गार में कहा कि 'मूल्य तो मानने ही होंगे, वे सार्वभौमिक हैं। बदलाव के इस दौर में संस्कारयुक्त-विकास के लिए मूल्य-आधारित शिक्षा एक आवश्यकतापरक प्रक्रम है।(राजस्थान पत्रिका, 6 सितम्बर, 2009, पृ.सं. 2 पर जैसा कि उन्होंने ऊषा श्रीवास्तव को बताया) अतः यह स्पष्ट है कि मूल्यपरक-शिक्षा एक सकारात्मक पद है, जो विद्यार्थियों को सदैव उत्कर्ष की ओर ले जाता है तथा उनके व्यक्तित्व में अनेक बहुमूल्य गुणों का सुदृढ़ीकरण भी करता है।

शिक्षा को वैचारिक मानकों और मूल्यों के विकास का साधन समझा जाता है। शिक्षा का उपयोग देश-काल की सरहदों से परे किसी भी विशेष विचारधारा के प्रसार के लिए इस्तेमाल किया जाता है। शिक्षा युवकों के मन को प्रशिक्षित करती है, और उनके हृदय में वाँछित मूल्यों का विकास करती है, अर्थात् वैचारिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सबसे शक्तिशाली और प्रभावी साधन का काम करती है। स्पष्ट है कि शिक्षा समाज की आशाओं, आकांक्षाओं एवं आवश्यकताओं के सापेक्ष में कार्य करती है। वर्तमान के युग में ज्ञान की तो वृद्धि हो रही है, लेकिन नैतिकता, व्यक्तित्व एवं मानवता बिगड़ रही है। इस सम्बन्ध में कोठारी शिक्षा आयोग (1964-66) के अध्यक्ष प्रो. दौलतसिंह कोठारी के ये शब्द एकदम समीचीन है कि 'विज्ञान और तकनीकी का विकास हो रहा है, लेकिन बुद्धि का ह्रास हो रहा है। ज्ञान फैल रहा है, लेकिन मानव-व्यक्तित्व सिकुड़ रहा है।' प्रसिद्ध भारतीय शिक्षाशास्त्री प्रो. वेदमणि मेन्युअल के शब्दों में 'आज हमारा सामाजिक-जीवन अनसुलझे तनावों, संघर्षों एवं हिंसा से खोखला हो गया है। झूठे मूल्यों और झूठे नायकों की पूजा ने आज इतना अधिक महत्व प्राप्त कर लिया है कि नयी पीढ़ी के विद्यार्थी विरोधाभासों और मतिभ्रमता के ढेर में खो गये हैं। ('मूल्य-शिक्षा', उभरते भारतीय समाज में अध्यापक एवं शिक्षा (2) BE-I, कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा, 1990, पृ.सं. 70) विज्ञान के पुरोधा स्वयं आइन्स्टीन (नव. 1950) के शब्दों में 'सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानवीय प्रयास, अपने कार्यों में नैतिकता लाने के प्रयास हैं। हमारा आंतरिक संतुलन (व्यक्तित्व) व हमारा अस्तित्व इसी पर निर्भर है। अपने क्रिया-कलापों में नैतिकता से ही जीवन में सौन्दर्य, सन्तुलन एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति (व्यक्तित्व-विकास) हो सकती है। इसे एक जीवन-शक्ति बनाना तथा उसे स्पष्ट अंतश्चेतान में लाना ही शिक्षा का सर्वोपरि कार्य है।' इसी प्रकार आर.डब्ल्यू. स्पेरी ने अपने नोबल पुरस्कार के भाषण (1981) में कहा कि ''एक वृहत् प्रभावपूर्ण सूत्र में आबद्ध करने वाले व्याख्यात्मक मनोभाव का उद्भव हो रहा है, जिसका सुदूरगामी प्रभाव केवल विज्ञान के साथ ही नहीं, अपितु उन तात्विक-मूल्यों तथा आस्थागत-आदर्शों पर भी है, जिसके सहारे मानव जाति जीने के प्रयास करती रही है, और जिसमें उसे जीवन की सार्थकता मिली है।'' (कोठारी, दौलतसिंह, 'शिक्षा और जीवन मूल्य', भारत में विद्यालयी शिक्षा वर्तमान स्थिति और भावी आवश्यकताएँ, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1986, पृ.सं. 20-22)

आज के वैश्विक-परिदृश्य को देखें तो ऐसा लगता है कि जहाँ एक ओर मानव ने विज्ञान एवं टैक्नोलॉजी के क्षेत्र में आश्चर्यजनक उन्नति प्राप्त कर ली है, तो वहीं दूसरी ओर मानव के विचार, आदर्श, व्यक्तित्व एवं कार्य इतने गंदे और भयंकर होते जा रहे हैं कि सम्पूर्ण मानव जाति के नष्ट और पतित होने का भय पैदा हो गया है। इस प्रकार समग्र विश्व में मानव-मूल्यों का एक बड़ा ही भयावह संकट (Value Crisis) उत्पन्न हो गया है, जिसके कारण मानव व्यक्तित्व बर्बरता की ओर जा रहे हैं। अतः संस्कारयुक्त व्यक्तित्व-निर्माण, चारित्रिक-विकास की शिक्षा को दिशा देना एक सम-सामयिक शैक्षिक आवश्यकता है। इस सम्बन्ध में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष रह चुके शिक्षाविद् अशोक गांगुली का यह कहना एकदम प्रासंगिक है कि ''वर्तमान समय में जो भी चारित्रिक एवं व्यक्तित्व विघटन की समस्याएँ आ रही हैं, उसका कारण मूल्यपरक शिक्षा का अभाव है। हम कितनी भी प्रगति कर लें, मूल्य-आधारित शिक्षा हमेशा अहम रहेगी।'' (राजस्थान पत्रिका, 7 सितम्बर, 2009, पृ.सं. 2 जैसा कि अशोक गांगुली ने पंकज पाण्डेय को बताया।) मूल्यक्षरण से उभरने तथा संस्कार व आवश्यकतायुक्त व्यक्तित्व-विकास की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण समाधान, 'मूल्यपरक-शिक्षा' ही है। इसीलिए संसार भर के धर्मगुरु, महान

शिक्षा विचारक एवं प्रमुख चिन्तक इस प्रकार की शिक्षा का स्वागत कर रहे हैं, जो मूल्यों से ओत-प्रोत हो, जिससे भावी पीढ़ी के व्यक्तित्व इस प्रकार डिजायन हो कि जिससे व्यक्ति व्यापक हित के लिए सीमित-हित का त्याग कर सकें अर्थात् ब्रह्माण्ड के हित के लिए विश्व, विश्व के हित के लिए देश, देश के हित के लिए प्रदेश, प्रदेश के हित के लिए अपने व्यक्तिगत हित को त्याग सके। अर्थात् मूल्य-शिक्षा व्यक्ति में ऐसे मूल्यों, दृष्टिकोणों एवं कौशलों का विकास करेगी, जिससे मानव मात्र अपने शारीरिक, मनोवैज्ञानिक व सामाजिक की अपेक्षा व्यक्तिगत गुणों को और व्यक्तिगत गुणों की अपेक्षा सामाजिक-मूल्यों को वरीयता प्रदान करें, फलन सुचित मानवतारूपी व्यक्तित्वों के विकास के साथ-साथ संस्कारमय-विकास का मार्ग अपने आप प्रशस्त हो जाएगा। (रस्तोगी, कृष्ण गोपाल, 'मानवीय मूल्य विकास : व्यावहारिक आचरण', रा.मु.वि. नई दिल्ली, 2001, पृ.सं. 13)

भारत सरकार की शैक्षिक नीतियों के परिप्रेक्ष्य, शिक्षा-मंत्रालय, शिक्षा के पैरोकारी संगठन यथा एन.सी.ई.आर.टी. न्यूपा, यूजीसी, विश्वविद्यालय, बोर्ड आदि के साथ-साथ गैर सरकारी संगठन व दार्शनिक जैसे साधु दादा वासवानी, श्री सत्यसांई बाबा, चिन्मयानंद मिशन, अरविन्द-आश्रम एवं भारतीय विद्या भवन आदि सभी संदर्भ मूल्यपरक-शिक्षा के माध्यम से सुचित-मानवता के विकास (व्यक्तित्व-निर्माण) के पक्षपाती है। मूल्यों की शिक्षा के विद्वान व पैरोकार प्रो. किरीट जोशी ने अपने उत्कृष्ट लेख "An outline Programme of Value-Oriented Education" में बहुत सुन्दर बात लिखी है कि 'मूल्यपरक-व्यक्तित्व प्रकाशवान होता है, अतः मूल्यों की शिक्षा देने का रहस्य है, विद्यार्थियों में स्वयं के चरित्र और ज्ञान के अधिकार के उद्धरण द्वारा खोज की भावना को प्रज्वलित करना, इस कारण शिक्षकों का व्यक्तित्व मूल्यों की कसौटी पर आत्मज्ञानित होना चाहिए। अतः मूल्य-अभिमुखी शिक्षा को 'करो' और 'मत करो' की एक शृंखला के रूप में न प्रस्तुत कर अनुकरणीय व्यक्तित्व व व्यवहार के माध्यम से प्रदान करनी चाहिए।"(मूल्यपरक शिक्षा, उभरते भारतीय समाज में अध्यापक एवं शिक्षा (2) BE-I, कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा, 1990, पृ.सं. 71) इसी प्रकार राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 के खण्ड 8 में शिक्षा की विषय-वस्तु एवं प्रक्रिया का पुनः अभिनवीकरण एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में कहा कि "हमारे सांस्कृतिक बहुल समाज में शिक्षा के सार्वभौमिक एवं शाश्वत-मूल्यों का, जो हमारे लोगों की एकता एवं संघटन के प्रति अभिनवीकृत हो, संवर्द्धन करना चाहिए। ऐसी शिक्षा को रूढ़िवाद, धार्मिक-कट्टरता, हिंसा, अंधविश्वास एवं भाग्यवाद के उन्मूलन में सहायता करना चाहिए। इस संघर्षात्मक भूमिका के अतिरिक्त मूल्य-शिक्षा की गहन सकारात्मक विषय-वस्तु है, जो हमारी सांस्कृतिक-परम्परा, राष्ट्रीय-लक्ष्यों एवं सार्वभौमिक-प्रत्यक्षों पर आधारित है। इसे मुख्य बल इसी पक्ष पर लगाना चाहिए।"('राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986', इकाई (13), उभरते भारतीय समाज में शिक्षा (3) कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा, 1990, पृ.सं. 78) अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 (संशोधित नीति 1992) में मूलभूत मूल्यों के ह्रास और बढ़ती अनास्था पर चिन्ता व्यक्त की गयी है, साथ ही निराकरण की दृष्टि से शिक्षा को शक्तिशाली साधन के रूप में माना है।

व्यक्ति सामाजिक-मूल्यों को सामाजिक-संस्थानों में सीखते या ग्रहण करते हैं। परम्परागत समाजों में मुख्यरूप से परिवाररूपी संस्था ही सामाजिक व वैयक्तिक-मूल्यों की शिक्षा देती थी, लेकिन आधुनिक-काल में बढ़ते सामाजिक-विभेदीकरण के साथ शैक्षिक-संस्थाएँ एक प्रकार के अहम संस्थाएँ बनकर उभरी है, जो एक लम्बे समय तक दुनिया में बढ़ती तादाद में व्यक्तियों में मूल्य का विकास करती है। आज ज्ञान व सूचना वाले इस युग में शिक्षा-संस्थानों की तरफ संस्कृति, नैतिकता एवं मूल्यों के विकास की दृष्टि से देखा जा रहा है। "कलचर एण्ड वैल्यूज इन क्लास-रूम" जैसी शैक्षिक-अवधारणाएँ बलवत होती जा रही है। वर्तमान की शिक्षा के सरोकारी पक्ष, शिक्षा से मानवता व मानवीयकृत-व्यक्तित्व की अधिक माँग कर रहे हैं। आज की दशा में तो यह आवश्यकतापरक विचार है ही, लेकिन "अब्राहम लिंकन का वह खत जो उन्होंने अपने बेटे विली के स्कूल हैडमास्टर को लिखा था, वो उस जमाने में भी शिक्षा में मूल्यों की बात करता था।"(बारहठ, सत्यदेव, 'प्रेरक-प्रसंग ऐतिहासिक पत्र, सन्देश व व्याख्या" सनातन संस्कृति संस्थान, जयपुर, 2010, पृ.सं. 3) जमाना चाहे जो हो शिक्षा में मूल्यों का चिन्तन व अपेक्षा हमेशा रही है, और यह भी सत्य है कि मूल्यपरक-शिक्षा से लोकमानस को परिष्कृत किया जा सकता है। अर्थात् सुसंस्कार व व्यक्तित्व-उन्नयन की चाबी मूल्यपरक-शिक्षा में ही निहित है।

इसी वैचारिक चिन्तन की पृष्ठभूमि में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की अध्यक्षता में 1948-49 के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने धार्मिक-शिक्षा की जरूरत पर जोर दिया था। लेकिन ए.एल. मुदालियर की अध्यक्षता में 1952-53 के माध्यमिक शिक्षा आयोग की राय इस सवाल पर अस्पष्ट रही। इसमें सुझाया गया कि विद्यालयों में धार्मिक-शिक्षा केवल स्वैच्छिक आधार पर और विद्यालय के नियमित समय से अलग ही दी जा सकती है। फिर भी श्रीप्रकाश समिति (1959-60) ने धार्मिक और नैतिक-शिक्षा के प्रश्न की विस्तृत छानबीन की और शिक्षा के सभी स्तरों पर उसे आरम्भ करने की पैरवी की। उसने नैतिक और आध्यात्मिक-मूल्यों को इस तरह परिभाषित किया कि 'कोई भी वस्तु जो हमें 'स्व' के मायाजाल से निकाल कर हमें दूसरों के लाभ या एक महान ध्येय के लिए बलिदान करने की प्रेरणा देती है, वह आध्यात्मिक मूल्य है' दूसरी बातों के अलावा उसने प्रारम्भिक-शिक्षा के चरण में भाषा के अध्यापन के पाठ्य विवरण में पैगम्बरों, संतों, और धर्म गुरुओं के जीवन की कथाओं और उपदेशों को शामिल करने का सुझाव दिया। माध्यमिक स्तर पर विद्यालय के कार्यकलाप का आरम्भ दो मिनट की मौन सभा के साथ किया जाए, जिसके बाद दुनिया भर के धर्मग्रन्थों और साहित्यों को पढ़ाया जाए। इसके अलावा उसने उपाधियों के तीन वर्षीय पाठ्यक्रम में धार्मिक-शिक्षा के लिए स्तरबद्ध पाठ्य विवरण का अनुमोदन किया, जिसका सुझाव 1948-49 के विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग ने भी दिया था।

1964-66 के सुप्रसिद्ध कोठारी आयोग ने इच्छा व्यक्त की कि शिक्षा को मूल्योन्मुख बनाने के लिए आवश्यक और फौरी कदम उठाए जाएँ। इसमें कहा गया था कि (रिपोर्ट,

1971:358) 'जहाँ तक सम्भव हो, महान धर्मों के नैतिक उपदेशों की सहायता से सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान करने के लिए चेतन और संगठित प्रयास किये जाएँ।' उसने नैतिक-शिक्षा के बारे में श्रीप्रकाश समिति का अनुमोदन किया। इसके बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने भी मूल्य-शिक्षा की आवश्यकता पर जोर देते हुए अपनी कार्यवाही योजना 1986:143-44 में एन.सी.ई.आर.टी. को इसके प्रारूप तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बुनियादी पाठ्यचर्यात्मक क्षेत्रों समेत तमाम प्रमुख प्राथमिकताओं और सिफारिशों की रोशनी में एन.सी.ई.आर.टी. में 1988 में ''राष्ट्रीय प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षा की पाठ्यचर्या : एक ढाँचा'' का प्रकाशन किया। इसमें माध्यमिक-शिक्षा के चरण तक पूरी शिक्षा के लिए और अनेक विषयों में शिक्षा के अंतर्तत्व के पुनर्विन्यास के विभिन्न पक्षों की विवेचना की गई। इसमें पुरातनपंथ, धार्मिक-कट्टरता, हिंसा एवं अन्धविश्वास के विरुद्ध लड़ने तथा ईमानदारी, सच्चाई, साहस, दृढ़-विश्वास, स्पष्टवादिता, निर्भयता, सहिष्णुता, न्याय के प्रति प्रेम, विश्वसनीयता व करुणा आदि मूल्यों के विकास में शिक्षा की भूमिका पर जोर दिया गया है, ताकि सुदृढ़ मानवीय समाज और सन्तुलित-व्यक्तित्वों का विकास हो।(चौधरी, कामेश्वर, 'भारत में मूल्यों की शिक्षा के सामाजिक-वैचारिक आयाम' परिप्रेक्ष्य, न्यूपा, अंक-1, वर्ष-2, अप्रैल 1995, पृ.सं. 40-41)

इसके बाद राममूर्ति समिति (1990) ने मूल्यों को शिक्षा में आवश्यक स्थान प्रदान करते हुए कहा कि मूल्य शिक्षा वर्तमान के पाठ्यक्रमों की आवश्यक हिस्सा होनी चाहिए। कोर ग्रुप ऑन वैल्यू एज्यूकेशन (1992) और चौहान समिति (1999) ने मूल्य-शिक्षा की प्रबल हिमायत की।(जे.एस. राजपूत, 'मूल्य-शिक्षा के नीतिगत परिप्रेक्ष्य', वैल्यू एज्यूकेशन 'दा पैराडाइम सिफ्ट, श्री सत्य सांई इन्टरनेशनल मानव मूल्य केन्द्र, नई दिल्ली, 2009, पृ.सं. 21-35) इस प्रकार स्पष्ट है कि मूल्य-शिक्षा एक राष्ट्रीय व वैश्विक आवश्यकता है, जिसके माध्यम से सुचित मानवता एवं व्यक्तित्व-निर्माण की प्रक्रियाओं को अमलीजामा पहनाया जा सकता है। आज के युग में शक्ति की चाह व आर्थिक-संकीर्णताओं के चलते मानवीय-व्यक्तित्वों का अधोपतन तेज गति से हो रहा है। इससे आज की पीढ़ी को बचाना है तो मूल्य-शिक्षा संदर्भित कार्यवाही शिक्षा जगत में व्यापक पैमाने पर की जाए। इस सम्बन्ध में शिक्षाविद् श्रीप्रकाश कहते हैं कि ''याद रहे कि मूल्यों, नैतिकता और संस्कृति का पठन-पाठन नहीं होता, उन्हें तो अपनी प्रकृति और वातावरण में रचाना-बसाना होता है। इसके लिए अनिवार्य है कि उपदेश और व्यवहार में, चिन्तन और कर्म में एवं निर्णयकर्त्ता और क्रियान्वयनकर्त्ता में कोई अन्तर न रहे।''(श्रीप्रकाश, 'मूल्य और शिक्षा-अवधारणा, आवश्यकता और व्याप्ति', परिप्रेक्ष्य, न्यूपा, नई दिल्ली, वर्ष-2, अंक-1, अप्रैल 1995, पृ.सं. 11-24) इसी प्रकार प्रो. रंगनाथ भारद्वाज का यह कथन भी प्रासंगिक है कि 'आधुनिक-शिक्षा आज एक ही साथ दोहरे संकट से ग्रस्त है। जहाँ उसकी सामाजिक-प्रासंगिकता पर बड़े पैमाने पर सवाल उठाए जा रहे हैं, वहीं सभी प्रबुद्ध नागरिक जीवन-मूल्यों के ह्रास के बारे में उसके खतरनाक निहितार्थों को गहराई से महसूस कर रहे हैं। अतः संकट का समाधान, शिक्षा के संरचनावादी-दृष्टिकोण के अभिविन्यास में निहित है।''(रंगनाथ, भारद्वाज, 'आधुनिक शिक्षा और जीवन मूल्य', परिप्रेक्ष्य, न्यूपा, नई दिल्ली-2, अंक-1, अप्रैल 1995, पृ.सं. 3-9) इस प्रकार वर्तमान शिक्षा-प्रणाली में मूल्यों के संरचनावादी-दृष्टिकोण का पुनर्निरूपण करके मूल्य-संकट पर काबू पा सकते हैं, जिससे ऐसे व्यक्तित्व निर्मित होंगे, जो प्रौद्योगिक दृष्टि से प्रगतिशील और नैतिक दृष्टि से मजबूत होंगे।

समग्र विश्लेषणात्मक विवेचन से स्पष्ट है कि सूक्ष्म से लेकर व्यापक तक, व्यक्ति से लेकर समग्र तक का विकास मूल्यों के चिन्तन, क्रियान्विति एवं तद्नुरूप शैक्षिक-व्यवस्थाओं पर निर्भर है। मूल्यों की शिक्षा से व्यक्तित्व का परिमार्जन व परिष्कार होता है। इसी प्रकार समग्र व्यक्तित्व उत्थान की प्रक्रिया से मानवता का विकास होता है, जिसके चलते संस्कारयुक्त विश्व-व्यवस्था को दिशा मिलती है। अतः शिक्षा का मुख्य कार्य तो आमजन के व्यक्तित्व को आवश्यकता व लक्ष्यपरक डिजाइन देना है।

–विभागाध्यक्ष, 'सेवारत शिक्षा'
बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,
गाँधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर (चूरू)

छात्रों को कर्म प्रधान बनाएं

❑ **भगवती प्रसाद मासीवाल**

बचपन में प्रातः कबीर जी की इन पंक्तियों की धुन से मेरी नींद खुलती थी।

'जब हम पैदा हुए, जग हँसे हम रोय।
ऐसी करनी कर चलो, हम हँसे जग रोय॥'

कबीर जी कहते हैं। जब एक बच्चे का जन्म होता है, तो इस मृत्यु लोक में आकर वह विलाप करता है तथा परिजन खुशियाँ मनाते हैं। हमें ऐसे कर्म करने चाहिए कि इस दुनियाँ से जाते वक्त, हमें कोई मलाल न हो तथा लोग हमारी याद में आँसू बहायें, हमारे कार्यों को याद कर सकें।

हमें जाति, धर्म, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर कर्मयोगी बनना चाहिए। माता-पिता के बाद किसी छात्र/छात्रा का भविष्य, उसका जीवन, अध्यापक द्वारा दी गई तालीम पर निर्भर करता है। अध्यापक का कर्म श्रेष्ठ छात्र की नींव तैयार करना है। जो आगे चलकर श्रेष्ठ सामाजिक व्यक्ति बन सके। केवल किताबी ज्ञान न देकर, उसे कर्मयोगी बनाना है। उदाहरणतः– मैं एक दिन जयपुर के महाराजा कॉलेज के मैदान में बैठा था। कॉलेज में सी.ए. की प्रतियोगी परीक्षा हो रही थी। मैदान में किसी सी.ए. कोचिंग के विज्ञापन कार्ड बिखरे पड़े थे। एक कार्ड पर लिखी पंक्तियों पर मेरी नजर एकाएक पड़ी, जो विश्व के महानतम उद्योगपति बिल-गेट्स की लिखी थी। उनके अनुसार– *'यदि हम गरीबी में जन्म लेते हैं,/तो इसके, दोषी हम नहीं हैं।/ लेकिन यही, गरीब मर जाते हैं,/तो इसके दोषी हम हैं॥*

पंक्तियों पर चिन्तन किया और पाया कि इन कार्डों का इस शहर में कोई महत्व नहीं है। मात्र कचरा है। लेकिन मेरे विद्यालय के उन गरीब बच्चों के लिए, जो गरीबी में संघर्षपूर्ण जीवन बिता रहे हैं। उनके लिए जीवन दर्शन होगा। उनके भविष्य के लिए मील का पत्थर होगा।

मैंने उन कार्डों को एकत्र करके (लगभग 50) अपने विद्यालय के छात्र/छात्राओं में वितरित कर दिये तथा समझाया, आपका जन्म गरीबी में हुआ तो इसमें माता-पिता की मजबूरी, कमजोर आर्थिक स्थिति, यातायात के साधनों का अभाव, विद्यालयों की कमी या दूरी आदि कारण रहे होंगे। लेकिन आज के समय में अध्ययन के लिए, ऐसी कोई समस्या नहीं है। हमें गरीबी से मुक्त होना है। जब-जब पढ़ाई में निराशा आये इन पंक्तियों पर चिन्तन करना। शायद इसी का सकारात्मक परिणाम रहा कि हमारा कक्षा-10 का विगत दो वर्षों का परिणाम श्रेष्ठतम रहा। छात्रों में पढ़ाई के प्रति उत्साह व जोश है तथा गरीबी से लड़कर आगे बढ़ने की ललक है।

–अध्यापक, रा.मा.वि. बबेरवालो की ढाणी
सांभरलेक, जयपुर-II

आदेश परिपत्रः दिसम्बर, 2011

□ 1. अनुसूचित क्षेत्र में स्थानीय जनजातियों हेतु किए गए आरक्षण आदेशों की पालना सुनिश्चित करने बाबत □ 2. राजसेवकों के स्थाईकरण के सम्बन्ध में □ 3. अन्य विभागों में शिक्षण व्यवस्थार्थ/अशैक्षणिक कार्यों पर लगे शिक्षक/कार्मिकों को मूल विभाग में कार्य करने हेतु कार्यमुक्त किये जाने के निर्देशों की कठोरता से पालना करवाने बाबत □ 4. निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के प्रावधानों के अनुसार समस्त गैर-सरकारी शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश प्रक्रिया का निर्धारण करने बाबत □ 5. शैक्षिक सत्र 2011-12 की अर्द्धवार्षिक परीक्षा की तिथियों में आंशिक परिवर्तन □ 6. शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 39 वीं राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता सत्र 2011-12 के आयोजन के सम्बन्ध में □ 7. राजस्थान लोक सेवाओं के प्रदान की गारंटी अधिनियम, 2011 के प्रावधानों के अन्तर्गत राजकीय सेवा से सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों के पेंशन प्रकरणों/समस्याओं के निराकरण के सम्बन्ध में □ 8. राजकीय विद्यालयों (प्रावि/उप्रावि) में कार्यपुस्तिकाओं के प्रभावी उपयोग एवं मॉनिटरिंग के क्रम में।

1. अनुसूचित क्षेत्र में स्थानीय जनजातियों हेतु किए गए आरक्षण आदेशों की पालना सुनिश्चित करने बाबत

• राजस्थान सरकार, कार्मिक (क-2) विभाग • क्रमांक प. 13(20) कार्मिक क-2/91 (पार्ट), जयपुर, दिनांक 29.8.2011 • परिपत्रादेश • विषय : अनुसूचित क्षेत्र में स्थानीय जनजातियों हेतु किये गये आरक्षण आदेशों की पालना सुनिश्चित करने बाबत • इस विभाग की अधिसूचना प. 13(20) कार्मिक/क-2/91 पार्ट दिनांक 12.09.07 के द्वारा अनुसूचित क्षेत्रों में राज्य सेवाओं को छोड़कर अन्य सभी राजकीय सेवाओं के पदों पर सीधी भर्ती द्वारा भरी जाने वाली रिक्तियों की 45 प्रतिशत रिक्तियाँ अनुसूचित जनजातियों एवं 5 प्रतिशत अनुसूचित जातियों के स्थानीय सदस्यों से भरने और इन क्षेत्रों में शेष 50 प्रतिशत रिक्तियाँ सामान्य वर्ग से भरे जाने का प्रावधान किया गया है।

उपर्युक्त अधिसूचना के माध्यम से दिशा निर्देश जारी करने के उपरान्त भी राज्य सरकार के ध्यान में आया है कि कतिपय विभागाध्यक्षों/नियुक्ति प्राधिकारियों द्वारा अनुसूचित क्षेत्रों में नियमानुसार आरक्षण की पूर्ण पालना नहीं की जा रही है।

अतः समस्त विभागाध्यक्षों एवं नियुक्ति प्राधिकारियों को निर्देशित किया जाता है कि अपने अधीनस्थ विभागों में होने वाली सीधी भर्ती के समय कार्मिक विभाग द्वारा जारी आदेशों की पालना सुनिश्चित करावें तथा आयुक्त जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग, उदयपुर को रिक्तियाँ भरने की सूचना भी नियमित रूप से भिजवाएं। • ह., प्रमुख शासन सचिव।

• कार्यालय, आयुक्त माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/माध्य/अभिलेख/5909/2011 दिनांक 19.9.11

2. राजसेवकों के स्थाईकरण के सम्बन्ध में

• राजस्थान सरकार, कार्मिक (क-2) विभाग • क्रमांक 1(35)कार्मिक/क-2/74 पार्ट जयपुर, दिनांक 11.8.2011 • परिपत्र • विषय : राजसेवकों के स्थाईकरण के सम्बन्ध में। • कार्मिक विभाग के समसंख्यक परिपत्र दिनांक 16.8.10 (प्रति संलग्न) के द्वारा समस्त नियुक्तिकर्ता अधिकारियों/प्राधिकारियों को निर्देशित किया गया था कि राजसेवकों के परिवीक्षा काल पूर्ण कर लेने के पश्चात् स्थाईकरण आदेश अवश्यमेव रूप से जारी किये जावें।

राज्य सरकार के ध्यान में यह आया है कि कतिपय नियुक्ति प्राधिकारी सम्बन्धित राजसेवकों के मामलों में नियमानुसार स्थाईकरण की कार्यवाही नहीं करते हैं व राजसेवकों के स्थाईकरण आदेश जारी नहीं किये जाते हैं।

अतः समस्त नियुक्तिकर्ता अधिकारियों/प्राधिकारियों को पुनः व्यादिष्ट किया जाता है कि उक्त निर्देशों की कठोरता से पालना सुनिश्चित की जाये। • ह., प्रमुख शासन सचिव।

• राजस्थान सरकार, कार्मिक (क-2) विभाग • क्रमांक 1(35)कार्मिक/क-2/74 पार्ट जयपुर • परिपत्र • विषय : राजसेवकों के स्थाईकरण के सम्बन्ध में। • राज्य के अधीन राज्य सेवा, अधीनस्थ सेवा, मंत्रालयिक सेवा एवं चतुर्थ श्रेणी सेवा के अन्तर्गत विविध सेवा नियमों में राजसेवकों के परिवीक्षा काल पूर्ण करने के पश्चात् एवं नियमों में विहित अन्य पात्रताएं पूर्ण करने पर राजसेवक के स्थाईकरण (Confirmation) का प्रावधान स्पष्टतः विहित है। तथापि राज्य सरकार के ध्यान में यह आया है कि कतिपय नियुक्ति प्राधिकारी सम्बन्धित राजसेवकों के मामलों में नियमानुसार स्थाईकरण की कार्यवाही नहीं करते हैं व राजसेवकों के स्थाईकरण आदेश जारी नहीं किये जाते हैं।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने अपील संख्या 596/2007–'खाजिया मोहम्मद मुजामिल – बनाम कर्नाटक राज्य' में दिनांक 08.07.2010 को पारित निर्णय में निर्देशित किया है कि नियमानुसार स्थाईकरण के आदेश समय पर जारी हों।

इस सन्दर्भ में राज्य सरकार द्वारा विचार करके यह निर्णय लिया गया है कि किसी भी राजसेवक को सेवा नियमों में विहित स्थाईकरण के प्रावधान के अनुसार परिवीक्षा काल पूर्ण किये जाने पर उसके स्थाईकरण (Confirmation) के आदेश प्रसारित किये जावें। यदि किसी कारण से परिवीक्षा काल बढ़ाया जाता है तो पर्याप्त कारण वर्णित करते हुए परिवीक्षा काल अभिवृद्धि के आदेश भी प्रसारित किये जावें।

अतः समस्त नियुक्तिकर्ता अधिकारियों/प्राधिकारियों को व्यादिष्ट किया जाता है कि राजसेवकों के परिवीक्षा काल पूर्ण कर लेने के पश्चात् स्थाईकरण आदेश अवश्यमेव रूप से जारी किये जावें। • ह., प्रमुख शासन सचिव।

• कार्यालय, आयुक्त माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/माध्य/अभिलेख/5909/2011 दिनांक 19.9.11

3. अन्य विभागों में शिक्षण व्यवस्थार्थ/अशैक्षणिक कार्यों पर लगे शिक्षक/कार्मिकों को मूल विभाग में कार्य करने हेतु कार्यमुक्त किये जाने के निर्देशों की कठोरता से पालना करवाने बाबत

• राजस्थान सरकार शिक्षा (ग्रुप-2) विभाग • क्रमांक : प.16(23)शिक्षा-2/99 जयपुर, दिनांक : 3.10.2011 • आदेश • पूर्व में जारी समसंख्यक परिपत्र दिनांक 19.8.09 एवं 16.6.2010 द्वारा शिक्षा विभाग के अधीन कार्यरत समस्त शैक्षणिक/अशैक्षणिक कार्मिकों, जो विभाग के अतिरिक्त अन्य विभाग में प्रतिनियुक्ति पर कार्यरत हैं, को अपने मूल पदस्थापित स्थान पर कार्य किये जाने हेतु कार्यमुक्त किये जाने के निर्देशों की कठोरता से पालना सुनिश्चित किये जाने हेतु निर्देश जारी किये गये थे। परन्तु इसके उपरान्त भी यह देखने में आया है कि उक्त निर्देशों की पालना नहीं की जा रही है तथा अभी भी कई कार्मिक अपने मूल पदस्थापन स्थान से अन्यत्र कार्यालयों में प्रतिनियुक्ति पर कार्यव्यवस्थार्थ कार्य कर रहे हैं जिसके कारण शिक्षकों का अपना मूल अध्यापन कार्य एवं लिपिकों का अपने कार्यालय/विद्यालयों का कार्य प्रभावित हो रहा है।

अतः आपको पुनः निर्देशित किया जाता है कि आपके अधीनस्थ

कार्यव्यवस्थार्थ/प्रतिनियुक्ति पर लगे समस्त शैक्षणिक/अशैक्षणिक अधिकारी/कर्मचारियों की प्रतिनियुक्ति एक माह में समाप्त कर मूल विभाग में पदस्थापित करावें। यदि एक माह में कर्मचारी/शिक्षक द्वारा अपने मूल पदस्थापन स्थान पर कार्यग्रहण नहीं किया जाता है तो उनकी सेवाएं समाप्त करने की कार्रवाई करावें।

इन निर्देशों की कठोरता से पालना सुनिश्चित की जावे। • ह., प्रमुख शासन सचिव, स्कूल एवं संस्कृत शिक्षा।

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर। • क्रमांक : शिविरा/मा/साप्र/सी/5522/सामा.प्रति./06-07 दिनांक : 31.10.2011 • विषय : अन्य विभागों में शिक्षण व्यवस्थार्थ/अशैक्षणिक कार्यों पर लगे शिक्षक/कार्मिकों को मूल विभाग में कार्य करने हेतु कार्यमुक्त किये जाने के निर्देशों की कठोरता से पालना करवाने बाबत • प्रसंग : प्रमुख शासन सचिव के आदेश क्रमांक पं.16(23)शिक्षा-2/2010, जयपुर दिनांक 03.10.2011 • उपर्युक्त विषय एवं प्रासंगिक पत्र आदेश की छायाप्रति संलग्न कर निर्देशित किया जाता है कि शिक्षा विभाग के जो शिक्षक/कर्मचारी शैक्षणिक/अशैक्षणिक कार्य हेतु अन्य विभाग में प्रतिनियुक्त पर कार्य कर रहे हैं जिसके कारण विभाग का कार्य प्रभावित हो रहा है।

अतः राज्य सरकार के पत्र दिनांक 3.10.11 की पालना में आपको निर्देशित किया जाता है कि आपके अधीनस्थ कार्यालय में व्यवस्थार्थ/प्रतिनियुक्ति पर लगे समस्त शैक्षणिक/अशैक्षणिक अधिकारी/कर्मचारी की प्रतिनियुक्ति एक माह में समाप्त कर मूल विभाग में पदस्थापित करावें। यदि एक माह में कार्मिक/शिक्षक द्वारा अपने मूल पदस्थापन स्थान पर कार्यग्रहण नहीं किया जाता है तो उनकी सेवा समाप्त करने की कार्यवाही प्रस्तावित कर दी जावेगी।

उक्त निर्देशों की कठोरता से पालना सुनिश्चित करें। • अतिरिक्त निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

4. निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के प्रावधानों के अनुसार समस्त गैर-सरकारी शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश प्रक्रिया का निर्धारण करने बाबत

• कार्यालय निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/प्रारं/आर.टी.ई./19926/निःशुल्क/10-11/वो-1/127 दिनांक 03 नवम्बर, 2011 • विषय : निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के प्रावधानों के अनुसार समस्त गैर-सरकारी शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश प्रक्रिया का निर्धारण करने बाबत। • जैसा कि आपको विदित है निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 सम्पूर्ण देश में दिनांक 01 अप्रैल 2010 से प्रभावशील हो गया है। इस अधिनियम के प्रावधान राज्य में स्थित सभी सरकारी एवं गैर-सरकारी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों तथा ऐसे माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों जिनमें कक्षा 1 से 8 तक शिक्षण कार्य होता है पर लागू होते हैं, चाहे वह विद्यालय अनुदानित अथवा गैर-अनुदानित हों तथा चाहे वह केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध हों या राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सम्बद्ध हों अथवा अन्य किसी बोर्ड/संस्था से सम्बद्ध हों। उक्त अधिनियम राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद की वेबसाइट (www.rajssa.nic.in) पर उपलब्ध हैं।

उक्त अधिनियम की धारा 38 में राज्य सरकार को प्रदत्त अधिकार का प्रयोग करते हुए राज्य सरकार ने इस अधिनियम की क्रियान्विति हेतु 'राजस्थान निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम, 2011' निर्मित कर मार्च 29, 2011 को अधिसूचित किए हैं। राज्य सरकार द्वारा अधिसूचित नियम राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।

उक्त अधिनियम में विद्यार्थियों के प्रवेश के सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण प्रावधान किये गये हैं जिनकी पालना सुनिश्चित किया जाना समस्त सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के लिए बाध्यकारी है। इस सम्बन्ध में आपका ध्यान निम्नांकित प्रावधानों की ओर आकर्षित किया जाता है– - उक्त अधिनियम की धारा 13(1) में यह प्रावधान है कि कोई भी विद्यालय या व्यक्ति किसी बालक को प्रवेश देते समय कोई प्रतिव्यक्ति फीस संग्रहित नहीं करेगा (shall not collect any capitation fee) और बालक या उसके माता-पिता अथवा संरक्षक को किसी अनुवीक्षण प्रक्रिया (screening procedure) के अधीन नहीं रखेगा। - ''अनुवीक्षण प्रक्रिया'' को उक्त अधिनियम की धारा 2 में निम्न प्रकार परिभाषित किया गया है– ''अनुवीक्षण प्रक्रिया'' से किसी अनिश्चित पद्धति से भिन्न दूसरों पर अधिमानता में किसी बालक के प्रवेश के लिए चयन की पद्धति अभिप्रेत हैं। "screening procedure" means the method of selection for admission of a child, in preference over another, other than a random method."

उक्त अधिनियम की धारा 35(1) के द्वारा केन्द्रीय सरकार को यह अधिकार दिया गया है कि वह इस अधिनियम के उपबंधों के कार्यान्वयन के प्रयोजनों हेतु ऐसे मार्गदर्शक सिद्धांत जारी कर सकेगी जो वह ठीक समझे। मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार ने उनके पत्र क्रमांक 1-15/2010-EE-4 दिनांक 23.11.2010 के द्वारा भर्ती प्रक्रिया के सम्बन्ध में निम्नानुसार मार्गदर्शक सिद्धांत जारी किये हैं–

(1) With regard to admissions in class I (or re-primary class as the case may be) under section 12(1)(c) of the RTE Act in unaided and "specified category" schools, schools shall follow a system of random selection out of the applications received from children belonging to disadvantaged groups and weaker sections for filling the pre-determined number of seats, in that class, which should not be less than 25% of the strength of the class. (2) For admission to the remaining 75% of the seats (or a lesser percentage depending upon the number of seats fixed by the school for admission under section 12(1)(c) in respect of unaided schools and specified category schools, and for all the seats in the aided schools, each school should formulate a policy under which admissions are to take place. This policy should include criteria for categorisation of applicants in terms of the objectives of the school on a rational, reasonable and just bases. There shall be no profiling of the child based on parental educational qualifications. The policy should be placed by the school in the public domain, given wide publicity and explicitly stated in the school prospectus. There shall be no testing and interviews for the child/parent falling within or outside the categories, and selection would be on a random basis. Admissions should be made strictly on this basis."

उक्त अधिनियम तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा जारी किये गये मार्गदर्शक सिद्धांत के अनुरूप समस्त गैर-सरकारी विद्यालयों में प्रवेश की स्पष्ट नीति बनाई जानी आवश्यक है जिसमें निम्न प्रावधानों को स्पष्ट रूप से सम्मिलित

किया जावे– 1. अधिनियम की धारा 12 के प्रावधान के अनुरूप समस्त गैर-सरकारी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय तथा ऐसे माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों जिनमें कक्षा 1 से 8 तक शिक्षण कार्य लागू होता है, कक्षा 1 अथवा पूर्व प्राथमिक कक्षा में, जैसी भी स्थिति हो, दाखिल किये जाने वाले बालकों की कुल संख्या की कम से कम 25 प्रतिशत सीमा तक ''दुर्बल वर्ग'' और ''असुविधाग्रस्त समूह'' के बालकों को प्रवेश देंगे। ''दुर्बल वर्ग'' तथा ''असुविधाग्रस्त समूह'' को इस विभाग की अधिसूचना क्रमांक F.21(19)Edu.1/E.E./2009 दिनांक 29 मार्च, 2011 के द्वारा परिभाषित किया गया है। दोनों अधिसूचनाओं की प्रतिलिपि राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। 2. ''दुर्बल वर्ग'' और ''असुविधाग्रस्त समूह'' के बालकों को विद्यालय में 25 प्रतिशत सीटों पर प्रवेश के लिए आवेदन पत्र गुलाबी (Pink) रंग के होंगे तथा इस श्रेणी (category) के बालक-/बालिकाओं से प्राप्त प्रवेश आवेदन पत्रों को एक पृथक रजिस्टर में क्रमवार दर्ज किया जाएगा। समस्त आवेदन-पत्रों की पावती (Receipt) आवश्यक रूप से छात्र/अभिभावक को निर्धारित प्रपत्र में दी जानी है। 3. ''दुर्बल वर्ग'' और ''असुविधाग्रस्त समूह'' के बालक/बालिकाओं हेतु निर्धारित 25 प्रतिशत सीटों हेतु प्राप्त प्रवेश आवेदन पत्र इस श्रेणी (category) की सीटों की संख्या से अधिक होने की स्थिति में, राजस्थान निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम, 2011 के नियम 10 के प्रावधानानुसार लॉटरी द्वारा प्रवेश प्रदान किया जाएगा। लॉटरी की कार्यवाही शाला प्रबन्धन समिति (एस.एम.सी.) के सदस्य एवं अभिभावकों की उपस्थिति में सम्पन्न की जायेगी। लॉटरी निकालने की दिनांक, समय व स्थान का प्रचार-प्रसार पर्याप्त समय पूर्व करना आवश्यक होगा। 4. प्रवेश आवेदन पत्र निर्धारित प्रारूप में जारी किया जायेगा। 5. विद्यालय में 1 से 8 की कक्षाओं में प्रवेश के लिए किसी भी बालक या उसके माता-पिता अथवा संरक्षण को किसी अनुवीक्षण (स्क्रीनिंग) प्रक्रिया के अधीन नहीं रखेगा। यह सुनिश्चित किया जाना है कि सभी विद्यालयों द्वारा प्रवेश प्रक्रिया पूर्णतः पारदर्शी रखी जावे तथा उनके द्वारा निर्धारित प्रवेश प्रक्रिया को आमजन के सूचनार्थ प्रसारित किया जावे। 6. प्रत्येक गैर-सरकारी विद्यालय उक्त प्रावधानानुसार अपने विद्यालय की प्रवेश प्रक्रिया तैयार कर दिनांक 30.11.2011 तक मय टाइम-फ्रेम प्रपत्र-13 के अनुसार जारी करेगा। 7. सभी गैर-सरकारी विद्यालय प्रवेश प्रक्रिया को शाला के बाहर नोटिस बोर्ड पर चस्पा करेंगे। यदि उस विद्यालय की वेबसाइट हो तो उस पर भी डालें व अन्य माध्यमों से सार्वजनिक डोमेन (public domain) में रखेंगे। सभी विद्यालय निर्धारित प्रवेश प्रक्रिया को उनकी शाला के प्रोस्पेक्टस (prospectus) में भी सम्मिलित करेंगे। 8. तय की गई प्रवेश प्रक्रिया की एक प्रति प्रत्येक गैर-सरकारी विद्यालय द्वारा अपने परिक्षेत्र के मॉडल प्रधानाध्यापक (उच्च प्राथमिक विद्यालय) को आवश्यक रूप से उपलब्ध करायेंगे। उक्त प्रवेश प्रक्रिया के प्रबोधन (मॉनिटरिंग) के लिए संलग्न प्रपत्रों अनुसार (प्रपत्र संख्या 1 से 13) परिवीक्षण कर गैर-सरकारी विद्यालयों में प्रवेश सुनिश्चित किया जायेगा। 9. समस्त जिला शिक्षा अधिकारी प्रारम्भिक/माध्यमिक (प्रथम/द्वितीय) को निर्देशित किया जाता है कि उक्तानुसार सभी गैर सरकारी विद्यालयों को पालना हेतु पाबन्द करें। नॉडल प्रधानाध्यापक (उच्च प्राथमिक विद्यालय), ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी और जिला शिक्षा अधिकारी उनके परिक्षेत्र में स्थित गैर सरकारी विद्यालयों की 14.11.2011 तक बैठक लेकर उन्हें उक्तानुसार जानकारी देकर पालना हेतु निर्देशित करेंगे। 10. नॉडल प्रधानाध्यापक (उच्च प्राथमिक विद्यालय), ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी और जिला शिक्षा अधिकारी उनके क्षेत्र की पंचायत राज संस्थाओं/नगरीय निकायों के प्रतिनिधियों को उक्त बैठक में आमंत्रित करेंगे ताकि पंचायती राज संस्थाओं/नगरीय निकायों के माध्यम से ''दुर्बल वर्ग'' और ''असुविधाग्रस्त समूह'' के बालकों का गैर-सरकारी विद्यालयों में प्रवेश सुनिश्चित करवाया जा सके। 11. ''दुर्बल वर्ग'' और ''असुविधाग्रस्त समूह'' के बालक/बालिकाओं हेतु निर्धारित 25 प्रतिशत सीटों पर प्रवेश दिये गये बालकों की सूचना का निर्धारित प्रपत्र में संकलन करेंगे। नॉडल प्रधानाध्यापक इस सूचना को शालावार संकलित कर ब्लॉक प्रारम्भिक अधिकारी को, ब्लॉक प्रारम्भिक अधिकारी जिला शिक्षा अधिकारी (प्रा.शि.) को, जिला शिक्षा अधिकारी (प्रा.शि.) उप निदेशक (प्रा.शि.) को तथा उप निदेशक (प्रा.शि.) निदेशालय को प्रेषित करेंगे। • निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर।

प्रपत्र-1

.....

(विद्यालय का नाम)

दुर्बल वर्ग/असुविधाग्रस्त समूह के बालकों के प्रवेश हेतु

आवेदन-पत्र

(भाग-अ)

1. प्रवेशार्थी बालक/बालिका का नाम : .....
   (अंग्रेजी भाषा में केपिटल लेटर्स में) : .....
2. जाति ..... धर्म .....
3. प्रवेशार्थी की जन्मतिथि (अंकों में) ..... शब्दों में .....
4. प्रवेशार्थी का वर्ग - दुर्बल वर्ग/असुविधाग्रस्त समूह .....
5. माता/पिता/संरक्षक सम्बन्धी विवरण

	पिता	माता	संरक्षक
नाम			
योग्यता			
व्यवसाय			
वर्तमान पता			
स्थाई पता			
फोन नं. निवास			
फोन नं. कार्यालय			
मोबाइल नं.			
ई-मेल			

6. संरक्षक की स्थिति में प्रवेशार्थी से सम्बन्ध : .....
7. बीपीएल सूची (राज्य/केन्द्र) में नाम हो तो विवरण : .....
8. विकलांगता की स्थिति में विकलांगता का विवरण : .....

नोट : जन्म तिथि, जाति, निवास स्थान, वार्षिक आय, बीपीएल सूची, विकलांगता सम्बन्धी सक्षम अधिकारी द्वारा प्रदत्त प्रमाण-पत्र संलग्न करना आवश्यक है।

(भाग-ब)

माता/पिता/संरक्षक द्वारा सशपथ घोषणा

1. मैं सशपथ घोषणा करता/करती हूँ कि भाग अ में प्रवेशार्थी के सम्बन्ध में दी गई समस्त सूचनाएं सही हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि के लिए मैं सदैव जिम्मेदार रहूँगा/रहूँगी।
2. मैं यह भी घोषणा करता/करती हूँ कि विद्यालय के नियमों/उप नियमों का सदैव पालन करूँगा/करूँगी। अन्यथा विद्यालय प्रबन्धन का निर्णय हमें स्वीकार होगा।

प्रस्तुत करने का दिनांक : .....

हस्ताक्षर
(माता/पिता/संरक्षक)

(भाग-स)

(विद्यालय द्वारा आवेदन प्राप्ति की रसीद)

प्रवेशार्थी का नाम ..... पुत्र/पुत्री श्री .... का आवेदन पत्र रजिस्टर में ..... क्रम संख्या पर दर्ज कर लिया गया है।

दिनांक : .....

हस्ताक्षर

(संस्था प्रधान/अधिकृत शिक्षक)

प्रपत्र-2 ए

आवेदन-पत्र जारी करने की पंजिका

क्र.सं.	दिनांक	फार्म क्रमांक	नाम छात्र/छात्रा	माता/पिता संरक्षक का नाम	कक्षा जिसके लिए आवेदन पत्र जारी किया गया	माता/पिता का वर्ग	टिप्पणी

प्रपत्र-2 बी

आवेदन पत्र प्राप्त करने की पंजिका

क्र.सं.	आवेदन पत्र प्राप्ति दिनांक	फार्म क्रमांक	नाम छात्र/छात्रा	माता/पिता संरक्षक का नाम	कक्षा जिसके लिए आवेदन पत्र प्राप्त हुआ	माता/पिता का वर्ग	टिप्पणी

प्रपत्र-3

..... शाला .....

छात्र स्कॉलर रजिस्टर (एस.आर. रजिस्टर)

लेख प्रमाण (क) ..... छात्र प्रवेशांक .....

रजिस्टर संख्या .....

प्रवेश दिनांक	छोड़ने का दिनांक	छोड़ने का कारण

छात्र/छात्रा का नाम तथा धर्म	जन्म तारीख (अंकों में व शब्दों में)	इस शाला में प्रथम प्रवेश का दिनांक	माता तथा पिता का नाम व्यवसाय व पता	संरक्षक का नाम व्यवसाय व पता	छात्र/छात्रा का निवास स्थान	पूर्व शाला का नाम जिसमें छात्र/ छात्रा इस शाला में प्रवेश होने से पहले पढ़ा हो	पूर्व विद्यालय को छोड़ते समय उत्तीर्ण हुआ था/ किस कक्षा में प्रवेश किये जाने योग्य था	दुर्बल वर्ग/ असुविधाग्रस्त समूह
1	2	3	4	5	6	7	8	9

प्रपत्र-4

(विद्यालय द्वारा प्रतिवर्ष नोडल अधिकारी को प्रेषित किया जाने वाला प्रपत्र)

विद्यालय का नाम ..... नोडल केन्द्र का नाम .....

प्रथम/पूर्व प्राथमिक कक्षा प्रवेश फार्म पंजिका

(सत्र .....)

क्र.सं.	एस.आर.एन. व दिनांक	नाम छात्र/छात्रा	माता/पिता/ अभिभावक का नाम	वर्ग (दुर्बल/ असुविधाग्रस्त समूह)	प्रमाणितकर्ता के हस्ताक्षर	टिप्पणी
1	2	3	4	5	6	7

हस्ताक्षर संस्था प्रधान

प्रपत्र-5

नोडल अधिकारी को भेजा जाने वाला प्रपत्र

1. विद्यालय का नाम : .....
2. पूर्व प्राथमिक/प्रथम कक्षा में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की कुल संख्या : .....
3. सीटों की संख्या का प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों का 25 प्रतिशत : .....
4. रिक्त स्थान की स्थिति : .....
5. प्रवेश प्राप्त विद्यार्थियों का वर्गवार विवरण कुल प्रवेश कक्षा-1/पूर्व प्राथमिक असुविधाग्रस्त समूह/दुर्बल समूह : .....

प्रमाणीकरण (संस्था प्रधान द्वारा)

प्रपत्र-6

नोडल द्वारा प्रवेशित बालकों की सूचना ब्लॉक को भिजवाया जाने वाला प्रपत्र

नोडल केन्द्र का नाम :

नोडल केन्द्र के अन्तर्गत आने वाले निजी विद्यालयों की कुल संख्या (प्रावि/उप्रावि/मावि एवं उमावि)

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	25 प्रतिशत के अंतर्गत प्रथम कक्षा/पूर्व प्राथमिक में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या			कक्षा प्रथम के अलावा कक्षा 8 तक के अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या			टिप्पणी
		दुर्बल वर्ग	असुविधाग्रस्त समूह	योग	दुर्बल वर्ग	असुविधाग्रस्त समूह	योग	
1.								
2.								
3.								
4.								
योग								

प्रपत्र-7

ब्लॉक द्वारा प्रवेशित बालकों की सूचना जिशिअ को भिजवाया जाने वाला प्रपत्र

क्र.सं.	नोडल केन्द्र का नाम	25 प्रतिशत के अंतर्गत प्रथम कक्षा में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या			कक्षा प्रथम के अलावा कक्षा 8 तक के अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या			टिप्पणी
		दुर्बल वर्ग	असुविधाग्रस्त समूह	योग	दुर्बल वर्ग	असुविधाग्रस्त समूह	योग	
1.								
2.								
3.								
4.								
योग								

प्रपत्र-8

जिशिअ द्वारा प्रवेशित बालकों की सूचना मंडल कार्यालय को भिजवाया जाने वाला प्रपत्र

क्र.सं.	ब्लॉक कार्यालय का नाम	25 प्रतिशत के अंतर्गत प्रथम कक्षा में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या			कक्षा प्रथम के अलावा कक्षा 8 तक के अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या			टिप्पणी
		दुर्बल वर्ग	असुविधाग्रस्त समूह	योग	दुर्बल वर्ग	असुविधाग्रस्त समूह	योग	
1.								
2.								
3.								
4.								
योग								

प्रपत्र-9

मंडल कार्यालय द्वारा प्रवेशित बालकों की सूचना निदेशालय को भिजवाया जाने वाला प्रपत्र

क्र.सं.	जिले का नाम	25 प्रतिशत के अंतर्गत प्रथम कक्षा में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों की संख्या			कक्षा प्रथम के अलावा कक्षा 8 तक के अध्ययनरत विद्यार्थियों की संख्या			टिप्पणी
		दुर्बल वर्ग	असुविधाग्रस्त समूह	योग	दुर्बल वर्ग	असुविधाग्रस्त समूह	योग	
1.								
2.								
3.								
4.								
योग								

प्रपत्र-10

आर.टी.ई. प्रावधानान्तर्गत विद्यालय निरीक्षण प्रतिवेदन

1. विद्यालय का नाम : .....
2. निरीक्षण तिथि : .....
3. निरीक्षणकर्ता का नाम व पद : .....
4. विद्यालय में स्वीकृत पदों की स्थिति : .....

क्र.सं.	स्वीकृत पद अध्यापक	कार्यरत	रिक्त	आरटीई मानदण्डानुसार अधिशेष	आरटीई मानदण्डानुसार आवश्यकता
1	2	3	4	5	6

5. निरीक्षण के दिन उपस्थिति

क्र.सं.	नाम	पद	उपस्थिति/अनुपस्थिति/अवकाश
1	2	3	4

6. प्रथम कक्षा/प्री-प्राईमरी के प्रवेश की संख्या (नामांकन उपस्थिति)

कक्षा	निरीक्षण तिथि तक नवीन प्रवेश			आर.टी.ई. के अन्तर्गत प्रविष्ट (25%)			निरीक्षण के दिन आईटीई अन्तर्गत प्रविष्ट छात्रों की								
							उपस्थिति			अनुपस्थिति			अवकाश		
कक्षा	छात्र	छात्रा	योग	छात्र	छात्रा	योग	छात्र	छात्रा	योग	छात्र	छात्रा	योग	छात्र	छात्रा	योग
1.															
2.															
3.															
4.															
5.															
6.															
7.															
8.															

7. विद्यालय में परिवाद पेटिका का संधारण एवं क्रियान्वयन
8. (1) विद्यालय भवन की स्थिति (आरटीई के सम्बन्ध में)
   कमरों की संख्या ..... पर्याप्त/अपर्याप्त
   (2) पेयजल की व्यवस्था
   (3) शौचालय/मूत्रालय की व्यवस्था बालकों के लिए/बालिकाओं के लिए
   (4) विद्युत व्यवस्था
   (5) विद्यालय की चारदीवारी
   (6) कम्प्यूटर की व्यवस्था

9. कक्षा शिक्षण में आरटीई के अन्तर्गत प्रविष्ट बालकों की बैठने की व्यवस्था पर टिप्पणी
10. निरीक्षणकर्ता की समग्र टिप्पणी

हस्ताक्षर निरीक्षणकर्ता अधिकारी
मय पदनाम

प्रपत्र-11

आरटीई सम्बन्धी बालकों/माता-पिता की शिकायत निवारण पंजिका

विद्यालय का नाम ..... सत्र .....

क्र.सं.	शिकायत प्राप्ति दिनांक	शिकायतकर्ता का नाम	शिकायतकर्ता का विवरण	शिकायत निवारण की दिनांक	एस.एम.सी. अध्यक्ष की टिप्पणी	गत माह तक अनिस्तारित शिकायतों का नोडल अधिकारियों को प्रेषित विवरण मय कारण

प्रपत्र-12

नोडल अधिकारी को आरटीई सम्बन्धी बालकों/माता-पिता की अनिस्तारित शिकायत को भेजने का प्रारूप

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	शिकायतकर्ता का नाम	शिकायतकर्ता का विवरण	निस्तारण नहीं होने का कारण	एस.एम.सी. अध्यक्ष की टिप्पणी

संस्था प्रधान के हस्ताक्षर **एसएमसी अध्यक्ष के हस्ताक्षर**

प्रपत्र-13

(यह टाइम फ्रेम प्रतिवर्ष 31 मार्च से पूर्व जारी करना आवश्यक है।)

गैर सरकारी विद्यालयों में आर.टी.ई. एक्ट प्रावधानानुसार प्रवेश प्रक्रिया का टाइम फ्रेम

विद्यालय का पूरा नाम मय पता ..... ग्राम पंचायत/ वार्ड .....
ब्लॉक का नाम/जिला का नाम .....

1. विद्यालय में प्रवेश के लिए प्रवेश फार्म वितरण की तिथि : .....
2. विद्यालय में प्रवेश के लिए प्रवेश फार्म जमा करवाने की तिथि : .....
3. आर.टी.ई. एक्ट की धारा 12 के अन्तर्गत 'दुर्बल वर्ग' एवं असुविधाग्रस्त समूह के बालकों को 25 प्रतिशत निःशुल्क कैटेगिरी में प्रवेश देने की तिथि : .....
4. आर.टी.ई. एक्ट के अन्तर्गत प्रवेश पत्र लेने वाले बालकों के लिए लॉटरी निकाले जाने की तिथि : .....
5. शेष 75 प्रतिशत बालकों को प्रवेश देने की तिथि : .....
6. कॉलम 3 और 5 की कैटेगिरी में प्रवेश दिये गये बालकों की सूची जारी करने की तिथि : .....
7. शाला में आरटीई के अन्तर्गत प्रवेशित बालकों की सूची नॉडल प्रधानाध्यापक को भिजवाने की तिथि : .....
   (प्रवेश देने की अंतिम तिथि से 2 सप्ताह)

संस्था प्रधान

.....

5. शैक्षिक सत्र 2011-12 की अर्द्धवार्षिक परीक्षा की तिथियों में आंशिक परिवर्तन

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा-माध्य/मा-स/22418/2011-12 दिनांक 24.10.11 • विषय : शैक्षिक सत्र 2011-12 की अर्द्धवार्षिक परीक्षा की तिथियों में आंशिक परिवर्तन। • शैक्षिक सत्र 2011-12 के शिविरा पंचांग के अनुसार निर्धारित अर्द्धवार्षिक परीक्षा (सभी कक्षाओं के लिए) की तिथियों में निम्नानुसार आंशिक संशोधन किये जाते हैं–

वर्तमान तिथियाँ	संशोधित तिथियाँ
12 से 24 दिसम्बर, 2011	13 से 24 दिसम्बर, 2011

उपरोक्तानुसार अर्द्धवार्षिक परीक्षा आयोजित करना सुनिश्चित करें। • ह. निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

6. शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 39 वीं राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता सत्र 2011-12 के आयोजन के सम्बन्ध में

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/माध्य/खेलकूद-1/35107/2011-12/26 दिनांक 18.11.11 • कार्यालय आदेश • शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित 29 वीं राज्य स्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता सत्र 2011-12 का आयोजन शिविरा पंचांग में दी गई तिथियों के अनुसार निम्न स्तरों पर उनके नाम के सम्मुख अंकित अवधि में होगी–

1. जिला स्तर पर चयन – दिनांक 15.12.11 से 16.12.11 तक **2.** मण्डल स्तर पर चयन – दिनांक 20.12.11 से 21.12.11 तक

3. मण्डल स्तर पर प्रशिक्षण – दिनांक 25.12.11 से 26.12.11 तक **4.** राज्य स्तरीय प्रतियोगिता – दिनांक 27.12.11 से 30.12.11 तक

निदेशालय इकाई का चयन दिनांक 15.12.11 से 16.12.11 तक एवं प्रशिक्षण 19.12.11 से 25.12.11 तक पृथक से प्रसारित आदेशानुसार होगा।

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के आयोजना का दायित्व उपनिदेशक (माध्यमिक) शिक्षा विभाग, चूरू को सौंपा गया है, जिसका आयोजन राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, हरिजन बस्ती, श्रीगंगानगर में दिनांक 27.12.11 से 30.12.11 तक होगा। इस प्रतियोगिता की समस्त कार्यवाही पूर्व में निदेशालय द्वारा प्रसारित शिक्षा विभागीय कर्मचारी क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिता नियमावली एवं मार्गदर्शिका तथा समय-समय पर हुए संशोधनानुसार सम्पादित होगी। उक्त प्रतियोगिता में 126 खिलाड़ियों से अधिक का चयन कर श्रीगंगानगर नहीं ले जावें। जिला एवं मण्डल स्तर पर पूर्वानुसार सम्भागी संख्या रहेगी। खेलानुसार एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत सम्भागियों की संख्या राज्य स्तरीय प्रतियोगिता हेतु निम्नानुसार होगी–

खेल का नाम	खिलाड़ियों की संख्या	एथलेटिक्स में सम्भागी कुल खिलाड़ी			सांस्कृतिक कार्यक्रम	कुल खिलाड़ी
			40 वर्ष से अधिक	40 वर्ष से कम		
बास्केटबॉल	10	100 मीटर दौड़	02	02	सुगम संगीत	02
वॉलीबॉल	10	200 मीटर दौड़	02	02	एकाभिनय	02
टेबलटेनिस	04	400 मीटर दौड़	02	02	एकलनृत्य	02
कैरम	04	800 मीटर दौड़	02	02	विचित्र वेशभूषा	02
शतरंज	02	4 गुणा 100 मीटर दौड़	04	04	हारमोनियम वादन	01
बैडमिन्टन	04	4 गुणा 400 मीटर दौड़	04	04	तबला वादन	01
कबड्डी	10	ऊँची कूद	02	02	ढोलक वादन	01
फुटबॉल	14	लम्बी कूद	02	02	झांझ वादन	01
		त्रिकूद	02	02		
		तश्तरी फेंक	02	02		
		भाला फेंक	02	02		
		गोला फेंक	02	02		

राज्यस्तरीय प्रतियोगिता की सम्पूर्ण व्यवस्थाएँ यथा खेल मैदान, उपकरणों, निर्णायकगण, आवास व्यवस्था, चिकित्सा एवं सुरक्षा व्यवस्था, बिजली, पानी आदि की सुनिश्चितता प्रतियोगिता आयोजन के एक सप्ताह पूर्व आवश्यक रूप से की जावे। साथ ही प्रतियोगिता आयोजक विद्यालय द्वारा सम्भागी दलों के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, हरिजन बस्ती, श्रीगंगानगर पहुँचने हेतु रेल/बस मार्गों की सूचना प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि., हरिजन बस्ती, श्रीगंगानगर द्वारा प्रसारित कर समस्त सम्भागी दलों हेतु मण्डल अधिकारियों एवं निदेशालय को प्रेषित की जावें। • ह., निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

7. राजस्थान लोक सेवाओं के प्रदान की गारंटी अधिनियम, 2011 के प्रावधानों के अन्तर्गत राजकीय सेवा से सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों के पेंशन प्रकरणों/समस्याओं के निराकरण के सम्बन्ध में

• राजस्थान सरकार, वित्त (राजस्व) विभाग • क्रमांक : प.10(1)वित्त/राजस्व/2010/पार्ट दिनांक 11 नवम्बर, 2011 • परिपत्र • विषय : राजस्थान लोक सेवाओं के प्रदान की गारंटी अधिनियम, 2011 के प्रावधानों के अन्तर्गत राजकीय सेवा से सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों के पेंशन प्रकरणों/समस्याओं के निराकरण के सम्बन्ध में। • राज्य सरकार द्वारा एक महत्वपूर्ण निर्णय लेकर भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए राज्य में 14 नवम्बर, 2011 से 'राजस्थान लोक सेवाओं के प्रदान की गारन्टी अधिनियम-2011' लागू किया गया है। इस अधिनियम के तहत सम्मिलित 108 सेवाओं में राजकीय सेवा से सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों के पेंशन प्रकरण समय पर निस्तारित करने एवं समस्याओं के निराकरण हेतु पेंशन से सम्बन्धित सेवाएं भी सम्मिलित हैं। राजस्थान सिविल सेवा (पेंशन नियम) 1996 में पेंशन प्रकरण सेवानिवृत्ति से 6 माह पूर्व तैयार कर पेंशन विभाग को भिजवाने का दायित्व सम्बन्धित विभाग के कार्यालयाध्यक्ष का है तथा 1 माह पूर्व पेंशन अधिकृतियाँ जारी करने का दायित्व पेंशन विभाग के सम्बन्धित अधिकारी का है। यह सेवा प्रदान करने के लिए अधिसूचना संख्या प.13(1)प्रसु/सम/अनु-1/2008 दिनांक 5.10.11 के क्रमांक 58 से 65 पर पदाभिहित अधिकारी/सहायक पदाभिहित अधिकारी/प्रथम अपीलेट अधिकारी एवं द्वितीय अपीलेट अधिकारी तथा सेवा प्रदान करने की समयावधि अधिसूचित की गई है। पुस्तिका के सम्बन्धित पृष्ठ संख्या 56 से 60 तक की प्रतियाँ सुलभ संदर्भ हेतु संलग्न हैं।

लोक सेवाएं प्रदान करने हेतु गारन्टी अधिनियम एवं नियमों के संदर्भ में सभी विभागों को निर्देश दिये जाते हैं कि विषयान्तर्गत सेवाओं हेतु राजस्थान लोक सेवाओं के प्रदान की गारन्टी अधिनियम, 2011 में निर्धारित समय सीमा में निष्पादन करवाना सुनिश्चित करावें। • ह., अतिरिक्त मुख्य सचिव, वित्त। • कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/मा/पेंशन-अ/34925/09/150 दिनांक 16.11.11 • ह., मुख्य लेखाधिकारी, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

• राजस्थान सरकार, प्रशासनिक सुधार एवं समन्वय विभाग (अनुभाग-1) • क्रमांक : प.13(1)प्र.सु./सम./अनु-1/2008 जयपुर, दिनांक : 5.10.2011 • अधिसूचना • राजस्थान लोक सेवाओं के प्रदान की गारंटी अधिनियम, 2011 (2011 का अधिनियम संख्यांक 23) की धारा 3 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राज्य सरकार एतद्द्वारा नीचे दी गई सारणी में वर्णित सेवाओं, जिन पर उक्त अधिनियम के प्रावधान लागू होंगे व उन सेवाओं के सम्बन्ध में सेवा प्रदान करने की नियत समय सीमा, पदाभिहित अधिकारी व उनकी सहायता करने वाले सहायक पदाभिहित अधिकारी, प्रथम अपील अधिकारी, द्वितीय अपील अधिकारी अधिसूचित करती है, अर्थात्–

क्र.सं.	विभाग	विधेयक की धारा 3 की परिधि में ली गई सेवा		सेवा प्रदान करने की समयावधि	पदाभिहित अधिकारी	सहायक पदाभिहित अधिकारी	प्रथम अपीलीय अधिकारी	द्वितीय अपील प्राधिकारी	विशेष टिप्पणी, यदि कोई हो।
		क्र.सं.	सेवा का विवरण						
11	वित्त विभाग (1) समस्त विभाग	58	सेवा निवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों के पेंशन प्रकरण/समस्याओं का निवारण : कर्मचारी का पूर्ण पेंशन प्रकरण तैयार कर पेंशन विभाग को भिजवाना (पेंशन प्रकरण तैयार करने हेतु रा.सि.से.पे. नियम, 1996 के परिशिष्ट-VIII में वर्णित कार्यवाही निर्धारित समय पर पूरी की जानी है।	सेवा निवृत्ति के 6 माह पूर्व	पैतृक विभाग का कार्यालय अध्यक्ष	–	पैतृक विभाग का विभाग अध्यक्ष	सचिव, प्रशासनिक विभाग	कर्मचारी द्वारा रा.सि.से. पेंशन नियम, 1998 के परिशिष्ट-XI में वर्णित कार्यवाही निर्धारित समय में पूरी की जाने की शर्त के अध्यधीन
		59	सेवा में रहते कर्मचारी की/पारिवारिक पेंशनर की मृत्यु की स्थिति में परिवार पेंशन एवं उपादान स्वीकृति का प्रकरण तैयार कर पेंशन विभाग को भिजवाना।	पेंशनर/पारिवारिक पेंशनर की मृत्यु की सूचना प्राप्त होने की 1 माह में	पैतृक विभाग का कार्यालय अध्यक्ष	–	पैतृक विभाग का विभाग अध्यक्ष	सचिव, प्रशासनिक विभाग	पात्र पारिवारिक पेंशनर द्वारा प्रपत्र 14/20 (जो भी लागू हो) में निर्धारित समय पर आवेदन करने के अध्यधीन

8. राजकीय विद्यालयों (प्रावि/उप्रावि) में कार्यपुस्तिकाओं के प्रभावी उपयोग एवं मॉनिटरिंग के क्रम में।

• कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर • परिपत्र • विषय : राजकीय विद्यालयों (प्रावि/उप्रावि) में कार्यपुस्तिकाओं के प्रभावी उपयोग एवं मॉनिटरिंग के क्रम में। • प्रसंग : इस कार्यालय का पत्रांक शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/गुणात्मक सुधार/11-12 दिनांक 27.05.2011 • प्रारम्भिक शिक्षा में शैक्षिक गुणवत्ता वृद्धि हेतु कक्षा 1-8 में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए गणित, अंग्रेजी एवं विज्ञान विषयों की कार्यपुस्तिकाएं समस्त राजकीय विद्यालयों में नोडल प्रधानाध्यापक के माध्यम से सर्व शिक्षा अभियान के अन्तर्गत निःशुल्क उपलब्ध करवायी गयी है, परन्तु शिक्षा अधिकारियों द्वारा विद्यालय अवलोकन में पाया गया कि कक्षा-कक्ष में कार्यपुस्तिकाओं का उपयोग अपेक्षा से कम हो रहा है। इसका कारण विषयाध्यापकों का कार्यपुस्तिका के उपयोग में नहीं लेना है।

अवलोकन के दौरान फीडबैक लिए जाने पर छात्र-छात्राओं ने कार्यपुस्तिका में कार्य करना अधिक रुचिकर व उपयोगी बताया है। शिक्षकों एवं अभिभावकों ने भी निःसंदेह इन्हें उपयोगी माना है, परन्तु विद्यालयों में उपयोग एवं अभ्यास का कम होना पाया गया है। सही मायने में कार्यपुस्तिका का उपयोग करने हेतु इसमें दिये गये निर्देशों को पढ़कर अध्यापक छात्रों से कार्य करवा सकता है।

अतः निर्देशित किया जाता है कि कार्यपुस्तिकाओं के कक्षा-कक्षों में उपयोग की मानिटरिंग हेतु जिशिअ प्राशि दो विद्यालयों का, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी अपने ब्लॉक के 05 विद्यालयों का, अतिरिक्त ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी अपने ब्लॉक के 10 विद्यालयों का प्रतिमाह निरीक्षण कर इसका प्रतिवेदन एवं फीडबैक अपने सुझाव सहित परिषद कार्यालय एवं इस विभाग को भिजवाना सुनिश्चित करें साथ ही जिला स्तर पर आयोजित बीईईओ की बैठक तथा ब्लॉक पर नोडल प्रधानाध्यापकों की बैठक तथा नोडल पर शिक्षकों की बैठक में कार्यपुस्तिका के उपयोग की समीक्षा की जावे। इसके लिए एक कार्य योजना बनाकर सघन अभियान माह नवम्बर, दिसम्बर में संचालित किया जावे।

निरीक्षण में निम्न बिन्दुओं पर विशेष ध्यान दिया जावे– 1. विद्यालयों में कार्यपुस्तिकाओं की मौजूदा स्थिति (प्राप्त/वितरण)। 2. विद्यार्थियों द्वारा कार्यपुस्तिकाओं के नियमित उपयोग की स्थिति। 3. अध्यापकों के दैनन्दिनी में कार्यपुस्तिका को लेकर किये जाने वाले कार्य का विवरण। 4. पाठ्य समाप्ति/विषयवस्तु समाप्ति पर कक्षा-कक्ष में अधिगम प्रक्रिया को पक्का करने हेतु कार्यपुस्तिकाओं के अध्यापक द्वारा उपयोग की स्थिति। 5. प्रधानाध्यापक द्वारा कक्षा अवलोकन/गृहकार्य जाँच योजना में कार्यपुस्तिका उपयोग का उल्लेख। 6. पूर्व निरीक्षण के दौरान निरीक्षण अधिकारी द्वारा कार्यपुस्तिका के उपयोग के सम्बन्ध में सुझाव या टिप्पणी पर अनुपालना की स्थिति। 7. कार्यपुस्तिकाओं की जाँच की स्थिति। 8. एसएमसी के सदस्यों की कार्यपुस्तिका के उपयोग के सम्बन्ध में सुझाव।

• ह., अतिरिक्त निदेशक (शैक्षिक), प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर। • क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/गुणात्मकसुधार/11-12 दिनांक 11.11.11

माह : दिसम्बर, 2011 — **विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम** — **प्रसारण समय : दोपहर 2.10 से 2.30 तक**

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ का नाम
1.12.2011	गुरुवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम	विश्व एड्स दिवस एवं विश्व एकता दिवस
2.12.2011	शुक्रवार	जयपुर	8	परीक्षामाला	हिन्दी
3.12.2011	शनिवार	जोधपुर	8	परीक्षामाला	अंग्रेजी
5.12.2011	सोमवार	उदयपुर	8	परीक्षामाला	विज्ञान
7.12.2011	बुधवार	बीकानेर	8	परीक्षामाला	गणित
8.12.2011	गुरुवार	जयपुर	8	परीक्षामाला	संस्कृत
9.12.2011	शुक्रवार	जोधपुर	9	परीक्षामाला	हिन्दी
13 से 24 दिसम्बर 2011 तक अर्द्धवार्षिक परीक्षा। • 25 दिसम्बर, 2011 क्रिसमस डे अवकाश। • 26 से 31 दिसम्बर 2011 तक शीतकालीन अवकाश।					

• ह. निदेशक, शैक्षिक प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान, अजमेर

शिविरा पंचांग माह दिसम्बर, 2011

कार्य दिवस 20 • रविवार 04 • अवकाश 07 • उत्सव 02 • 1 दिसम्बर– विश्व एड्स दिवस एवं विश्व एकता दिवस (उत्सव)। **1–10 दिसम्बर**– ग्राम स्तर पर शैक्षिक योजना निर्माण हेतु कार्यशाला का आयोजन (प्रारम्भिक)। **03 दिसम्बर**– विश्व विकलांगता दिवस का आयोजन (समावेशित शिक्षा के उन्नयन हेतु)। **06 दिसम्बर**– मोहर्रम (अवकाश चन्द्रदर्शनानुसार)। **10 दिसम्बर**– मानव अधिकार दिवस (उत्सव)। **13–24 दिसम्बर**– अर्द्धवार्षिक परीक्षा (सभी कक्षाओं के लिए)। **14–21 दिसम्बर**– राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण सप्ताह का आयोजन। **15–16 दिसम्बर**– राज्य स्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु जिला स्तर पर चयन। **19 दिसम्बर**– भामाशाह योजना का अर्द्धवार्षिक प्रगति प्रतिवेदन निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर को प्रेषित करना। **20–21 दिसम्बर**– राज्यस्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर चयन एव दल गठन। **22–24 दिसम्बर**– राज्यस्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता हेतु मण्डल स्तर पर प्रशिक्षण शिविर। **25–26 दिसम्बर**– राज्यस्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता हेतु प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन। **25–31 दिसम्बर**– शीतकालीन अवकाश (25 दिसम्बर को क्रिसमस अवकाश सहित) नव नियुक्त शिक्षकों हेतु प्रशिक्षणों का आयोजन। लिंग्वालैब प्रशिक्षण। राज्य कर्मचारियों के हितकारी निधि के वार्षिक अंशदान को दिसम्बर के वेतन से निर्धारित दर पर कटौती की कार्यवाही करना। **27–29 दिसम्बर**– राज्य स्तरीय शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता। **27–30 दिसम्बर**– राज्यस्तरीय मंत्रालयिक कर्मचारी खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन, विशेष आवश्यकता वाले बालक–बालिकाओं को अंग–उपकरण का वितरण। **नोट** :– माह में कम्प्यूटर प्रशिक्षण एवं विषय आधारित 3 दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किये जायेंगे।

बापू की सीख-7

सत्य और अहिंसा का पालन

□ मो. क. गाँधी

सर्प को मारें या नहीं? स्त्री के ऊपर बलात्कार हो रहा हो तब आक्रमणकारी को मारें या नहीं? खेत में जीव मरते हैं यह जानते हुए भी हल चलाएं या नहीं? अहिंसा का उपासक इन प्रश्नों को हल करने में न लगे। इन गुत्थियों को जब सुलझाना होगा, तब वे अपने-आप सुलझ जाएंगी, इस भुलावे में पड़ना अहिंसा को बिसार देने के बराबर है।

अहिंसा के पालन का जिसको उत्साह हो वह अपने अंतर में और अपने पड़ोसियों को देखे। अगर उसके मन में द्वेष भरा हो तो समझे कि वह अहिंसा की पहली सीढ़ी पर भी नहीं चढ़ा। अपने पड़ोसी, साथी के साथ वह अहिंसा का पालन न करता हो तो वह अहिंसा से हजारों कोस दूर है।

इसलिए रोज सोते समय वह अपने-आपसे पूछे कि आज मैंने अपने साथी का तिरस्कार किया ? उसको खराब खादी देकर खुद अच्छी ली? उसे कच्ची रोटी देकर खुद अच्छी ली? उसे कच्ची रोटी देकर खुद पकी हुई ली? अपने काम में चोरी करके साथी के ऊपर बोझ डाला ? आज मेरा पड़ोसी बीमार था, उसकी तीमारदारी करने न गया, प्यासे बटोहियों ने मुझसे पानी माँगा, मैंने न दिया, मेहमान आये, उनका नमस्कार से भी सत्कार न किया; मजदूर का तिरस्कार किया, उसके ऊपर बिना विचारे काम लादता रहा; बैल को पैना मारता रहा; रसोई में भात कच्चा था; इससे खीझा– ये सारी बातें भारी हिंसा हैं। इस तरह नित्य के व्यवहार में हम स्वाभाविक रीति से अहिंसा का पालन करें तो दूसरे विषयों में हम अहिंसा का पालन करने लायक ही न होंगे, या दूसरी बातों में उसका पालन करते हों तो उसकी कीमत बहुत कम होगी या कुछ भी न होगी। अहिंसा प्रतिक्षण काम करने वाली प्रचंड शक्ति है। उसकी परीक्षा हमारे प्रतिक्षण के कार्य में, प्रतिक्षण के विचार में हो रही है। जो कौड़ी की फिक्र करेगा उसकी कौड़ी सलामत ही है; पर जिसने कौड़ी की परवाह नहीं की उसने कौड़ी भी खोई और कौड़ी तो उसकी थी ही नहीं।

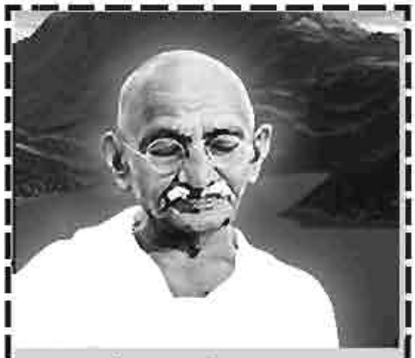

महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। राजनीति, अर्थनीति, समाजनीति एवं शिक्षा सभी क्षेत्रों में उनके विचार बहुत उपयोगी हैं। वस्तुतः वे एक मनोवैज्ञानिक शिक्षक थे। उनकी शिक्षा सम्बन्धी 21 रचनाएं 'बापू की सीख' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुई हैं। शिविरा के सुधि पाठकों के लिए उन्हें शृंखलाबद्ध प्रकाशित किए जाने का निर्णय लिया गया है। आशा है पाठक इन विचारों को पठन, मनन के साथ आचरण में लाने का प्रयास करेंगे। **–वरिष्ठ सम्पादक**

... ...

जो बात अहिंसा की है वही सत्य की समझिए। गाय को बचाने के लिए झूठ बोला जा सकता है या नहीं, इस उलझन में पड़कर अपनी नजर के नीचे जो रोज हो रहा है, उसको भूल जाएं तो सत्य की साधना न हो सकेगी; यों गहरे पानी में पैठना सत्य को ढाँकने का रास्ता है। तत्काल जो समस्याएँ रोज हमारे सामने आकर खड़ी हो रही हैं उनमें हम सत्य का पालन करें तो कठिन अवसरों पर क्या करना होगा, इसका ज्ञान हमें अपने आप हो जाएगा।

इस दृष्टि से हममें से हर एक को केवल अपने आपको ही देखना है। अपने विचार से मैं किसी को ठगता हूँ? अगर मैं 'ब' को खराब मानता हूँ और उसको बताता हूँ कि वह अच्छा है तो मैं उसको ठगता हूँ। बड़ा या भला कहलाने की इच्छा से जो गुण मुझमें नहीं हैं उन्हें दिखाने की कोशिश करता हूँ? बोलने में अतिशयोक्ति करता हूँ? किये हुए दोष जिसको बता देने चाहिए उससे छिपाता हूँ? मेरा साथी या अफसर कुछ पूछता है तो उसे जवाब में बात को उड़ा देता हूँ। जो कहना चाहिए उसे छिपाता हूँ। इनमें से कुछ भी करते हैं तो हम असत्य का आचरण करते हैं, यों हरेक को रोज अपने आपसे हिसाब लेकर आपको सुधारना चाहिए। जिसको सच बोलने की ही आदत पड़ गई हो, ऐसी स्थिति हो गई हो कि असत्य मुँह से निकल ही न सके, वह भले ही अपने आपसे रोज हिसाब न माँगे; पर जिसमें लेशमात्र भी असत्य हो या जो प्रयत्न करके ही सत्य का आचरण कर सकता हो उसे तो ऊपर बताई हुई रीति से यही या इस तरह के जितने सूझें उतने सवालों का जवाब रोज अपने आपको देना चाहिए। यों जो एक महीना भी करेगा उसे अपने आपमें हुआ परिवर्तन स्पष्ट दिखाई देगा।

'धर्म-रीति' से

महात्मा-मंथन

मैं मुश्किल से साधारण श्रेणी का विद्यार्थी रहा होऊँगा। ग्रामशाला से उपनगर की शाला में और वहाँ से हाई स्कूल में। यहाँ तक पहुँचने में मेरा बारहवाँ वर्ष बीत गया। मुझे याद नहीं पड़ता कि इस बीच मैंने किसी भी समय शिक्षक को धोखा दिया हो। पाठशाला में मैं अपने काम से काम रखता। घंटी बजने के समय पहुँचता और पाठशाला बंद होते ही घर भागता।

हाई स्कूल पहले ही वर्ष की परीक्षा के समय की एक घटना उल्लेखनीय है। शिक्षा विभाग के इंसपेक्टर साहब विद्यालय का निरीक्षण करने आए थे। उन्होंने पहली कक्षा के विद्यार्थियों को अंग्रेजी के पाँच शब्द लिखवाये। उनमें एक शब्द 'केटल' (Kettle) था। मैंने उसके हिज्जे गलत लिखे थे। शिक्षक ने अपने बूट की नोक मार कर मुझे सावधान किया। लेकिन मैं क्यों सावधान होने लगा? मुझे यह खयाल ही न हो सका कि शिक्षक मुझे पास वाले लड़के की पट्टी देखकर हिज्जे सुधार लेने को कहते हैं। मैंने यह माना था कि शिक्षक तो यह देख रहे हैं कि हम एक दूसरे की पट्टी में देखकर चोरी न करें। सब लड़कों के पाँच शब्द सही निकले और अकेला मैं बेवकूफ रहा। शिक्षक ने मुझे मेरी बेवकूफी बाद में समझायी लेकिन मेरे मन पर उनके समझाने का कोई असर नहीं हुआ। मैं दूसरे लड़कों की पट्टी में देखकर चोरी करना कभी न सीख सका। इतने पर भी शिक्षक के प्रति मेरा विनय कभी कम न हुआ। बड़ों के दोष न देखने का गुण मुझमें स्वभाव से ही था। [*–सत्य के प्रयोग (गाँधी-आत्मकथा) अ.2–बचपन–3–4*]

खेल बिना शिक्षा अधूरी

❑ सुधा तैलंग

शिक्षा का लक्ष्य बच्चों का शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास कर उन्हें एक कुशल नागरिक बनाना है। शिक्षा से ही बाल पीढ़ी का सर्वांगीण विकास होता है। इस सर्वांगीण विकास में किताबी ज्ञान के साथ-साथ अन्य शैक्षणिक सह गतिविधियाँ, खेलकूद की भी अपनी अहम् भूमिका है। वरना पाठ्येत्तर सहगामी क्रियाओं के अभाव में कोरा कागजी ज्ञान अधूरा ही रह जाता है। क्योंकि किताबी ज्ञान, परीक्षा की तैयारी, पाठ्यक्रम के तनाव में बच्चों को मानसिक थकान हो जाती है। ऐसे में खेलकूद, सांस्कृतिक, साहित्यिक गतिविधियों बच्चों की थकान दूर कर उनका स्वस्थ मनोरंजन करता है।

प्रतियोगिता के युग में आज स्कूली शिक्षा में पाठ्यक्रम बेहद, जटिल, बोझिल होता जा रहा है। पाठ्यक्रम का विस्तार, यूनिट-टेस्ट, परीक्षा की तैयारी, प्रोजेक्ट तैयारी, होमवर्क की टेन्शन, ट्यूशन-कोचिंग की दौड़ के संग टी.वी., कम्प्यूटर, इन्टरनेट के चक्रव्यूह में बालपीढ़ी का बचपन उनसे दिनोंदिन छिनता जा रहा है। वो खेलकूद, हँसना, स्वतंत्रता से जीना भूलते जा रहे हैं खेलकूद के अभाव में बच्चे अकेलेपन व तनाव का शिकार होते जा रहे हैं। मोटापा, बीमारियाँ, बालपीढ़ी को घेरती जा रही हैं। ऐसे में खेल मंत्रालय दिल्ली, भारत सरकार का निर्णय स्कूलों में खेल पीरियड की अनिवार्यता निश्चित ही इस दिशा में एक प्रशंसनीय पहल कही जा सकती है।

अभी हाल ही में खेल मंत्रालय ने सिफारिश की है कि हर स्कूल में खेल का पीरियड अनिवार्य रूप से लगाया जाए व लंच का पीरियड बढ़ाया जाए। मंत्रालय का मानना है कि लंच के अतिरिक्त समय का उपयोग भी छात्र खेलने में करें। प्रतिभा, रुचि दब कर रह जाती है। आज कंकरीट की सड़कों व बढ़ते शहरीकरण ने गलियों को छोटा कर दिया है। खेल के मैदान गुम होते जा रहे हैं। ऐसे में बच्चों को स्कूलों के अलावा पास-पड़ौस में भी खेलने का अवसर नहीं मिल पा रहा है।

यदि स्कूलों में खेल मैदान अनिवार्यतः उपलब्ध कराए जाएं, खेल प्रशिक्षकों की नियुक्ति कर खेल पीरियड लगाए जाएं तो निश्चित ही बच्चों में खेल भावना जागेगी। उनकी प्रतिभा उभर कर सामने आएगी। देश को मँजे हुए योग्य भावी खिलाड़ी मिल सकेंगे। देखा जाए तो ग्रामीण क्षेत्रों में कुशल तैराक, दौड़-कूद, भाला फेंक, वेटलिफ्टर, कबड्डी, कुश्ती, मलखंभ, साइकिलिंग, तीर चलाने वाले जैसे खेलों में माहिर बच्चों की कमी नहीं है पर उचित अवसर व प्रशिक्षण मिलने के अभाव में ग्रामीण बच्चों की प्रतिभा सामने उभर कर नहीं आ पाती है। ऐसे में भारत सरकार की सिफारिश खेलों को प्रोत्साहन देने में एक सराहनीय कदम कही जा सकती है।

खेल ही जीवन है। बिना खेल के हम जीने की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। खेल की महत्ता तो सब जानते हैं। एक छोटा सा बच्चा बचपन से ही खेलने में आनंद लेने लगता है। पशु-पक्षी भी लुका-छिपी, दौड़, खेल-कूद का मजा लेते हैं। ऐसे में खेल को जीवन की सबसे सुखद अनुभूति कह सकते हैं। खेलने से शरीर स्वस्थ होता है। शरीर में ऊर्जा, स्फूर्ति आती है। माँस पेशियाँ बलिष्ठ होती हैं। रक्त संचार होता है। खेलने से ही जीवन में अनुशासन सहयोग की भावना, एकता, राष्ट्रीय भावना, हार कर जीतने, आगे बढ़ने की प्रेरणा व आत्मविश्वास की भावना पैदा होती है। कोरी किताबी शिक्षा बच्चों का सर्वांगीण विकास नहीं कर पाती। व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास के लिए खेल एक अनिवार्य पहलू कहा जा सकता है। कभी देश के कई राज्यों के स्कूलों में खेल पीरियड प्रतिदिन न होकर सप्ताह में दो या तीन दिन ही लगते हैं। कई स्कूलों में एक दिन भी नहीं लगते। (टाइम टेबिल) में खेल पीरियड लगे रहने के बावजूद भी स्कूलों में खेलों को महत्त्व नहीं दिया जाता। कहीं पी.टी.आई./खेल शिक्षक नहीं हैं तो कई स्कूलों में खेल के मैदान नहीं हैं। खेल पीरियड प्रतिनिधि लगाये जाने से बच्चों की खेल प्रतिभा की पहचान भी स्कूली स्तर से हो सकेगी व प्रतिभाएं तराशी भी जा सकेंगी। बच्चों की अतिरिक्त ऊर्जा शक्ति का उपयोग हो सकेगा व उनका स्वास्थ्य भी बेहतर बनेगा।

शासन का ये निर्णय सच में काबिले तारीफ है। यदि सभी राज्यों के स्कूल शिक्षा विभाग इस सिफारिश पर अमन करें तो हमारे देश के नौनिहालों का भविष्य स्वर्णिम बन सकता है। क्योंकि बच्चों में प्रायः जन्मजात प्रतिभा, रुचि होती है। पर बिना समुचित मंच के, प्रोत्साहन के अभाव में उनकी प्रतिभा सामने उभरकर नहीं आती। शहरी बच्चों को तो फिर भी कुछ करने का अवसर प्राप्त हो जाता है। पर ग्रामीण बच्चों को प्रतिभा, इच्छाशक्ति होने के बावजूद भी गांवों के स्कूलों में खेल मैदान व खेल प्रशिक्षक न होने के कारण अपनी योग्यता साबित करने का, आगे बढ़ने का मौका नहीं मिल पाता। ऐसे में यदि पूरे स्कूलों में खेल पीरियड अनिवार्यतः लगाया जाए तो निश्चित ही देश को कई होनहार खिलाड़ियों के मिलने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है।

कई बच्चों में बचपन से ही क्रिकेट, खो-खो, कबड्डी, फुटबॉल। बेडमिंटन, दौड़, तैराकी, कुश्ती में रुचि होती है। वो स्कूल से आने के बाद दोस्तों के साथ खेलना चाहते हैं पर पढ़ाई के बोझ के चलते अभिभावकों के द्वारा भी उन्हें प्रोत्साहन नहीं मिलता। ऐसे में उनकी प्रतिभा दबकर रह जाती हैं। प्रतियोगिता के दौर में माता-पिता का बच्चों पर दबाव बना रहता है कि वो बेहतर अंक लाएं। मैरिट में आएं। ऐसी स्थिति में खेलकूद की बजाए अभिभावक पढ़ाई, ट्यूशन, कोचिंग को ही महत्त्व देते हैं। खेलकूद के अभाव में मानसिक तनाव बच्चों में

बढ़ता जाता है। और वे उद्दण्ड व अनुशासनहीन हो जाते हैं। अतिरिक्त ऊर्जा का व्यय बच्चे शरारतों में करने लगते हैं। खेल के मैदान ही बच्चों में अनुशासन व सहयोग की भावना ला सकते हैं।

खेल मंत्रालय की सिफारिश को यदि सभी राज्य अनिवार्यतः लागू कर दें तो बच्चों का भविष्य सुधर सकता है। देश को स्वस्थ, होनहार खिलाड़ी मिल सकते हैं। देखा जाए तो कई स्कूलों में खेल प्रशिक्षक भी नहीं हैं। शासन यदि युवा खेल प्रशिक्षकों की भर्ती करें तो युवाओं को रोजगार भी मिल सकता है। प्रतिदिन खेल पीरियड व लंच का समय बढ़ाने से निश्चित ही बच्चों को खेलने का अवसर अधिक समय तक मिल सकेगा। इससे वे किताबी ज्ञान के बोझ से कुछ समय के लिए बाहर निकल कर स्वतंत्रता से अपना स्वस्थ मनोरंजन भी कर सकेंगे। सामाजिक सहयोग की भावना सीखते हुए मन को आनन्दित करते हुए शरीर को भी स्वस्थ बना सकेंगे। खेल पीरियड के बाद पढ़ाई के पीरियड में और अधिक प्रसन्न मन से, ऊर्जावान होकर अपनी पढ़ाई कर सकेंगे। खेल से कैरियर बनाकर जीवन में सफलता पाई जा सकती है। पढ़ाई के साथ-साथ विद्यार्थियों के लिए खेलकूद एक आवश्यकता है। खेल के बिना शिक्षा अधूरी है।

–T/2 प्लाट नं. 16/17, सिमरन अपार्ट-II
E-8 , त्रिलंगा, भोपाल (म.प्र.) 462039

रपट

महाकवि सेठिया की स्मृति में कवि सम्मेलन

'मायड़ थारों वो पूत कठै, वो मेवाड़ी सिरमोर कठै'

महाकवि कन्हैयालाल सेठिया की तृतीय पुण्य स्मृति में मरूदेश संस्थान, सुजानगढ़ के तत्वावधान में राजस्थानी भाषा, साहित्य एवम् संस्कृति अकादमी, बीकानेर व श्री बालाजी नर्सिंग इंस्टीट्यूट व नर्सिंग कॉलेज, सुजानगढ़ के संयुक्त सौजन्य सहयोग से आयोजित राजस्थानी कवि सम्मेलन रात्रि 2 बजे तक चला। दी यंग्स क्लब सभागार में आयोज्य तृतीय राजस्थानी कवि सम्मेलन का उद्घाटन मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्री मास्टर भंवरलाल मेघवाल ने दीप प्रज्वलन कर किया। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता राजस्थानी भाषा, साहित्य एवम् संस्कृति अकादमी बीकानेर के सचिव पृथ्वीराज रतनू ने की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि की श्री बालाजी नर्सिंग कॉलेज के प्रबन्ध निदेशक पूसाराम चंदेलिया, वरिष्ठ पत्रकार अनिल लोढ़ा, पूर्व प्रधान पूसाराम गोदारा, राजस्थानी भाषा के वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. भंवर सिंह सामौर थे। मरूदेश संस्थान के अध्यक्ष घनश्याम नाथ कच्छावा ने प्रारम्भ में आयोजकीय पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए कवियों का परिचय प्रस्तुत किया। कवि सम्मेलन का शुभारम्भ फालना की कवयित्री डॉ. कविता किरण ने सरस्वती वंदना 'आई हंसा पे सवार, करने सबदा रो सिणगार, माता सुरसत थ्हानै, नमन हजार' प्रस्तुत कर किया। इसके पश्चात् कोटा के कवि गोरस प्रचण्ड की हास्य व्यंग्य क्षणिकाओं के साथ शृंगार गीत 'थ्हारों कांई कहणों री गौरी काळा तिलवाळी, नीलम धर्‌या रूपाली लागै ज्यूं सूना की थाळी' को दाद मिली। खाजपुर के कवि बी.एल. सावन ने कन्हैयालाल सेठिया के रचना संसार पर गीत 'आवै थ्हारी याद बतावां थानै कैया, सुपनै में एकर तो आवो जी कन्हैया' को करतल ध्वनि से सराहना मिली। विशेष आमंत्रित भीलवाड़ा के वीर रस के प्रसिद्ध कवि योगेन्द्र शर्मा ने श्रोताओं की माँग पर अपनी प्रसिद्ध कविता मंगल पाण्डे का काव्य पाठ किया। सरकारी कायरता पर प्रहार करते हुए उन्होंने कहा 'घाटी में कोहराम मचाया, दुष्टों की बर्बरता ने, बाजू बाँध दिये वीरों के दिल्ली की कायरता ने, आजादी हमको देते तो कब्रिस्तान नहीं होता, सौगन्ध राम की दुनिया में फिर पाकिस्तान नहीं होता 'पर श्रोताओं की करतल ध्वनि से पूरा सभागार गूँज उठा। सवाई माधोपुर से आये देश के चर्चित कवि ताऊ शेखावाटी के अंदाज ने सभागार को ठहाकों से गुंजायमान कर दिया। ताऊ शेखावाटी ने हास्य और व्यंग्य के माध्यम से व्यवस्थाओं पर कटाक्ष करते हुए अपने प्रसिद्ध गीत 'ई मैळे में अपणी-अपणी सभी दुकान लगावै, कुछ रो माल बिके कुछ बैठ्या माखी नित उड़ावै। हेली ! बावली अे ! तू क्यूं झूठो मगंज खपावै' को श्रोताओं ने पसंद किया। वरिष्ठ गीतकार जयपुर के भंवर जी भंवर ने हास्य क्षणिकाओं से लोगों को गुदगुदाते हुए सेठियाजी को समर्पित करते हुए शृंगार गीत 'साजन सावण की सुरंगी आई बहार, पपीहो बोले बाणी रस की। अबतो आगो थारी तीज को त्यौहार आजा रै म्हारी कोनी बस की' ने कवि सम्मेलन को नई ऊँचाईयाँ प्रदान की। कवयित्री डॉ. कविता किरण की ग़ज़ल 'नेणां में चौमासो है तो ई पिण घट प्यासो है, मीठी लागे है निम्बोळी, खारो घणो पतासो है' को सराहना मिली। श्रोताओं की माँग पर डॉ. कविता किरण ने अपने वृद्धाश्रम पर लिखे गीत को सुनाकर खूब दाद पाई। लाडनूँ के हास्य कवि केसर देव प्रजापति ने साधारण विषयों से असाधारण ठहाके लगाते हुए 'ऐ नेताजी, बै नेताजी, प्रेम से बोलो जै नेताजी' के माध्यम से तालियाँ बटोरी। प्रजापति की इन पंक्तियों– 'केस बदळ ले, वेश बदळते, मार मुखौटो फेस बदळते, दिल री, दल री बातां छोडो, बस चाल्या, ए देश बदल दे....' को सराहना मिली। कुम्भलगढ़ से आए राजस्थानी भाषा के वयोवृद्ध गीतकार माधव दरक ने श्रोताओं की माँग पर मोबाइल रिंगटोन फेम अपने गीत – मायड़ थारो वो पूत कठै, वो मेवाड़ी सिरमोर कठै, हल्दी घाटी में समर लड्यो, वो चेतक रो असवार कठै, वो महाराणा प्रताप कठै, मायड़ थारो वो पूत कठै ...' पर खूब तालियाँ बटोरी। कवि सम्मेलन के मंच संचालक नवलगढ़ के युवा कवि हरीश हिन्दुस्तानी ने श्रोताओं को देर रात तक बाँधे रखा। हरीश हिन्दुस्तानी ने अपनी हास्य क्षणिकाओं से श्रोताओं को खूब हँसाया। श्री बालाजी नर्सिंग कॉलेज के निदेशक पूसाराम चंदेलिया ने कार्यक्रम को प्रतिवर्ष आयोजित करवाने का आश्वासन दिया। कवि सम्मेलन के समापन पर अध्यक्ष, अकादमी सचिव पृथ्वीराज रतनू ने सभी का आभार व्यक्त किया।

सम्मान– आगन्तुक अतिथियों व कवियों का सम्मान संस्थान के अध्यक्ष घनश्याम नाथ कच्छावा, सचिव कमल नयन तोषनीवाल, संयोजक रजनीश भोजक, सह संयोजक सुमनेश शर्मा, किशोर सैन, रतनलाल सैन, राजेन्द्र दुबे, श्याम शर्मा, श्रीमती सुशीला चौधरी, श्रीमती ज्योति कच्छावा, पूनमचंद सारस्वत, श्री बालाजी नर्सिंग कॉलेज के प्राचार्य हरिराम बुरड़क प्रदीप रूहेला, सुनीता ढूढारिया आदि ने किया।

अभिनन्दन– कवि सम्मेलन में वरिष्ठ पत्रकार अनिल लोढ़ा, अकादमी के सचिव पृथ्वीराज रतनू, श्री बालाजी नर्सिंग कॉलेज के पूसाराम चंदेलिया, कवि योगेन्द्र शर्मा का शॉल व श्रीफल भेंटकर अभिनंदन किया गया।

–घनश्याम नाथ कच्छावा
लागरेचा बास, सुजानगढ़ (राज.)

शिक्षक की भूमिका एवं सामाजिक कर्तव्य

❑ रेखा शर्मा

जिजीविषा, जिज्ञासा एवं जिगीषा मानव की बुनियादी आवश्यक आधारभूत प्रवृत्तियाँ रही हैं। प्राचीनकाल से ही इन प्रवृत्तियों के परिशोधन में शिक्षक की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। ऋषि-मुनि, राजा-महाराजाओं और सम्पूर्ण समाज का मार्ग-प्रशस्त करने के साथ-साथ शिक्षक की भूमिका भी निभाते थे।

'साकाष्ठा सा परागति' पढ़ाने में शिक्षक को जितना सुख का अनुभव होता है उससे बढ़कर उसे और किसी में हो ही नहीं सकता। गुरु का जीवन सात्विक व आदर्श का प्रतीक होता था। समाज में उनका सर्वत्र सम्मान था। आज नौकर पढ़ा रहे हैं, कैसा सम्मान? सर्व विदित है। अब तो शिक्षक, शिक्षाकर्मी, ठेके के शिक्षक व शिक्षामित्र आदि शब्दों से विभूषित है। न उन्हें बालकों से प्यार है और न शिक्षा से लगाव। पुस्तक पढ़ाने वालों की कोई कमी नहीं है। एक से एक बढ़कर कुशल एवं निष्णात लोग मिल सकते हैं। किन्तु वह शिक्षक दुर्लभ है जो जीवन का पाठ पढ़ाए। गुरु जीवन और जीभ की भाषा का अन्तर समझते थे। जीभ की भाषा कान सुनते हैं और जीवन की जीवन अर्थात् गुरु का आचरण ही सीखने का एक मात्र साधन था। गुरु का प्रमुख उद्देश्य सर्वसुखाय सर्वहिताय होता था। इसीलिए भारत विश्व गुरु कहलाता था। *'समय की रेत पर मधुर चित्र बनाये किसी ने, किसी ने बनाए किसी ने मिटाए'।*

समय परिवर्तन की आँधी ने गुरु की अवधारणा को ध्वस्त कर दिया। मनोविज्ञान की भाषा में गुरु अब Philospher, friend and guide है। Spare the rod. Spoil the child वाली सोच के दिन लद गये। बालक रूपी भगवान को रिझाने के लिए मास्टर-अर्थात् मां के स्तर का प्यार चाहिए।

गिजुभाई ने कहा है– 'प्रभु को पाने के लिए बालक की पूजा कीजिए। स्वर्ग बालक के सुख में है। स्वर्ग बालक के स्वास्थ्य में है। स्वर्ग बालक की प्रसन्नता में है। स्वर्ग बालक के गाने तथा गुनगुनाने में है।'

आज वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विचार करें तो शिक्षक की भूमिका केवल विद्यार्थियों और पाठशाला तक ही सीमित नहीं है विद्यालय समाज का सामुदायिक /सांस्कृतिक केन्द्र है। शिक्षक गाँव में कार्य करने व नेतृत्व प्रदान करने वाला व्यक्तित्व है, बालक, विद्यालय, शिक्षक समाज के सन्दर्भ में सोचे तो आज शिक्षक को कितना अप-टू-डेट व संवेदनशील होना चाहिए। इन परिस्थितियों में शिक्षक की भूमिका सहज नहीं है। शैक्षिक मूल्यों की तुलना में भौतिक मूल्य तेजी से बढ़ रहे हैं, जो क्षणिक हैं। बालक व शिक्षक दोनों जिस समाज में रहते हैं वहाँ का वातावरण कितना विषाक्त है। बालक जो नैतिक मूल्य ग्रहण कर रहे हैं इससे वे न तो चरित्र निर्माण कर सकते हैं और न ही प्रेरणा ग्रहण। नैतिकता केवल दिखाने की वस्तु रह गयी है। किसी ने कितना सटीक कहा है– 'नैतिकता से हमारा इतना नाता है, दीवालों पर लिख देते हैं दिवाली पर पुत जाता है।'

युवा पीढ़ी कुण्ठा से ग्रसित है। उसको अपना भविष्य शुभ नहीं दिख रहा है। चहुँओर बेईमानी, रिश्वत-खोरी, लूट-खसोट व भाई-भतीजावाद आदि का बोल-बाला है। अब तो लोग कहने लगे हैं कि– 'अब तो मास्टर भी ऐसे ही हो गए हैं।' कितनी गहरी मार्मिक चोट है। अर्थात् आधी-अधूरी आस्था भी अब डगमगाने लगी है। शिक्षक आज अनेकों अनचाहे दायित्व-बोझ से अपने को कितना असहाय अनुभव कर रहा है। इन विषम परिस्थितियों में भी न जाने लोग केवल शिक्षक पर क्यों नजर लगाये हुए हैं। कुछ लोग यह भी कहते हैं कि 'अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता' ठीक है भाड़ नहीं फोड़ सकता तो कम से कम झाड़ तो उखाड़ ही सकता है। इसलिए शिक्षकों को संवेदनशील कर्तव्यनिष्ठ व जागरूक होकर सक्रियता से पहल करनी पड़ेगी। इतिहास इस बात का साक्षी है कि– 'जब-जब समाज को आवश्यकता पड़ी है तब-तब शिक्षक ने उसको राह दिखाई है।'

सर्वप्रथम बालक, विद्यालय, समाज और अभिभावक के मध्य समरसता व भावात्मक मधुरता की सहज अनुभूति जागृत करनी पड़ेगी। यह विद्यालय हमारा है। यह समाज व गाँव हमारा है। राष्ट्र प्रेम की स्वस्थ भावना का प्रवाह इकट्ठे हुए समस्त मैल को बहा ले जाएगा। आत्मिक भाव से जब जुड़ाव हो जाता है तो सर्वहिताय की भावना प्रबल हो जाती है। चरित्रवान आदर्श नागरिक निर्माण करना समय की माँग है– परिस्थितियों से पलायन नहीं मुकाबला ही एक विकल्प है। इसके लिए अच्छी आदतों का निर्माण, अच्छे समाज का निर्माण करना होगा। कोरी कल्पना नहीं किन्तु एक सच्ची तस्वीर है।

As the Head Master, so the School.
As the Teacher so the students.

यह कार्य आचरण से स्वप्रेरित होना चाहिए, भाषणों से नहीं। शिक्षक प्रार्थना स्थल पर पंक्तिबद्ध खड़े होंगे तो बालक स्वतः ही वैसा अनुसरण करेगा। यह स्व-अनुभूति सहज स्वीकृति छात्रों की आदत का हिस्सा बन जाएगी। शाला के समस्त कार्यों में अच्छी आदतों का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होगा। शाला कक्षा-कक्षों के जूते लाइन से लगाना, अन्तिम छात्र कक्षा-कक्ष से बाहर आयेगा तो बिजली बन्द करना, पानी पीने के नल बन्द करना आदि अपने कार्य की अनुभूति पैदा करेगा। शिष्टाचार, पारस्परिक वार्तालाप में मधुरता, माता-पिता वृद्ध-जनों का प्रणाम करना, वृद्धजनों और असहाय जनों की सहायता करना, आदि-आदि एक स्वस्थ सामाजिक वातावरण का निर्माण करने में सहायक होगा तो स्वर्ग आकाश में नहीं धरा पर होगा।

सहायक सामग्री का प्रयोग, प्रयोगशालाओं का रखरखाव व व्यावहारिक ज्ञान आवश्यक है। खेलकूद की समुचित व्यवस्था, योगाभ्यास व बालकों के साथ शिक्षकों की सहभागिता बालकों में आत्मविश्वास बढ़ाता है। व्यक्तित्व सन्तुलन में नींव का पत्थर साबित होगा। खाली समय का सदुपयोग करने के लिए अच्छी पुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करना व क्रियात्मक प्रवृत्तियों नृत्य-गायन आदि में रुचि-रुझान बढ़ाना एक सकारात्मक पहल होगी।

आज शारीरिक व मानसिक विकास के

लिए अपार साधन उपलब्ध हैं। बहुत सारी जानकारी छात्रों को पत्रिका, मीडिया, इन्टरनेट आदि से निरन्तर मिलती रहती है।

आज सबसे अधिक चिन्ता का विषय है भावनात्मक विकास की। समाचार पढ़ो/टी.वी. देखो दिल को दहलाने वाली खबर देखने को मिलेगी। आत्मदाह का मानक बढ़ रहा है। बलात्कार की आह, दर्दनाक मौतों की चीखें, विवाह-विच्छेद, माता-पिता की बिना अनुमति के घर से भाग जाना, शादी कर लेना आदि घृणित कृत्यों ने समाज के समस्त ताने-बाने को तार-तार कर दिया है। समरसता में विष घोल दिया है। परिवार के पवित्र रिश्ते चूर-चूर हो गए हैं। भाई-भाई, माता-पिता, मित्र-मित्र दूर के हो गए हैं और गैरों से प्रगाढ़ता बढ़ रही है। भावात्मक शून्यता ही शून्यता न प्यार न अपनापन। बस अगर कुछ रह गया है तो स्वार्थपरता, भौतिकलिप्सा क्योंकि हम Super human बनना चाहते हैं।

"We know how to fly in the sky. We know how to swim in the water but don't know how to live on the earth like a man."

आज हर व्यक्ति अपने बच्चों को डॉक्टर, इंजीनियर व प्रशासनिक अधिकारी बनाना चाहता है, कोई भी अच्छा इन्सान नहीं बनाना चाहता। चाहे अभिभावकों की महत्त्वाकांक्षाओं के बोझ तले मासूम का दम घुट रहा हो।

आज भी समाज में अनुकरणीय आदर्श शिक्षक हैं। जो समाज के लिए पूर्णरूप से समर्पित है व समाज में उनका पूर्ण सम्मान है। समाज उनकी बातों को प्राथमिकता से सुनता है। जब चहुँओर भावात्मक शून्यता व नीरसता से भरा वातावरण है तो सभी की आशा भरी दृष्टि एक शिक्षक की ओर जाती है। इसलिए शिक्षक को भी समाज के नजरिए से शुभ चिन्तन करना होगा।

'सोच बदलेगी तो सितारे बदल जाएंगे।/नजर बदलेगी तो नजारे बदल जाएंगे॥/आदत बदलेगी तो जीवन बदल जायेगा।/जीवन बदल जायेगा तो देश बदल जायेगा॥'

–अध्यापिका
रा.उ.प्रा.वि. नोंह, भरतपुर

19 वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस

27-31 दिसम्बर, 2011, जयपुर

माननीय मुख्यमंत्री महोदय जी, की बजट घोषणा संख्या-156 के अनुसार राज्य में पहली बार 19 वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन दिनांक 27 से 31 दिसम्बर, 2011 तक राज्य का विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, एन.सी.एस.सी. नेटवर्क नई दिल्ली के समन्वय में जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जगतपुरा में किया जा रहा है।

इस कार्यक्रम में सम्पूर्ण देश से लगभग 1500 बाल वैज्ञानिक, अध्यापक राज्य समन्वयक एवं देश-विदेश के वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। 19वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के मुख्य विषय 'भूमि संसाधन : समृद्धि के हेतु उपयोग करें, भविष्य के लिए बचाएं' पर लगभग 600 शोध पत्र 15 भारतीय भाषाओं में प्रस्तुत किये जाएंगे।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण, 'वैज्ञानिकों से वार्ता' होगा– विद्यार्थी देश विदेश से आये वैज्ञानिकों के अनुभव व विज्ञान पर वार्ता का लाभ उठा सकेंगे। विभाग का प्रयास है कि इसका लाभ राज्य के दूर-दराजों स्थानों पर अध्ययनरत विद्यार्थी भी प्राप्त कर सकें। इसके लिए विभाग द्वारा स्थापित दूर संचार प्रणाली 'सेटकॉम' का उपयोग किया जाएगा।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत, जयपुर स्थित सैटकॉम स्टूडियो में उपस्थित वैज्ञानिक, राज्य के 237 पंचायत समितियों तथा 32 जिलों में स्थापित दूर संचार टर्मिनल के माध्यम से राज्य के दूर-दराज क्षेत्रों के छात्र-छात्राओं से भी परस्पर वार्तालाप कर सकेंगे। यह कार्यक्रम दिनांक 27, 28 एवं 29 दिसम्बर, 2011 को प्रतिदिन आयोजित किया जायेगा। जिसकी सूचना सभी पंचायत समितियों पर जिला शिक्षा अधिकारी के माध्यम से विद्यालयों तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है।

राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में भाग लेने हेतु चयन के लिए राज्य का विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, जिला स्तरीय एवं राज्य स्तरीय बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन कर रहा है, जिसमें 10-17 वर्ष के बालक भाग ले सकते हैं। इसके लिए विद्यार्थी प्रथमतय अपने मार्गदर्शक शिक्षक की देखरेख में मुख्य विषय 'भूमि संसाधनः समृद्धि के हेतु उपयोग करें, भविष्य के लिए बचायें एवं उपविषय अपनी भूमि को जाने, भूमि का कार्य, भूमि की गुणवत्ता, भूमि पर मानवीय क्रिया-कलाप, भूमि संसाधन का टिकाऊ उपयोग, भूमि उपयोग पर सामुदायिक-ज्ञान' विषयों पर परियोजना प्रतिवेदन प्रस्तुत करेंगे। प्रत्येक जिले से चयनित परियोजना का प्रस्तुतीकरण राज्यस्तरीय बाल विज्ञान कांग्रेस में किया जायेगा। यह आयोजन क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर द्वारा दिसम्बर, 2011 के प्रथम सप्ताह में किया जावेगा। राज्य स्तर पर प्रस्तुत 30 श्रेष्ठ परियोजनाओं का चयन राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की जा रही, 19 वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस में प्रस्तुतिकरण हेतु किया जायेगा।

19 वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस 27-31 दिसम्बर, 2011

मुख्य विषय

भूमि संसाधन : समृद्धि हेतु उपयोग करें, भविष्य के लिए बचाएं।

प्रतिनिधित्व

700 बाल वैज्ञानिक, 300 मार्गदर्शक अध्यापक, 100 वैज्ञानिक, 40 बाल वैज्ञानिक ऐशियान, 50 संदर्भ व्यक्ति, 80 नेटवर्क सदस्य

मुख्य आकर्षण

तकनीकी सत्र, गतिविधि कॉनर, वैज्ञानिकों से रूबरू, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, वैज्ञानिक प्रदर्शनी, सांस्कृतिक कार्यक्रम

राष्ट्रीय आयोजक : एन.सी.एस.टी.सी., नेटवर्क नई दिल्ली

आयोजक : विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, राजस्थान सरकार, जयपुर

सह आयोजक : जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर

उत्प्रेरक एवं सहयोगी

आर.वी.पी.एस.पी., विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार

आयोजन स्थल

जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जगतपुरा, जयपुर

क्या आप अभिभावक होने का फर्ज निभा रहे हैं ?

❑ हरीश चन्द्र चौबीसा, लक्ष्मीनारायण चौबीसा

माँ मुझे अकेला मत छोड़ो, मुझे अच्छा नहीं लगता,/पापा मुझे प्यार क्यों नहीं करते हैं, मुझे आपकी बहुत याद आती है।/मैं कुछ करना चाहती हूँ, लेकिन अकेली पाकर खामोश हो जाती हूँ ...../मैं आपके साथ खेलना चाहती हूँ घूमना चाहती हूँ/पापा प्लीज मुझे अकेला मत छोड़ो .....

शायद ये पंक्तियाँ आज हमें एक बच्ची के दर्द भरे अनुभव का एहसास करा रही है। आज वह अपने अभिभावक के होते हुए भी अपने आप को अकेला व बेसहारा महसूस कर रही है। वह अपने आप में खोई रहती है। उसको ये दुनिया अच्छी नहीं लग रही है। ये सारे एक बच्ची के मासूमियत भरे सवाल हमारी भारतीय सभ्यता व संस्कृति की पारिवारिक पृष्ठभूमि पर एक यक्ष प्रश्न चिह्न खड़ा कर दिया है कि आज की इस भागदौड़ की जिन्दगी में संस्कारों को मजबूत बनाने वाले अभिभावक क्या अपने बच्चों के सर्वांगीण विकास के प्रति सावचेत हैं? क्या उनकी भावनाओं का सम्मान हो रहा है ? क्या आपकी बच्चों से दूरी उनके विकास में बाधक बन रही हैं? बच्चों की उपलब्धि हेतु आप क्या कर रहे हैं? क्या बच्चा अपने को अकेला पाकर तनावग्रस्त हो जाता है? ये सारे यक्ष प्रश्न हमारे सामने एक बार पुनः एक आदर्श अभिभावक होने के नाते अपने बच्चों के प्रति चिन्तन मनन करने के लिए प्रेरित करते हैं, कि हम अपने बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए सतत प्रयत्नशील बने रहें, जिससे उनका भविष्य भारतीय सभ्यता व संस्कृति के इतिहास पर स्वर्णिम बना रहे अतः एक आदर्श अभिभावक होने के नाते हमें सकारात्मक सोच के साथ उनको आगे बढ़ाना चाहिए। इसके लिए हम निम्न प्रयास कर सकते हैं–

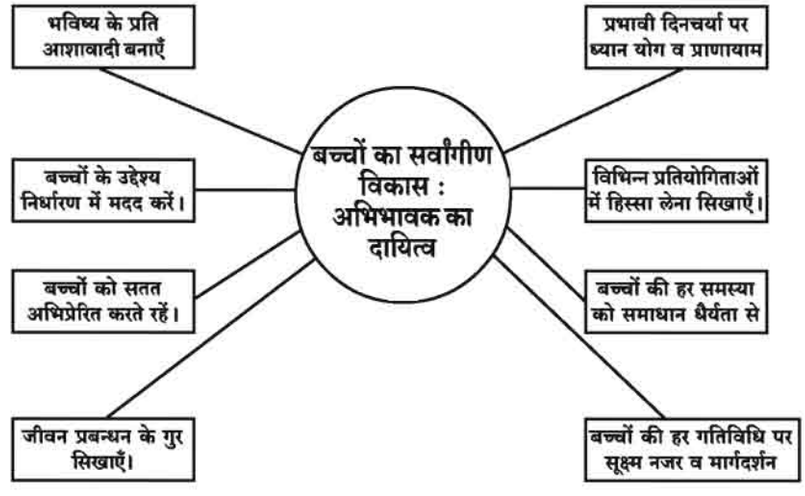

1. भविष्य के प्रति आशावादी बनाएँ– बच्चा जिस परिवेश में रहता है उस परिवेश का प्रभाव उस पर जरूर पड़ता है। घर के सदस्यों का सकारात्मक वातावरण बच्चों को हमेशा ऊर्जावान बनाएँ रखता है। अभिभावकों को व्यस्ततम समय में भी बच्चों में समय-समय पर मार्गदर्शन प्रदान करते रहें सफलता व असफलता जीवन का एक हिस्सा है। कई बार एक-दो असफलताओं से बच्चा तनावग्रस्त हो जाता है। इससे उसके व्यक्तित्व विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इसलिए बच्चों को ऐतिहासिक महापुरुषों का आदर्श उदाहरण देकर उनको भविष्य के प्रति आशावादी बनावें जिससे बच्चा आनन्दमय रहेगा।

2. बच्चों के उद्देश्य निर्धारण में मदद करें– जिस व्यक्ति के जीवन में उद्देश्य नहीं है, उस व्यक्ति का वास्तविक जीवन अन्ततः अन्धकारमय ही होगा, जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए पूर्व में उद्देश्यों का निर्धारण नितान्त आवश्यक है। अभिभावकों का यह परम दायित्व बनता है कि प्रारम्भ से ही बच्चों की जिज्ञासाओं को समझें एवं उन जिज्ञासाओं के अनुरूप उनके भावी जीवन के उद्देश्यों के निर्धारण करने में मदद करें, इससे बच्चा सतत प्रगति करता रहेगा। अपनी आकांक्षित इच्छाओं को उनके लिए उद्देश्य निर्धारण में बाधा नहीं बनने दें।

3. बच्चों को सतत अभिप्रेरित करें– बच्चों का दृष्टिकोण व्यापक बनाने के लिए आवश्यक है, कि माता-पिता उसे समय-समय पर सतत अभिप्रेरित करते रहें, उसके अच्छे कार्य की हमेशा प्रशंसा करनी चाहिए इससे उसके मनोबल के साथ-साथ उसकी सृजनात्मकता का भी सतत विकास होगा, उस पर किसी कार्य को करने के लिए दबाव न डाला जाए। बच्चों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति ही उसकी सफलता की सूचक है।

4. जीवन-प्रबन्धन के गुर सिखाएँ– यदि जिन्दगी को जिन्दादिली से न जिया जाए तो जीवन ही क्या है। वस्तुतः प्रारम्भ से ही अभिभावक अपने बच्चों को जीवन प्रबन्धन की सूक्ष्म तकनीक सिखाएं, जीवन का प्रत्येक क्षण मूल्यवान होता है, बच्चों को जीवन में क्या करना है? क्यों करना है? कैसे करना है? कार्य का व्यवस्थित प्रबन्धन कैसे करें? सूक्ष्म से सूक्ष्म

पहलुओं को रिक्त समय में आत्मीयता के साथ समझाएँ, इससे बच्चा विपरीत परिस्थितियों में भी ऊर्जावान बना रहेगा।

5. बच्चों की हर गतिविधि पर सूक्ष्म नजर रखें– वर्तमान समय में पाश्चात्य जीवन शैली बच्चों को बहुत आकर्षित कर रही है, इसका कहीं दुष्प्रभाव अपने बच्चों पर न पड़े, एक आदर्श अभिभावक होने के नाते हमारा दायित्व बनता है कि बच्चों के दोस्त कैसे हैं? उनकी संगति कैसी हैं? कम्प्यूटर व मीडिया तकनीक में किस तरह रुचि रखता है? सही व गलत क्या है? आदि उसके जीवन से जुड़ी सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों पर ध्यान देकर उसे हमेशा निर्देशित करें।

6. प्रभावी दिनचर्या पर ध्यान– बच्चों को यदि हमेशा स्वस्थ, स्फूर्तिमय व ताजगी भरा वातावरण प्रदान करना है तो उसकी प्रभावी दिनचर्या पर आप ध्यान देवें, बच्चों को योग, प्राणायाम करवाएं, स्वास्थ्य के प्रति सावचेत रहें। बच्चों की दिनभर की गतिविधियों को व्यवस्थित समय-चक्र बनाकर उसे उसी अनुरूप जीवन से आत्मसात कराने का प्रयास करें, इससे बालक अपने समस्त कार्यों के प्रति सजग रहेगा एवं तनावमुक्त होकर आनन्द का अनुभव करेगा।

7. विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेना सिखाएँ– बालक के व्यक्तित्व की प्रथम पाठशाला परिवार व दूसरी विद्यालय का आँगन है। अभिभावक अपने बच्चों को विद्यालय की प्रत्येक गतिविधि में सहभागिता प्रदान करने हेतु प्रेरित करें। जिससे बालक अपनी अभिव्यक्ति करने में सक्षम बन सके, बालक की प्रभावी अभिव्यक्ति ही उसके व्यक्तित्व का आईना होता है।

8. बालक की प्रत्येक समस्या का समाधान धैर्यता से– बालक यदि आपके पास किसी समस्या को लेकर प्रस्तुत होता है, तो आपके अभिभावक होने के नाते दायित्व बनता है कि उसकी समस्या को पूर्ण आत्मीयता के साथ सुनें एवं समाधान प्रस्तुत करें, न कि आप अपने किसी कार्य से तनाव में होने से उसको डाँट लगाएँ, क्योंकि यदि आप अपने बच्चों की भावनाओं का सम्मान नहीं करेंगे तो वह हमेशा के लिए आपसे दूरी बनाएँ रखेगा अतः बच्चों की बात को धैर्यता से सुनें व समस्या का समाधान प्रस्तुत करें तथा बालक को स्वस्थ मनोरंजक वातावरण प्रदान करें।

उपसंहार– उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम यही कह सकते हैं, कि 'बालक का सर्वांगीण विकास करना है तो एक आदर्श अभिभावक होने के नाते बच्चों की भावनाओं का हमें सम्मान करना होगा, उनकी रचनात्मकता को बढ़ावा देना होगा तथा उनके प्रत्येक मासूमियत भरे सवालों व जिज्ञासाओं का समाधान पूर्ण आत्मीयता व धीरता के साथ करना होगा जिससे बालक स्वयं अपने आपको अभिभावक के समीप पाए जिससे वह विश्व के किसी भी ऐतिहासिक मंच से यह बात गर्व से कह सके कि "My Parents is God" मेरे माता-पिता मेरे जीवन में भगवान हैं तथा मैं माता-पिता के चरणों में जन्नत महसूस करता हूँ।

–सहायक आचार्य
लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय
(सी.टी.ई.), डबोक, उदयपुर (राज.)

रपट

राजस्थानी भाषा सेवा सम्मान से

प्रो. भंवर सिंह सामौर सम्मानित

मरुप्रदेश संस्थान द्वारा स्थापित पद्मश्री कन्हैयालाल सेठिया राजस्थानी भाषा सेवा सम्मान राजस्थानी भाषा के मर्मज्ञ प्रो. भंवर सिंह सामौर को प्रदान किया गया। दी यंग्स क्लब ट्रस्ट सभागार में राजस्थान सरकार के शिक्षा, श्रम व रोजगार मंत्री मास्टर भंवरलाल मेघवाल के मुख्य आतिथ्य में आयोजित सम्मान समारोह में प्रो. सामौर को शिक्षामंत्री ने शॉल ओढ़ाकर, मान पत्र व स्मृति चिह्न प्रदत्त कर सम्मानित किया। अपने सम्मान से अभिभूत प्रो. भंवर सिंह सामौर ने कहा कि महाकवि कन्हैयालाल सेठिया की जन्म भूमि पर मुझे सम्मानित करना मेरे लिए जीवन का महत्वपूर्ण क्षण है। सामौर ने कहा कि राजस्थानी भाषा का शब्द कोश विलक्षण है राजस्थानी में एक-एक शब्द के सौ-सौ पर्यायवाची है। उन्होंने उदाहरणों के साथ प्रशंसनीय व्याख्या की। वरिष्ठ पत्रकार अनिल लोढ़ा ने कहा कि सेठियाजी राजस्थान का ही नहीं सम्पूर्ण भारत का गौरव है। उन्होंने कहा कि सुजानगढ़ के लोग भाग्यशाली है कि इस धरती पर सेठियाजी जैसा महापुरुष पैदा हुआ। उन्होंने मंच से शिक्षामंत्री के माध्यम से राज्य सरकार से जयपुर में कन्हैयालाल सेठिया के नाम से सड़क मार्ग का नामकरण एवम् सुजानगढ़ में राजस्थानी भाषा भवन के निर्माण की माँग की। शिक्षा मंत्री मास्टर भंवर लाल मेघवाल ने कहा कि सेठियाजी की अमर रचनाएं युगों-युगों तक आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देगी। शिक्षा मंत्री ने मरूदेश संस्थान को धन्यवाद दिया कि वे प्रतिवर्ष सेठियाजी की स्मृति में पुरस्कार प्रदान कर सेठियाजी की परम्परा को आगे बढ़ाने में प्रयासरत है। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार ने शिक्षा का अधिकार कानून में एक से आठवीं कक्षा तक शिक्षा मातृ भाषा में प्रदान करने का प्रशंसनीय निर्णय लिया है। शिक्षा मंत्री ने सेठियाजी की स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए जयपुर में एक सड़क मार्ग नामकरण और सुजानगढ़ में भवन के लिए मुख्यमंत्री से चर्चा करने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर पूर्व प्रधान व जिप सदस्य पूसाराम गोदारा, बालाजी नर्सिंग इंस्टीट्यूट के प्रबन्ध निदेशक पूसाराम चंदेलिया आदि उपस्थित थे। समारोह का संचालन मरूदेश संस्थान के अध्यक्ष घनश्याम नाथ कच्छावा ने किया। इस अवसर पर मंच से राजस्थानी एशोसिएशन ऑफ नॉर्थ अमेरिका राना द्वारा कन्हैयालाल सेठिया की स्मृति में प्रतिवर्ष एक लाख रुपये का पुरस्कार दिये जाने के निर्णय का स्वागत किया गया। राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के सचिव पृथ्वीराज रतनू ने मान पत्र का वाचन किया।

– पृथ्वीराज रतनू
सचिव, राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर

एड्स एक महादानव

❑ सम्पत लाल शर्मा 'सागर'

वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति के साथ-साथ आवागमन एवं दूर-संचार के माध्यमों में असाधारण वृद्धि हुई। इस प्रगति के साथ-साथ संस्कारों और मानवीय मूल्यों का ह्रास भी हुआ। परिणामस्वरूप समाज में अपराधों की बाढ़ सी आ गई। भौतिक सुख-सुविधाओं के साथ मनुष्य में पद, प्रतिष्ठा व धन की पिपासा जाग उठी है। सचमुच इस बढ़ती धन-लिप्सा ने न जाने कितने लोगों को गंभीर अपराधों के गर्त में धकेला है और कितनों के घर-परिवार जगमगाहटों की दुनिया में उन्हीं की चिनगारियों से जल चुके हैं। किसी शायर ने कहा है– *'इस शहर में जो रोशनी लाये होंगे/उन चिरागों ने कुछ घर भी जलायें होंगे।'*

आज के युवक-युवतियों में 'प्रेम' की आंतरिक भावना के स्थान पर प्रेमिका-प्रेमी के शारीरिक सौष्ठव ने अधिक लुभाया और ललचाया है। नैतिकता, आस्तिकता, त्याग, परोपकार, सत्य, सहिष्णुता, सादगी, सहयोग, अहिंसा आदि ऐसी बातें उन्हें बीते युग और बूढ़ी मानसिकता की प्रतीक लग रही है। फलस्वरूप युवक-युवतियों में यौन अपराधों का ग्राफ दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इन यौन अपराधों ने लाइलाज बीमारी एड्स को जन्म दिया है।

एड्स एक यौन संक्रमित रोग है। इसे अंग्रेजी में Acyuired Immuno Deficiency Syndrome (एक्वायर्ड इम्यूनो डिफिशिएन्सी सिण्ड्रोम) कहते हैं तथा हिन्दी में इसका पूरा नाम– उपार्जित प्रतिरक्षा अपूर्णता संलक्षण है। यह एक प्रकार के एच.आई.वी. (ह्यूमन इम्यूनो डेफिशिएन्सी वाइरस) नामक विषाणु से हमारे शरीर में फैलता है।

ऐसा माना जाता है कि यह दक्षिण अफ्रीकी बंदर ग्रीन मोंकीज (बंदर Rahces) में पाया जाता था। यह रोग ग्रीन मोंकीज में सुप्त अवस्था में रहता है। ऐसा ज्ञात हुआ कि मनुष्य के द्वारा इस ग्रीन मोंकीज के साथ शारीरिक सम्बन्ध स्थापित किया जाना तथा उसका कच्चा मांस खाने से इस रोग को मनुष्य ने ग्रहण किया। ऐसा भी ज्ञात हुआ है कि यह रोग सबसे पहले हॉलैण्ड के एक फिल्मी अभिनेता को हुआ। बहुत इलाज कराने के बाद वह ठीक नहीं हुआ तो खून की जाँच में ज्ञात हुआ कि यह रोग लाइलाज एड्स रोग है। यह रोग शरीर के सूचना तंत्र की प्रमुख कोशिकाओं लिम्फोसाइट्स टी-4 तथा टी-एच को खत्म कर देता है।

एक अनुमान के अनुसार विश्व में प्रतिदिन 8000 व्यक्ति एच.आई.वी. संक्रमण प्राप्त कर लेते हैं। इनमें से 80% व्यक्ति 15-25 आयु वर्ग के होते हैं। ज्ञातव्य है कि भारत में एड्स का प्रथम रोगी 1986 में मद्रास में पाया गया। डॉ. सुनीती सोलोमन द्वारा मद्रास की कुछ वेश्याओं में इस रोग की पुष्टि की गई। डॉ. सोलोमन ने कड़ी मेहनत करके मद्रास व देश में फैल रहे एड्स की जानकारी दुनिया को प्रदान की। राजस्थान में एड्स का पहला रोगी 1987 में पुष्कर (अजमेर) में पाया गया।

जून 1992 में स्वास्थ्य मंत्रालय भारत सरकार के आकलन के अनुसार एचआईवी से संक्रमित व्यक्तियों की संख्या 10 लाख थी। तब से वर्तमान समय तक भारत में 51 लाख से अधिक एड्स रोगी हो चुके हैं। अकेले उत्तर प्रदेश में लगभग 70,000 से अधिक एड्स रोगी हैं। भारत के अतिरिक्त विश्व में कई देशों में एड्स का प्रभाव दिनों-दिन बढ़ता चला जा रहा है। सबसे अधिक बोत्सवाना, लेसोथो, नामीबिया, दक्षिणी-अफ्रीका, स्विटजरलैण्ड और जिम्बावे सबसे अधिक एड्स प्रभावित देश हैं। कुछ देशों में एड्स रोगियों के अनुमानित आंकड़े निम्न हैं–

देश	रोगियों की संख्या
यूरोप	7.6 लाख
पूर्वी एशिया	8.7 लाख
लातिनी अमेरिका	18 लाख
अफ्रीका	2.5 करोड़
ओशियानिका	75 हजार
कैरेबियन	2.3 लाख
द. और द.पू. एशिया	40 लाख

इस रोग के लक्षण धीरे-धीरे दिखाई देने लगते हैं जिसमें लगातार ज्वर रहना, लगातार दस्ते लगे रहना, सिर दर्द, उल्टी व घबराहट, गुप्तांगों में जलन व दाने, लगातार खांसी रहना, शरीर के सम्पूर्ण भागों में दाने होना, शीघ्र थकान होना, एड्स मानव शरीर के रोगों से लड़ने की क्षमता समाप्त कर सम्पूर्ण शरीर को रोग ग्रस्त बना देता है।

एच.आई.वी. परीक्षण के परिणाम संक्रमण प्राप्त कर लेने के लगभग 3 माह पश्चात् दृष्टिगोचर होते हैं। इस समयावधि को 'विण्डो पीरियड' कहते हैं। हमारे देश में इसके परीक्षण हेतु 'एलिसा टेस्ट' तथा 'वेस्टर्न ब्लॉट टेस्ट' उपलब्ध है। परीक्षण की आधुनिकतम विधि 'पॉलीमरेज चेन रिएक्शन' (पी.सी.आर.) है जो एचआई वायरस की उपस्थिति का पता लगाता है। ये परीक्षण अधिक विश्वसनीय तथा शीघ्र परिणाम कारक है–

अज्ञानता के चलते एड्स फैलने के भ्रम से मनुष्य मनुष्य से दूर भागने लगता है। वह अपनों को ही दुश्मन मानने लगता है। परन्तु एड्स रोगी से घबराने की जरूरत नहीं है। यह रोग संक्रमित व्यक्ति को छूने, हाथ मिलाने या साथ बैठने व भोजन करने से, मच्छर या खटमल के काटने से, एक-दूसरे के कपड़ों का प्रयोग करने, एक स्नानाघर के प्रयोग से नहीं फैलता है। बल्कि निम्न कारणों से यह रोग फैलता है– (i) संक्रमित व्यक्ति के साथ असुरक्षित यौन समागम। (ii) संक्रमित सुई के इस्तेमाल से। (iii) संक्रमित रक्त चढ़ाने से। (iv) संक्रमित माता से शिशु को। (v) संक्रमित हुई सेविंग ब्लैड से।

आज के हाईटेक युग में एड्स रोगी होना बहुत आसान हो गया है। भारत के सीमान्त क्षेत्रों में एड्स रोग तेजी से अपने पाँव पसार रहा है। आतंकवादियों ने भारत की सीमाओं पर एड्स रोग से युक्त सुन्दर महिलाओं को हथियार के रूप में प्रयोग कर रखा है।

एड्स एक ऐसा रोग है जिसकी जानकारी ही इसका बचाव है फिर भी इस रोग से बचाव हेतु निम्नांकित प्रयास अपेक्षित है– (1) शिक्षा का प्रसार हो ताकि लोगों में यौन संक्रमित रोगों व एड्स के प्रति जागरूकता उत्पन्न हो। (2) एचआईवी मुक्त रक्त ही चढ़वाना चाहिए। (3) डिस्पोजेबल सिरिंज का प्रयोग करना चाहिए। यदि ऐसा संभव न हो तो सुई को ब्लीच घोल से साफ करना चाहिए। इससे एच.आई.वी. नष्ट हो जाते हैं। (4) असुरक्षित एवं अवांछनीय यौन सम्बन्धों से बचना चाहिए या कण्डोम का प्रयोग करना चाहिए। (5) गर्भावस्था में एचआईवी परीक्षण करवाना चाहिए। (6) नशा मुक्ति अभियान चलाया जाना चाहिए क्योंकि सुई से नशा लेने वालों में इस रोग के प्रसार की आशंका रहती है। (7) रोग को नियंत्रण में रखने हेतु एन्टीरेट्रोवाइरल औषधियों का उपयोग करना चाहिए।

–रा.उ.प्रा.वि. सोनियाना
पो. गिलूण्ड, राजसमन्द

शिक्षक दिवस प्रकाशन

सन् 1967 से शिक्षा विभाग राजस्थान द्वारा 'शिक्षक दिवस प्रकाशन' योजना संचालित की जा रही है। इस योजना के अन्तर्गत शिक्षा विभाग के शिक्षक व कर्मचारी साहित्यकारों की विभिन्न विधाओं की रचनाओं को पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया जाता है। इससे रचनाकार अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति से राज्य एवं राष्ट्रीय साहित्य मंच की दिशा में प्रेरित होते हैं। राष्ट्रीय स्तर के साथ लब्धप्रतिष्ठित साहित्यकारों द्वारा शिक्षक दिवस प्रकाशन की पुस्तकों में लिखी गई भूमिकाओं व संपादन कौशल से उन्हें प्रेरणा प्राप्त होती है। अब तक शिक्षा विभाग इस योजनान्तर्गत 2011 तक 226 पुस्तकों का प्रकाशन कर चुका है। इस वर्ष प्रकाशित पुस्तकों की समीक्षाएं प्रस्तुत हैं।

संवेदना के स्वर : *सम्पादक : श्याम महर्षि; माध्यमिक शिक्षा राज., बीकानेर के लिए सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर; संस्करण : शिक्षक दिवस 2011; पृष्ठ : 160; मूल्य : 57 रुपए।*

शिक्षक व्यक्ति को अज्ञान के अंधकार से बाहर निकाल कर सुसंस्कृत बनाता है तो कविता उसके मन को परिष्कृत कर संस्कारित करती है। इस लिहाज से कविता व अध्यापन, दोनों का उद्देश्य समाज को विकृतियों से बचाकर और बेहतर बनाना है। अगर समाज का भविष्य गढ़ने वाले शिक्षक कवि-हृदय हों, तो इसे सोने में सुहागा ही कहा जाएगा। उल्लेखनीय है कि शब्दों की दुनिया को भरी-पूरी बनाने वाले नामी लोगों में बड़ी संख्या शिक्षकों की है। साहित्य के समकालीन परिदृश्य में भी शिक्षक रचनाकार अपने अध्यापन-कर्म के साथ निष्ठापूर्वक शब्द-साधना में जुटे हुए हैं। प्रदेश के शिक्षक जगत के काव्यात्मक सरोकारों से साक्षात् करवाते काव्य संकलन 'संवेदना के स्वर' से गुजरने के बाद यह धारणा और पुष्ट हो जाती है। राजस्थान के माध्यमिक शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षक दिवस प्रकाशन योजना के अंतर्गत प्रकाशित इस संग्रह का संपादन श्याम महर्षि ने किया है। यह सुखद है कि विभाग 1967 से लगातार इस योजना को चला रहा है।

'संवेदना के स्वर' काव्य संकलन के संपादक श्याम महर्षि प्रतिष्ठित कवि हैं वहीं संपादक के रूप में भी उनकी विशेष ख्याति है। वे गत तीन दशकों से त्रैमासिक पत्रिका 'राजस्थली' का संपादन कर रहे हैं। इस संग्रह में भी उन्होंने उपलब्ध रचनाओं की सीमा के बावजूद अपने संपादन-कौशल से शिक्षा जगत के कवियों की संवेदना के स्वर को सार्थक रूप देने का प्रयास किया है। कविता, गज़ल, गीत व विविध शीर्षक से चार खण्डों में बँटे आलोच्य संग्रह में प्रदेश के विभिन्न अंचलों से जुड़े कुल 123 कवियों की रचनाएँ हैं। संग्रह में शामिल अनेक कवि ऐसे हैं, जो अपनी रचनात्मकता के बलबूते राज्य व राष्ट्र स्तर पर विशेष पहचान रखते हैं। इसके साथ ही काव्य-पथ पर अभी-अभी निकले नए कवियों की भी एक पूरी तादाद ने इस संकलन में जगह पाई है, जिनको विषय व विन्यास के स्तर पर अभी एक लम्बी साधना करनी है। यही वजह है कि किताब में सशक्त व स्तरीय कविताओं के साथ कच्ची व कमजोर कविताएँ भी गैरमौजूद नहीं है, इसके बावजूद रचनाओं का व्यापक फलक कवियों के विस्तृत अनुभव जगत की साख भरता है। इन कविताओं में उच्च मानवीय मूल्यों, सघन सामाजिक सरोकारों, सतरंगी प्रकृति, पर्यावरणीय चिन्ता, व्यवस्था की विसंगतियों के साथ कवि मन के ओनों-कोनों की बहुवर्णी अभिव्यक्ति हुई है।

कविताओं के कथ्य के बारे में क्रमवार बात करें तो माँ-बेटी व औरत पर केन्द्रित एक दर्जन से अधिक कविताएँ इस संग्रह में मौजूद है। यहाँ जीवन के विविध क्षेत्रों में बेटियों की कामयाबी के लहराते परचम हैं तो औरत के अंतहीन संघर्षों के मार्मिक चित्र भी हैं। इनमें ममता के आँचल की शीतल छाया के साथ पुरुषों की तुलना में महिलाओं के घटते अनुपात की चिन्ता भी प्रकट हुई है।

प्रकृति के विविध रूप युगों से कवियों को आकर्षित करते रहे हैं। कविवर सुमित्रानंदन पंत तो बाला के 'रूप जाल' में लोचन उलझाने से अधिक प्राथमिकता 'द्रुमों की मृदु छाया' को देते हैं। आलोच्य संग्रह में भी ऐसी कविताओं की संख्या दहाई के पार हैं, जिनमें बहुरंगी प्रकृति की मनमोहक छटाओं के दर्शन होते हैं। बढ़ते प्रदूषण से पर्यावरण को हो रही क्षति से भी कवि अनजान नहीं हैं तथा उनकी रचनाओं में पर्यावरणीय चिन्ताओं की भी मुखर अभिव्यक्ति हुई है। यहाँ 'कभी-कभी जंगल का सारा परिदृश्य/भारी-भरकम रूपहली लोई ओढ़े/अंधेरे और उजाले में/समान रूप से/चमकता-दमकता' (जंगल : पुष्पलता कश्यप) दिखाई देता है तो कहीं कवि 'पेड़ पर लटकती डाली पर बैठी/गीत गाती चिड़िया की चीं चीं में/जीवन का स्पंदन' (जीवन स्पंदन : रमेश मयंक) सुनता है। इन कविताओं में नाचती-फुदकती, धूल में स्नान करती चिड़ियों के दर्शन के बाद कवयित्री आग्रह करती है कि 'नाचिए-कूदिए/इनके साथ/फिर बताइए/जमाने के उन तमाम/दुःखी प्राणियों को/कि खुशी इन चिड़ियों का नाम है।' (चिड़ियों का नाम है खुशी : कृष्णा कुमारी) वरिष्ठ कवि निशांत तो बसंत के रंगों से नई-नवेली के रंगों की तुलना करते हुए 'सपनों के रंगों' तक जा पहुँचते हैं। सचमुच हमारी श्वेत-श्याम जिन्दगी में प्रकृति और सपने ही तो रंग भरते हैं।

आज के अर्थ केन्द्रित समय में व्यक्ति के सरोकारों का दायरा सीमित हुआ। व्यवस्था की विसंगतियों- विद्रूपताओं, गरीबी, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, जाति-वर्ग भेद जैसी चुनौतियों ने जीवन को मुश्किल बना दिया है। आलोच्य काव्य संकलन में सामाजिक अंतरंगता के विश्वसनीय चित्रों के साथ युग-यथार्थ का ईमानदार अंकन हुआ है। मसलन वरिष्ठ कवि ओम पुरोहित 'कागद' पूछते हैं– 'सवाल तो/और भी हैं/फिलहाल/इसी का चाहिए/हमें जवाब;/पेट भरने के बाद भी/क्यों चाहिए तुम्हें/दुनिया की दौलत सारी?' (नत्थू के दो सवाल) श्याम सुंदर भारती सत्ता के दोगले चरित्र पर चोट करते हुए कहते हैं– 'जब सियासत ही खुद बिकाउ थी/फिर बेचारे दलाल क्या करते' (गज़ल)। सत्यनारायण 'सत्य' की ख्वाहिश है कि 'काश ! रोटी भी घूमती/गोल पृथ्वी की तरह/और बना देती दिन के रात, रात के दिन' (रोटी बनाम दुनिया) वहीं मोनिका गौड़ रिश्तों को छोटे बच्चों के समान बताते हुए कहती हैं– 'जिन्हें संभालना पड़ता है/अपना सब कुछ देकर।' (रिश्ते जो बच्चे हैं) आर्थिक विषमता के इस दौर में दीनदयाल शर्मा आलीशान कोठियों के बीच अपने छोटे से घर को 'नन्हा मासूम-सा/सिर कुचरता/आसमान झांकता/अपने हिस्से की/धूप तलाशता' (मेरा घर) पाते हैं तो भगवती प्रसाद गौतम सवाल करते हैं– 'बोलो धरा-/ किसकी लगी नजर/इस मन-मोहक रूप-स्वरूप पर?' (बोलो धरा)

शब्द और कविता को लेकर नई कविताएँ इस काव्य-संकलन का हिस्सा बनी हैं। इसमें शब्द (श्याम मनोहर व्यास), शब्द प्रवाह (रामजीलाल घोड़ेला), शब्द जाल (प्रभजोत कौर) आदि को लिया जा सकता है।

किताब में ऐसी कविताओं की भी कमी नहीं हैं, जिनमें थोथे आदर्शों का बखान हैं, कोरी सपाटबयानी हैं, तनावहीन नीरस गद्य है अथवा अनुभवों की आँच से रहित मात्र शब्दों की तुकबंदी है। उनमें कविता के नाम पर सामान्य प्रतिक्रिया को परोसा गया है। उपदेश की प्रवृत्ति भी कई रचनाओं को असरहीन बना देती है। ऐसे कवियों को संवेदना के मर्म को पकड़ने के लिए साधना करने की जरूरत तो है ही, समकालीन कविता के मिजाज को समझने के लिए पढ़ने की प्रवृत्ति को भी अंगीकार करना होगा। भाषा व शिल्प के स्तर पर भी कई कविताओं को माँजने की आवश्यकता नजर आती है। यह जरूरी है कि शिक्षक रचनाकार अपने अंदर के आलोचक को जगाएँ ताकि अपने सृजन को आलोचना की आँख से देखकर उसे सार्थक रूप दे सकें। आलोच्य संग्रह के संपादक श्याम महर्षि ने अपने संपादकीय में इस ओर संकेत करते हुए लिखा भी है– 'अपनी रचना का सबसे पहला समीक्षक वह स्वयं होता है।' इसमें संदेह नहीं कि ऐसी रचनाओं को नए रचनाकारों को 'प्रोत्साहन' पेटे दर्ज करने के पश्चात् बाकी स्तरीय कविताएँ काव्य संकलन को 'गरिमामय' बनाने में सफल हुई हैं।

देवीलाल परिहार 'देऊ' के आवरण से सुसज्जित इस काव्य संकलन का मुद्रण व प्रस्तुतीकरण स्तरीय है। इस संग्रह सहित शिक्षक दिवस प्रकाशन योजना की सभी पुस्तकों के प्रदेश के समस्त विद्यालयों तक पहुँच सुनिश्चित की जानी चाहिए ताकि अधिकाधिक शिक्षक व विद्यार्थी इससे लाभान्वित हो सकें। इस सुरुचिपूर्ण प्रकाशन के लिए शिक्षा विभाग, राजस्थान साधुवाद का हकदार है।

–मदन गोपाल लढ़ा
144, लढ़ा-निवास, महाजन (बीकानेर)

शिक्षा का वातायन : *सम्पादक : रामपाल शर्मा; माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के लिए सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर; संस्करण : शिक्षक दिवस 2011; पृष्ठ : 160*

'शिक्षा का वातायन' पुस्तक शिक्षक दिवस प्रकाशन, 2011 पर माध्यमिक शिक्षा राज. बीकानेर द्वारा प्रकाशित विभागीय अधिकारियों, कार्मिकों व शिक्षकों द्वारा रचित रचनाओं का अद्वितीय सामयिक संग्रह है। अद्वितीय व सामयिक इसलिए कि इसमें शिक्षा जगत के बहुआयामी परिदृश्यों तथा निरन्तर हो रहे परिवर्तनों को इस पुस्तक में व्यक्त किया गया है। 'शिक्षा का वातायन' में अनुभव, चिन्तन, मनन व वैचारिक रश्मियों की 38 रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। संग्रह की विशेषता यह है कि एक ओर प्रतिष्ठित, अनुभवी शिक्षाविदों के संस्मरण, अनुभव इसमें संजोए गए हैं तो दूसरी ओर नव अंकुरित लेखक उनकी छत्रछाया में मार्गदर्शित तो रचनाएँ रच रहे हैं।

प्रस्तुत कृति में शिक्षा के मुख्य घटक, कारक तथा शिक्षा सम्बन्धी सभी विषयों को रचनाकारों द्वारा संस्पर्शित किया गया है। शिक्षक, शिक्षार्थी तथा विद्यालय शिक्षा के आधार स्तम्भ हैं। विद्यालय वह सामाजिक संस्था है जहाँ शिक्षक, शिक्षार्थी के व्यक्तित्व को अनेक शैक्षिक, सहशैक्षिक गतिविधियों द्वारा गढ़ता व तराशता है। पुस्तक के आरम्भ में 'शिविरा' के पूर्व वरिष्ठ सम्पादक शिवरतन थानवी का लेख 'किताब कैमरा है कि आँख' में लेखक द्वारा पुस्तकों व पत्र-पत्रिकाओं के चिरन्तन महत्व व स्वयं को शिक्षक मानते हुए पुस्तक प्रेम को अभिव्यक्त किया है अपितु शिक्षकों को अध्ययनशील बने रहने का संदेश दिया है। लेखक ने स्वअनुभव के मोतियों को शब्दों की माला में पिरोते हुए लिखा है– 'पुस्तक प्रेम अंकुरित होने में कई मुकाम आते हैं। हर मुकाम पर रुचियाँ नई बनती हैं या पिछली जो थीं वे फिर से सुदृढ़ होती हैं। एक नया आत्मविश्वास जाग्रत होता है और भाषा पर पकड़ मजबूत होती है। दृष्टि में परिवर्तन होता है, दिशाएँ बदल जाती हैं।' इसी शृंखला में अन्य रचनाकारों ने भी शिक्षक व शिक्षाविद् के रूप में पुस्तकों के अस्तित्व पर मँडराते खतरों के प्रति आगाह करते हुए पुस्तक, पुस्तकालय और स्वाध्याय, अलमारी में बंद पुस्तकें लेख द्वारा स्वाध्याय को बढ़ावा देने का इशारा किया है।

प्रबुद्ध शिक्षक साहित्यकार डॉ. दाऊदयाल गुप्ता की रचना 'वाणी का अनुशासन' में शिक्षक को शुद्ध उच्चारण, शुद्ध लेखन, ध्वनियों के उच्चारण स्थल, हिन्दी भाषा की वैज्ञानिकता और लोकप्रियता व उच्चारण के प्रति अनुशासित रहने का प्रत्यास्मरण कराते हुए सुझाव दिया गया है 'वाणी मानव के लिए वरदान है पर इसका स्वच्छंदता पूर्ण व्यवहार करना तिरस्कार है। वाणी अमोघ बनी रहे तथा श्रवणकर्ता को सुख की अनुभूति कराए यह अपेक्षित है। यह संचेतना व्याकरण व भाषा विज्ञान की पुस्तकों से नहीं वरन् सतत अभ्यास से बनेगी।'

आज संसार में चहुँओर मूल्यहीनता व्याप्त है। रचनाकारों ने इस संवाद को 'मानवीय मूल्य और शिक्षा प्रणाली', 'नैतिक शिक्षा की आवश्यकता', 'संस्कारों की शिक्षा', 'शिक्षा में संस्कृति की गंध', 'सामाजिक समरसता में सहायक शिक्षाक्रम प्रायोजना एवं क्रियान्विति, एक अभिनव प्रयोग, 'छात्र और अनुशासन' में स्थान दिया है। नैतिक शिक्षा की आवश्यकता के लेखक महावीर प्रसाद जांगिड़ ने इस प्रकार विचार व्यक्त किए हैं– 'नैतिक शिक्षा में ही वह दम है जो भ्रष्ट आचरण करने से रोक कर हमें आदर्श जीवन जीने की प्रेरणा दे सकती है और इसी से आदर्श समाज का निर्माण हो सकता है।' इसी क्रम में शिक्षा जगत की अनेक समस्याओं का जिक्र 'परीक्षा प्रणाली में सुधार क्यों और कैसे' 'शिक्षा एवं बेरोजगारी' 'शिक्षा से अपेक्षाएँ' 'विद्यार्थी-शिक्षण-शिक्षक' में रचनाकारों द्वारा कर उनका समाधान भी किया गया है।

समीक्ष्य कृति का स्वरूप पूर्णरूपेण सुसज्जित न हो पाता यदि इसमें पर्यावरण व शिक्षा के अधिकार सम्बन्धी रचनाओं का स्थान न दिया गया होता। 'पर्यावरण शिक्षा अब आन्दोलन के रूप में', 'प्रदूषण का शिक्षा पर प्रभाव', इसी प्रकार की उत्कृष्ट रचनाएँ हैं। 'शिक्षा का अधिकार मेरी नजर में' कृष्णा कुमारी, 'सिविल सोसायटी का शिक्षा में महत्व' मंगत सिंह कृत लेख इसी श्रेणी के उदाहरण हैं। शिक्षण विधियों के अभाव में पुस्तक का नाम 'शिक्षा का वातायन' अपना नाम सार्थक न कर पाता। अतः रचनाकारों ने 'भविष्य की शिक्षण विधाएँ और शिक्षक', 'विश्व बंधुत्व का नया आयाम - संगीत शिक्षा', 'शिक्षा एवं सम्प्रेषण', 'वर्ग पहेली द्वारा विज्ञान शिक्षण, पर लेखनी चलाकर इस संकलन को समृद्ध किया है।

मानवाधिकार के वर्तमान युग में शिक्षा आज सभी का अधिकार बन गई है। अतः शारीरिक एवं मानसिक विमंदित विद्यार्थियों का यह मूल अधिकार है कि वह शिक्षा प्राप्त करे। सुरेन्द्र माहेश्वरी ने 'पिछड़े एवं मंदबुद्धि बालकों की समस्याएँ, समाधान एवं उपचार' तथा प्रौढ़ साहित्यकार शिवचरण मंत्री ने 'डिस्लेक्सिक बालक' विषय पर लेखन शिक्षक की इन बालकों के प्रति संवेदनशीलता का परिचायक है।

मोहनलाल जांगिड़ कृत 'विद्यार्थी का मानसिक स्वास्थ्य', मुरारीलाल कटारिया कृत 'तनाव मुक्त शिक्षा', डॉ. जगदीशचन्द्र कृत 'मनोविनोद की रचनात्मक देन शिक्षण में', भगवती प्रसाद गौतम कृत 'शिक्षा, सृजनात्मकता

और सौन्दर्यबोध' ऐसे लेख हैं जो शिक्षा में शिक्षार्थी की महत्ता को प्रतिपादित करते हैं।

शिक्षा का स्वरूप त्रिकोणात्मक है। समुदाय इसका वह तीसरा बिन्दु है जिसे स्पर्श करने से त्रिकोण की संरचना पूर्ण होती है। शिवनारायण शर्मा का लेख 'शाला संचालन में समुदाय की भूमिका' को सम्पादक ने शिक्षा की इस पुस्तक को पूर्ण किया है। कुछ इतर विषयों पर भी लेखक वृंद द्वारा अक्षर जननी चलाई है। सुनील कुमार पण्ड्या कृत चिन्तनपरक लेख 'शिक्षा के अग्रदूत महात्मा गाँधी' की प्रासांगिकता को रेखांकित करता है।

समालोच्य कृति में शिक्षा के वरिष्ठ सेवानिवृत्त अधिकारी ने अपने सम्पादन कौशल द्वारा पूर्ण उपयोगी बनाया है। पुस्तक का बहुरंगी मुखपृष्ठ आकर्षक व नामकरण के अनुकूल है। छपाई सुन्दर व आकर्षक है। बीकानेर के सुप्रसिद्ध प्रकाशक सूर्य प्रकाशन मन्दिर ने पुस्तक मुद्रित कर विभाग के प्रकाशन को सफल बनाया है।

–सुमन सिंह
E-53, कथूरिया कॉलोनी, बीकानेर

सृजन के आयाम : *सम्पादक : डॉ. प्रमोद भट्ट; माध्यमिक शिक्षा राज., बीकानेर के लिए सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर; संस्करण : शिक्षक दिवस 2011; पृष्ठ : 160; मूल्य : 57 रुपए।*

शिक्षक दिवस प्रकाशन योजनान्तर्गत सृजनधर्मी शिक्षकों की रचनाओं का संकलन कर विभिन्न विधाओं की पाँच पुस्तकों का प्रकाशन एक विभाग का शिक्षक कल्याण एवं सृजनात्मकता को प्रस्फुटित करने का प्रयास है। इन पुस्तकों में गद्य की विभिन्न विधाओं को संकलित कलेवर में प्रस्तुत करती हैं पुस्तक 'सृजन के आयाम' जिसमें विभिन्न विधाओं यथा आलेख, कहानी, प्रेरक व्यक्तित्व, चिन्तन भूमि, संस्मरण, हास्य व्यंग्य तथा लघुकथाओं को सम्मिलित किया गया है।

सम्पादक डॉ. प्रमोद भट्ट द्वारा रचनाओं का चयन बहुत बारीकी से किया गया है, रचनाओं में मात्र कथानक की प्रधानता ही नहीं देखी गई है वरन् उससे मिलने वाले संदेश को प्रमुख स्थान दिया गया है, जिसके लिए सम्पादक महोदय बधाई और धन्यवाद के पात्र हैं। सम्पादकीय स्वयं न केवल पुस्तक की रचनाओं का द्वार है वरन् वह तोरण बनकर वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षकों के साहित्य प्राण की अनवरतता एवं सृजनधर्मिता की आवश्यकता का संदेश देता है। साहित्य के मर्म को अभिव्यक्त करते हुए रूसी लेखक सोल्जेनित्सिन का कथन सम्पादकीय में सम्मिलित किया है वह लेखकों को साहित्य व समाज की अंतरंगता की कहानी कह जाता है।

चालीस से अधिक लेखकों की रचनाओं को पुस्तक में सम्मिलित कर अधिक से अधिक शिक्षकों की सृजनशीलता को कैनवास दिया गया है परन्तु इनमें बहुत से ऐसे भी हैं जो ख्यातनाम है, जिनकी रचनाएँ वर्षों से न केवल शिक्षक दिवस प्रकाशन की पुस्तकों वरन् नामचीन पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। लेखक के शिक्षक होने से उसका दायित्व और अधिक बढ़ जाता है क्योंकि पाठक की अपेक्षाएं कुछ इतर भी होने लगती हैं। ऐसे में रचनाओं में स्पष्टता होनी आवश्यक होती है। एक ही रचना में विरोधाभास रचना की स्वीकार्यता को कहीं न कहीं प्रभावित अवश्य करता है।

राजस्थान की समकालीन हिन्दी कविता में लोक-जीवन आलेख में लेखक प्रारम्भ में ही रूपवादी एवं कलावादी कविता को फैशन बताने में संकोच नहीं करते और आलेख का समापन करते हुए भी कविता की विचारणीय विडम्बना बताते हैं कि ऐसे कवियों की कमी नहीं जो कविता लिखने के लिये फार्मूले तलाशते हैं। उनके यहाँ कविता उतरती नहीं वरन् बौद्धिक कसरत का कुपरिणाम होती है। परन्तु आलेख के मध्य में ऐसे बहुत से उदाहरण दिये गये हैं जो मेरी नजर में बेहतरीन है और आलेख की नजर के बौद्धिक कसरत। अतः आलेख का पुष्ठ होना उसके सम्प्रेषण को सटीक बनाता है।

कहानियों में शिक्षक होने एवं विद्यालय का प्रभाव भी दृष्टिगत होता है जो स्वाभाविक भी है तो अच्छा संदेश देता है। गुरु दक्षिणा, परीक्षा फल, एक और कन्यादान आदि कहानियाँ मर्म को छूने वाली हैं। अग्नि परीक्षा कथा भी मन को स्पर्श कर गई। तीनों प्रेरक व्यक्तित्व पर आलेख न केवल रचनाधर्मिता को निभा रहे हैं वरन् प्रत्येक कथ्य संदेशवाहक भी हैं। काबरा जी, उपाध्याय जी और तिवाड़ी जी बधाई के पात्र हैं। चिन्तन भूमि शीर्षक से एक अलग रचना श्रेणी सम्मिलित करने के लिए शिक्षा विभाग बधाई का पात्र है, जिसका प्रत्येक आलेख न केवल अच्छा शिक्षक वरन् अच्छा नागरिक बनने का संदेश देता है। बूँद-बूँद पानी और जल ही जीवन है दोनों ही आलेख सामयिक आवश्यकताओं पर सरलता से ध्यान केन्द्रित करा जाते हैं। एलबम शीर्षक से लिखा संस्मरण किसी कथा सा ही, जिसे पढ़ते हुए अधूरा नहीं छोड़ा जा सकता। लघु कथाएँ कहीं बहुत विराट प्रेरणा का स्रोत है। सच्चे हितैषी, मदर्स डे, संवाद और जमीर लघु कथाएँ बहुत बड़े कैनवास पर अपना कथ्य चित्रित कर जाती हैं। रचना के धर्म को बनाए रखने का दायित्व लेखक का ही होता है उससे विचलित होते ही रचना के साथ न्याय नहीं होता। शिक्षकों हेतु पुस्तक में शिक्षक पर व्यंग्य करते समय भी शालीनता को खोना उचित नहीं है परिवर्तन शीर्षक की लघुकथा (पृष्ठ 150) में शिक्षकों के चयन पर उठाया प्रश्न सराहनीय नहीं कहा जा सकता।

पुस्तक का कलेवर सुन्दर है छपाई भी स्तरीय है, जिसके लिए सम्पादक प्रकाशक एवं विभाग प्रशंसा के पात्र हैं।

–अरुण कुमार
सहायक निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राज., बीकानेर

राता फूल रचाव रा : *सम्पादक : राजेन्द्र जोशी; माध्यमिक शिक्षा राज., बीकानेर के लिए सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर; संस्करण : शिक्षक दिवस 2011; पृष्ठ : 160; मूल्य : 57 रुपए।*

'राता फूल रचाव रा' नाम की राजस्थानी भाषा की पुस्तक की समीक्षा करते समय सबसे पहले ध्यान पुस्तक के नाम और कलेवर पर टिकता है। पुस्तक में संकलित व सम्मिलित सामग्री के अनुरूप पुस्तक का नाम व कलेवर वैसे तो अच्छा है, किन्तु इससे कहीं और अच्छी श्रेणी का व आकर्षित होता तो वह पुस्तक को और अधिक आकर्षण प्रदान करता। निःसंदेह पुस्तक के लिए एकत्रित सामग्री अनुभवी और विचारशील अध्यापकों की समृद्ध रचनाधर्मिता को उजागर करती है। जैसा की पुस्तक के सम्पादक ने अपने सम्पादकीय पृष्ठ में उल्लेख किया है। उन्होंने कहा है 'आ पोथी सतरंगी इन्द्रधनुष सूं कमतर नहीं है।'

राजस्थानी भाषा में संकलित व समाविष्ठ सामग्री में हर विधा देखने पर मालुम होता कि शिक्षक समुदाय में इस भाषा के प्रति गहरी रुचि है। पुस्तक में निबन्ध, कहानियाँ, लघु कथाएँ, यात्रा, नाट्य, गीत, गज़ल, कविता, क्षणिकाएँ, संस्मरण आदि विधाएँ एक साथ, एक ही पुस्तक में पाठक को पढ़ने के लिए मिले, उससे बढ़कर पुस्तक किस रूप में श्रेष्ठ समझी जा सकती है। जबकि अन्य स्वतंत्र लेखकों की पुस्तकों में केवल एक ही विधा देखने को मिलती है।

पुस्तक में रचनाकार सुरेन्द्र अंचल का निबन्ध हमें पुनः जानकारी देता है कि राजस्थानी

भाषा महत्ता को विदेशी लेखकों तक ने भी अपनाया है और इसको समृद्ध एवं सर्वोच्च स्थान दिया है। श्री अंचल ने इटली निवासी व यहाँ पदस्थापित कर्नल जेम्स टॉड का निबन्ध में विस्तार से जिक्र कर एक अच्छी जानकारी दी है। ताकि हम भी अपनी मायड़ भाषा के उत्थान में अभिरुचि लें।

मेवाड़ की धरती इतिहास पुरुष महाराणा प्रताप जैसे वीरों की रही है तो भामाशाह जैसे दानवीरों की। संयत व संक्षिप्त शब्दों में मेवाड़ का चित्रण प्रशंसनीय लेख है। गागर में सागर की तरह की सटीक पंक्तियाँ 'मक्की माथै मुलक्या करै, कुलथ माथै राड़, फूल्या माथै फादक्या करै, जय माता मेवाड़'।

शिवचरण मंत्री रो लेख 'मांदगी की महफिल हालाकि एक साधारण श्रेणी का है परन्तु अपनी शब्दशिल्प की कला से आकर्षक बन जाता है। सत्यनारायण इन्दौरिया आजादी के वीरों की चरचा व बलिदान गाथा को तुकबन्दी की भाषा में प्रकट करते हैं।

पुस्तक में जो कहानियाँ हैं, कुछ साधारण हैं परन्तु 'नारीपणै री जीत' सनिचरी और अणचाई नाम की कहानियाँ भारतीय नारीत्व की विशेषताएँ हौसले, त्याग अपनत्व, ममत्व एवं सेवाभाव के चरित्र को दर्शाती है। जो नारी की उपेक्षा करने के विरुद्ध एक ओर निंदा तो दूसरी ओर सचेत कराती है। इस प्रकार अन्य कहानियाँ भी बोधगम्य है। नाट्य विधा में भले ही संख्या में एक हो लेकिन नाटक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित होने के कारण पठनीय हैं।

गीत शैली के शब्द बोल अच्छे हैं। 'संदेशो लायौ रै' ये गीतकार हरीश व्यास आज के युग में पाणी की उपयोगिता समझाता है। कविता 'चौमासौ' में कवि पाणी का महत्व बतलाता है। कविवर श्याम सुन्दर भारती का पर्यावरण के प्रति अनुराग है। कवि पंक्तियों में कहता रूंख सबके लिए फलदायी है। 'आला जाला लोग मिल्यां, हँसता खाता लोग मिल्या' की अगली कड़ियाँ काफी कुछ आज के संदर्भ से मेल खाती हैं। सरावण जोग है। सुदामा चरित्र में रूप नारायण काबरा और मघनसी रा सोरठा में संग्रामसिंह सोढा काफी मेहनत के साथ शब्द शृंगार किया है। तो भगवती प्रसाद की कविता अच्छी श्रेणी व लुभावने शब्दों के साथ रची गई है।

किताब सम्पूर्ण पठन पश्चात स्वमेव प्रतीत होता है कि शिक्षा विभाग जहाँ राजस्थानी भाषा को प्रोत्साहित करने में रुचि रखता है। वहीं शिक्षकों की लेखन शैली, शब्दों का चयन एवं लिखने का प्रवाह गतिमान है। पुस्तक राता फूल रचाव रा में सभी विधाएँ युगानुसार, प्रकृति, मनुष्य का स्वभाव, व्यवहार का अच्छा संकलन है। खास तौर से बाल उपयोगी कविता नभ रा वासी और 'म्हारी मां' व दिवलां संदेश शामिल है। पुस्तक के लिए किया संकलन व सम्पादन में जोशी जी की रुचिपूर्ण गहनशीलता, गम्भीरता व श्रेष्ठ मेहनत प्रतिलक्षित होती है। जिससे पुस्तक पठनीय साबित होगी ऐसा मेरा विश्वास है। शिक्षा विभाग को धन्यवाद व बधाई कि विभाग लगातार राजस्थानी भाषा को प्रोत्साहित करने में सक्रिय है।

–भंवरलाल व्यास
गोविन्द गली, हरसों की ढाल, बीकानेर

गुब्बारे : *सम्पादक : आर.पी. सिंह; माध्यमिक शिक्षा राज., बीकानेर के लिए सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर; संस्करण : शिक्षक दिवस 2011; पृष्ठ : 96; मूल्य : 29.40 रुपए।*

गद्य या पद्य विधा में बच्चों के लिए किसी रचना का सृजन बहुत ही मुश्किल होता है। यह जरूरी नहीं कि बड़ों को अच्छी लगने वाली कोई भी रचना बच्चों को पसंद आ जाएगी। यह तो बच्चा ही बता सकता है कि कौनसी रचना उसे अच्छी लगती है और कौनसी वह नापसंद करता है। या फिर बच्चों को किस तरह की रचनाएं अच्छी लगती हैं वह तो बाल मन का सृजक ही बता सकता है। जो व्यक्ति शिक्षक के पेशे से जुड़ा है और वह बच्चों के लिए लेखन करता है तो वह व्यक्ति बेहतर से बेहतरीन बाल रचनाओं का सृजन कर सकता है। चूँकि शिक्षक बाल मन की संवेदना से सीधा संपर्क में रहता है और वह उनकी संवेदनाओं को अपने सृजन में श्रेष्ठ अभिव्यक्ति दे सकता है। पुलिस महानिरीक्षक के पद पर सेवाएं दे रहे वरिष्ठ साहित्यकार आर.पी. सिंह एक संवेदनशील रचनाकार हैं और बाल साहित्य के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर चिरपरिचित हस्ताक्षर हैं। इन्होंने बाल मन के भीतर उपजे अनेक प्रश्नों को अपनी सहज रचनाओं के माध्यम से उजागर करते हुए उनकी क्षुधा को शान्त किया है।

श्री सिंह द्वारा संपादित पुस्तक 'गुब्बारे' बच्चों के लिए बाल अभिव्यक्ति का श्रेष्ठ परिणाम है। इसमें पद्य खण्ड में 30 बाल कविताएं हैं और विभिन्न विधाओं के माध्यम से गद्य खण्ड में 17 रचनाएं प्रस्तुत की गई हैं। वर्तमान समय में खत्म हो रही संवेदना और बढ़ रही संवादहीनता को रेखांकित करती कविता 'गाँधी बाबा', हमारे देश की अनेक विशेषताओं, परम्पराओं, प्रकृति और शिक्षा के प्रति जागरूकता को उजागर करती कविता 'अद्भुत देश', नैतिकता का संदेश देती 'कुछ तो नया करो', 'ऐसा खेलें खेल', 'हार भी जीत है', 'दो वरदान', 'आह्वान', 'शीश न झुकने देंगे', 'मीठी वाणी', 'रिश्ते' तथा 'गाँधी जी के तीन बंदर' कविताएं हैं, वहीं कथा कविता 'फूट लोभ का मार भगाएं', लालची प्रवृत्ति से होने वाले नुकसान को दर्शाती है। बेटियों को अभिशाप समझने वाले लोगों के समक्ष बेटियों के दृढ़ संकल्प को दोहराती कविता 'बेटी के उद्गार', पर्यावरण के प्रति सचेत करती कविता 'पेड़ लगाएं' एवं मोबाइल की महता बतलाती कविता 'मोबाइल' उल्लेखनीय है।

गद्य खण्ड में अंधविश्वास को रेखांकित करती 'भोपे का पाखण्ड' एवं 'ठगी का शिकार', प्रतिकूल परिस्थितियों में बच्चों को आगे बढ़ने की प्रेरणा देने वाला संस्मरण 'जीवन की दिशा', महात्मा बुद्ध के जीवन से जुड़े दो प्रेरक प्रसंग, बच्चों के लिए शिक्षा के हक को दर्शाता एकांकी 'अधिकार और कर्तव्य', सहज हास्य रस से गुदगुदाती बाल कथा 'लेखरामजी की गाय', विज्ञान आलेख 'अंधेरे में देखने वाले जीव' तथा लोक कथा के रूप में प्रस्तुत बाल कथाएं 'असली श्रद्धा' व 'अनुभव बिना ज्ञान शून्य' बाल मन के अनुकूल के प्रस्तुत की गई हैं। शिक्षकों द्वारा सृजित ये सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं। पुस्तक का मुद्रण स्तरीय है और रंगीन आवरण पृष्ठ भी बेहद आकर्षक बन पड़ा है। शिक्षा विभाग राजस्थान को शिक्षक दिवस प्रकाशन की इस उत्कृष्ट कृति के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

–दीनदयाल शर्मा
10/22 आर.एच.बी., हनुमानगढ़ जं. (राज.)

रपट

57 वीं राष्ट्रीय विद्यालयी बास्केटबॉल (17 वर्षीय छात्र-छात्रा) प्रतियोगिता सम्पन्न

दिनांक : 17 से 22 अक्टूबर 2011 □ स्थान : बाँगड़ स्टेडियम, पाली

महाराणा प्रताप के शौर्य से वीरता एवं मीरा की भक्ति से प्रेमसुधा बरसाने वाली पाली की धरती पर पहली बार आयोजित हुई राष्ट्रीय विद्यालयी बास्केटबॉल (17 वर्षीय छात्र-छात्रा) प्रतियोगिता के उद्घाटन समारोह में भारतीय संस्कृति के रंग झलके। उद्घाटन समारोह के दौरान सजाई गई महाराणा प्रताप, मीराबाई, पन्नाधाय, हाड़ीरानी और लोकदेवता बाबा रामदेव जैसे इतिहास चरित्रों की झाँकियाँ लोगों में शौर्य भक्ति, स्वामी भक्ति, आत्मोत्सर्ग व सहानुभूति का भाव भर गई। स्टेडियम के द्वार पर ही राजस्थानी परम्परा के अनुसार आगंतुकों व खिलाड़ियों का स्वागत पधारो म्हारे देश की धुन से हुआ। इसके बाद तेरहताली, कच्ची घोड़ी, कालबेलिया स्वास्तिक कत्थक कोरियोग्राफी जैसे नृत्यों ने हमारी सांस्कृतिक विरासत का परिचय दिया जिसमें राजकीय बालिया बामावि, मिल क्षेत्र बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, सन्तपॉल विद्यालय, बी.आर. बिड़ला, श्री रतनचन्द लोढ़ा एवं आश्वासन बालग्राम आलावास विद्यालयों ने प्रस्तुतियाँ दी। ज्योंही धरती धोरां री ..... गीत पर नृत्य प्रस्तुत हुआ तो स्टेडियम तालियों की गडगड़ाहट से गूँज उठा।

अतिथियों का सम्मान– उद्घाटन के दौरान मुख्य अतिथि ने मार्च पास्ट में सलामी ली। मुख्य अतिथि ने कार्यक्रम के प्रायोजक अम्बुजा सीमेंट के संयुक्त अध्यक्ष वल्लभ वी. टॉक, श्रीसीमेंट के वरिष्ठ उपाध्यक्ष संजय मेहता तथा दानदाता मूलचन्द नाहर, रमेश जवेरी एवं अन्तर्राष्ट्रीय बास्केटबॉल खिलाड़ी मांगीलाल का बहुमान किया। उन्होंने 'क्रीड़ांशु' स्मारिका का भी विमोचन किया। इस दौरान विशिष्ट अतिथि के तौर पर जिला प्रमुख श्री खुशवीरसिंह जोजावर, जिला कलक्टर श्री नीरज के. पवन, मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री अशोक यादव एवं प्रशिक्षु आई.ए.एस. श्री जितेन्द्र सोनी, सभापति श्री केवलचंद गुलेच्छा, एडीएम श्री हरफूलसिंह यादव आदि मौजूद थे। इस दौरान शहर वृताधिकारी श्रीमती सरिता शत्रुघ्न, कोतवाल श्री ओमप्रकाश उज्ज्वल, औद्योगिक थाना प्रभारी श्री किशोरसिंह व उप निरीक्षक श्री जसवंतसिंह समेत कई अधिकारियों के नेतृत्व में पुलिस की चाक चौबंद व्यवस्था रही जिसको माननीय शिक्षा मंत्री राजस्थान सरकार श्रीमान् भंवरलाल मेघवाल द्वारा बहुत ही उत्कृष्ट कह कर नवाजा गया।

इनामों की घोषणा– उद्घाटन समारोह में दानदाता मूलचंद नाहर परिवार की ओर से सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी (छात्र-छात्रा) को 11-11 हजार रुपये नकद इनाम की घोषणा की गई। शनिधाम ट्रस्ट की ओर से बेस्ट प्लेयर्स को भारत भ्रमण की घोषणा की गई।

57 वीं राष्ट्रीय विद्यालयी बास्केटबॉल प्रतियोगिता को लेकर देश के विभिन्न राज्यों से आए (17 वर्षीय छात्र-छात्रा) खिलाड़ियों को राजस्थानी संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए बालिया स्कूल ग्राउण्ड में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें वेस्ट जॉन कल्चर उदयपुर द्वारा भी प्रस्तुति दी गई। कलाकारों ने सिर पर कलश रख कर भवाई नृत्य की प्रस्तुति दी तो पांडाल तालियों से गूँज उठा। इसी क्रम में कलाकारों ने केसरिया बालम ..... निम्बूड़ा-निम्बूड़ा, घूमर, कालबेलिया, चरी नृत्य में सिर पर आग लगी चरी रखकर उत्कृष्ट नृत्य कर अतिथियों का मनमोह लिया। कार्यक्रम में क्रीड़ांशु बुलेटिन का विमोचन किया गया, जो प्रतियोगिता के दौरान प्रतिदिन प्रकाशित हुआ। इस अवसर पर कलक्टर श्री नीरज के. पवन द्वारा कलाकारों एवं विभिन्न स्कूलों के व्यवस्थापकों का सम्मान किया गया।

फेसबुक पर परिणाम– 57वीं राष्ट्रीय विद्यालयी बास्केटबॉल (17 वर्षीय छात्र-छात्रों) प्रतियोगिता के मैचों के परिणाम 57 वीं नेशनल स्कूल बास्केटबॉल चेम्पियनशिप 2011 के नाम से फेसबुक पर बनाई गई आईडी पर उपलब्ध करवाये गये। कम्प्यूटर कक्ष इंचार्ज रमेश खमराना ने बताया कि सभी मैचों के परिणाम फोटो सहित फेसबुक पर उपलब्ध करवाये गये। इससे खिलाड़ियों के परिजनों को परिणाम जानने की सुविधा मिली। सूचना एवं संचार तकनीक का इस राष्ट्र स्तरीय बास्केटबॉल प्रतियोगिता में खेल प्रबन्धन ने बेहतरीन तरीके से उपयोग किया जिसमें आईसीटी टीम द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन किया गया जिसे एस.जी.एफ.आई. के प्रतिनिधि सहित सभी अधिकारियों, अन्य कर्मचारियों व खिलाड़ियों द्वारा सराहा गया।

खिलाड़ियों ने देखा रणकपुर– प्रतियोगिता में भाग लेने आई टीमों को राजस्थान की संस्कृति से रूबरू करवाने के लिए उन्हें पाली जिले के रणकपुर एवं निम्बेश्वर महादेव सहित आसपास के क्षेत्रों के निःशुल्क दर्शन करवाये गये। गुरुवार को जम्मू कश्मीर, वेस्ट बंगाल, उत्तराखण्ड, गुजरात, महाराष्ट्र व आईपीएससी (छात्र-छात्रा) टीमों के खिलाड़ियों ने भ्रमण किया।

प्रतियोगिता के तहत छात्र वर्ग का फाइनल मैच दिल्ली राजस्थान के बीच खेला गया। मैच काफी उतार-चढ़ाव वाला रहा। मैच के अन्तिम क्षणों तक कौन सी टीम जीतेगी इसका अन्दाजा लगाना खेलप्रेमियों के लिए काफी मुश्किल हो गया। हर पॉइंट पर जैसे खेलप्रेमियों की साँसें अटकी नजर आई। कभी राजस्थान आगे तो कभी दिल्ली आगे। खेलप्रेमियों को अन्तिम क्षणों तक पता नहीं आखिर कौनसी टीम जीतेगी। राजस्थान टीम की ओर से प्वाइंट करने पर जहाँ पूरा ग्राउण्ड तालियों से गूँज उठता वहीं दिल्ली टीम की ओर से प्वाइंट पर मैदान में चुप्पी छा जाती। मैच के दौरान बड़ी संख्या में उपस्थिति खेलप्रेमियों को व्यवस्थित खड़ा रखने में पुलिसकर्मियों को पूरे मैच के दौरान मशक्कत करनी पड़ी। जिला कलक्टर श्री नीरज के. पवन, एस.पी. श्री अजयपाल लाम्बा सहित कई प्रशासनिक अधिकारी भी पूरे मैच के दौरान ग्राउण्ड में उपस्थित रहे। मैच में पहले क्वार्टर में राजस्थान 23-15 से आगे था। मगर उसके बाद अगले दो क्वार्टर में दिल्ली के दिलेरों ने

उत्कृष्ट खेल का प्रदर्शन करते हुए बढ़त बना ली। मगर अंत के क्वार्टर में राजस्थान ने दिल्ली पर बढ़त बनाई। निर्धारित समय में दोनों टीमों के स्कोर लेवल रहने पर 5 मिनट का अतिरिक्त समय लिया गया, मगर उसमें भी दोनों टीमों का स्कोर लेवल रहा जिस पर एक बार फिर पाँच मिनट का समय लिया गया जिसमें अन्तिम श्रेणी में दिल्ली ने एक प्वाइंट से आगे रहते हुए फाइनल मैच जीत लिया।

मैचों के परिणामों पर नजर डाली जाए तो केरल (छात्रा), दिल्ली एवं राजस्थान (छात्र) टीम का प्रदर्शन लाजवाब रहा है। वहीं प्रतियोगिता में छात्र-छात्रा टीम के सदस्यों के प्रदर्शन के आधार पर छात्रा वर्ग में केरल की पूजा कुमारी मोल एवं छात्र वर्ग में राजस्थान टीम के महिपाल सिंह (जैसलमेर) को बेस्ट प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट चुना गया, जिसकी अधिकारिक घोषणा शनिवार सुबह बांगड स्टेडियम में होने वाले समापन समारोह में की गई।

खेल का सफल संचालन निदेशक महोदय श्रीमान् आलोक गुप्ता के निर्देशन में एवं जिला प्रशासन के सहयोग से जिला कलेक्टर श्रीमान् नीरज के पवन एवं जिला शिक्षा अधिकारी श्रीमती नूतन बाला कपिला एवं एस.जी.एफ. आई. के पर्यवेक्षक श्री ए.के. रॉय, उपनिदेशक खेलकूद श्रीमती गिरिजा शर्मा, वरिष्ठ उपनिदेशक जोधपुर के श्री जयनारायण गहलोत, उपनिदेशक श्री जी.एल. पटेल, विभागीय पर्यवेक्षक श्री आर.के. परिहार, बालिया बालिका उ.मा.वि. की प्रधानाचार्या श्रीमती पूनम तिवारी कोच श्री दलजीत महावर के मार्गदर्शन में किया गया।

– नूतन बाला कपिला
जिला शिक्षा अधिकारी (मा.), पाली

बाल शक्ति – राष्ट्रीय शक्ति

(राज्यस्तरीय स्काउट-गाइड जम्बूरेट 14-19 नवम्बर, 2011)

स्वतन्त्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री, बच्चों के प्रिय चाचा पं. जवाहरलाल नेहरू के जन्म दिन 14 नवम्बर के शुभ अवसर पर प्रदेश की राजधानी जयपुर में राज्यस्तरीय स्काउट-गाइड जम्बूरेट का उद्घाटन म.प्र. के महामहिम राज्यपाल श्री बी.एल. जोशी की अध्यक्षता में तथा माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत राजस्थान सरकार के मुख्य आतिथ्य में हुआ।

जम्बूरेट में 12000 से ज्यादा स्काउट गाइड ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। शहरी कोलाहल से दूर रोहिणी नगर फेज-1 रेनवाल माझी फागी रोड पर प्रकृति की गोद में एक बहुत बड़ा 'एरिना' तैयार किया गया जहाँ छः दिन विभिन्न प्रकार के आयोजन व सांस्कृतिक गतिविधियाँ होगी सभी सातों मण्डलों अजमेर, भरतपुर, बीकानेर, जयपुर, जोधपुर, उदयपुर कोटा के स्काउट गाइड पूरे जोश व उत्साह से शामिल थे।

ध्वजारोहण राज्यपाल व मुख्यमंत्री महोदय के कर कमलों द्वारा करवाया गया। तत्पश्चात् मण्डल वार मार्चपास्ट झंडे को सलामी देते हुए कदम ताल के साथ राज्यपाल व मुख्यमंत्री तथा अतिथियों के सामने से स्काउट गाइड की टुकड़ियाँ मंच के सामने से निकली इसके बाद सभी मण्डलों के स्काउट व गाइड के बैंड अपनी मधुर स्वरलहरियों व बैंड मास्टर के निर्देश पर प्रदर्शन करते हुए किसी भी पेशेवर बैंड से कम नहीं लग रहे थे। इनके प्रदर्शन को देखकर सभी अतिथि व दर्शक मंत्रमुग्ध हो गये।

स्वागत भाषण में स्टेट चीफ कमिश्नर श्री निरंजन आर्य ने मंचस्थ अतिथियों का स्वागत व आभार प्रकट किया उन्होंने बताया कि राज्य स्तर पर होने वाला यह आयोजन जम्बूरेट कहलाता है जबकि राष्ट्रीय स्तर पर होने वाला समारोह जम्बूरी कहलाता है। इस जम्बूरेट में 12000 से ज्यादा स्काउट गाइड भाग ले रहे हैं। बजट घोषणा के अनुरूप 32 वर्ष बाद यह आयोजन किया गया है। इसके लिए हम मुख्यमंत्री के आभारी हैं।

एक तरफ मंच पर मंचस्थ अतिथियों के उद्बोधन प्रस्तुत किये जा रहे थे तो ठीक इसके सामने स्टेज पर हर उद्बोधन के बाद रंगारंग कार्यक्रम स्काउट व गाइड द्वारा अपनी कला का श्रेष्ठ प्रदर्शन कर दर्शकों व अतिथियों का मन मोह रहे थे।

शिक्षामंत्री जी ने कहा कि स्काउट स्वयं ही अनुशासित होता है। इस एक साल में स्काउट व गाइड की संख्या में 1,29,000 की बढ़ोत्तरी हुई है।

11 जुलाई, 2011 को प्रदेश के हरित राजस्थान कार्यक्रम के तहत पेड़-पौधे लगवाये गये थे उनकी भी सार संभाल करनी है। स्काउट की असली पहचान सेवा के क्षेत्र में होती है, स्काउट का मूल्यमंत्र भी सेवा है।

समारोह के मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत ने अपने उद्बोधन में कहा कि 32 वर्ष बाद जयपुर में जम्बूरेट का आयोजन के बाद अब प्रदेश में राष्ट्रीय स्तर की जम्बूरी होनी चाहिए। राज्य सरकार इसके लिए हर संभव मदद करने को तैयार है। स्टेट चीफ कमिश्नर निरंजन आर्य का नाम लेते हुए कहा कि यदि वे राष्ट्रीय जम्बूरी लाते हैं तो उनका स्वागत है। स्काउट की अपनी पहचान होती है। स्काउटिंग के दौरान छात्र-छात्राओं को मिलने वाले संस्कार उन्हें जीवनपर्यन्त बेहतर इंसान बनाए रखने में मददगार साबित होते हैं। हमारे प्रयास ऐसे हों कि देश के हर घर में स्काउट गाइड हों। मुझे अपने परिवार के बीच आकर बहुत खुशी हुई क्योंकि मैं भी स्काउट रहा हूँ और जीवन में इसके महत्व से अच्छी तरह वाकिफ हूँ। स्काउट की गतिविधियों के आधार पर देश में भाईचारा, दूरदृष्टि, अपनत्व जैसे संस्कार विकसित करने में मदद मिलेगी।

अतिथियों द्वारा मंच पर स्मारिका का विमोचन किया गया तत्पश्चात् अध्यक्षीय भाषण देते हुए महामहिम उत्तर प्रदेश के राज्यपाल माननीय श्री बी.एल. जोशी ने कहा कि आज के प्रोग्राम में आकर मुझे बहुत खुशी हुई तथा यहाँ यदि राष्ट्रीय जम्बूरी होगी तो वो भी उत्कृष्ट होगी। यहाँ मैंने जो लगाव देखा वह प्रशंसनीय है स्काउट-गाइड की गतिविधियाँ देश को जोड़ने का काम करती हैं मेरा यह सौभाग्य है कि मैंने पं. जवाहर लाल नेहरू व श्रीमती इन्दिरा गाँधी दोनों के साथ काम किया है तथा आज की जम्बूरेट भी दोनों के जन्मदिवस की याद दिलाती है 14 नवम्बर व 19 नवम्बर। अन्त में स्टेट कमिश्नर श्री भास्कर ए. सावंत ने सभी का आभार प्रकट किया।

– लक्ष्मीनारायण शर्मा
अनुभाग अधिकारी, शिविरा पत्रिका

नाक से पैदा होगी बिजली ?

वाशिंगटन। नाक से पैदा होगी बिजली... सुनने में ये कुछ अजीब लगता है पर विस्कॉन्सिन-मेडिसन यूनिवर्सिटी के इंजीनियरों ने दावा किया है कि वह जल्द ही ऐसी तकनीक बना लेंगे, जिससे आदमी के श्वसन तंत्र के जरिए बिजली पैदा की जा सकेगी। इसमें कुछ विशेष प्रकार के विद्युत सेंसर नाक में लगाए जाएंगे जिससे सांस लेते समय ऊर्जा पैदा होगी। इस तकनीक को लेकर एक रिपोर्ट एनर्जी एंड एनवायरमेंटल साइंस जर्नल में प्रकाशित हुई है।

कैसे पैदा होगी बिजली : वैज्ञानिकों ने एक खास 'माइक्रोबेल्ट' बना ली है जो हल्की सी भी हवा के गुजरने से कंपन करती है। इंजीनियरों की टीम के प्रमुख प्रोफेसर जूडॉन्ग वांग ने बताया कि पॉलीविनायलीडीन फ्लोराइड (पीवीडीएफ) यंत्र मामूली से यांत्रिक दबाव से ऊर्जा का उत्पादन करने लगती है।

इस प्रक्रिया को पीजोइलेक्ट्रिक इफेक्ट कहते हैं। वांग के मुताबिक शरीर के किसी भी हिस्से में जहाँ पर यांत्रिक दबाव का क्षेत्र बनता है वहाँ पर इस तकनीक का प्रयोग कर बिजली पैदा की जा सकती है।

माइक्रोवॉट में पैदा होगी बिजली : नाक और चेहरे पर लगाई जाने वाली ये तकनीक माइक्रोवाट में बिजली पैदा करेंगे। जिन्हें नैनो टेक्नोलॉजी आधारित प्रक्रिया से बनाए गए छोटे-छोटे जनरेटर कहीं भी सप्लाई कर सकते हैं। इतना ही नहीं इससे मेडिकल साइंस में चमत्कार होगा। आदमी की धड़कन, ब्लड प्रेशर, शुगर, पेसमेकर बैटरी की स्थिति का सही-सही पता चल सकेगा। पेसमेकर बैटरी की स्थिति का सही-सही पता चल सकेगा। पेसमेकर बैटरी तो चार्ज भी हो जाएगी, उसे बदलने का झंझट खत्म होगा और खर्चा भी बचेगा।

भविष्य में और प्रयोग : इस तकनीक के सफल होने के बाद शरीर में खून के प्रवाह, गति, शरीर के तापमान आधारित नई विद्युत उत्पादन प्रणालियाँ बनाई जाएंगी। क्योंकि पीवीडीएफ शरीर को नुकसान नहीं पहुँचाता, और यह एक बेहद छोटा उपकरण है, जो शरीर में कहीं भी लगाया जा सकता है, जिसका मनुष्य को पता भी नहीं चलेगा।

इस मशीन में चिप्स बनाने के लिए तेल की क्या जरूरत

लंदन। तेल बिना चिप्स तलने की कल्पना भी नहीं की जा सकती। पर नामुमकिन को मुमकिन बनाने के लिए विज्ञान है न। इसने हमारी सेवा में 'एयरफ्रायर' नामक ऐसा उपकरण पेश किया है, जो तेल या पानी का इस्तेमाल किए बगैर ही स्वादिष्ट खाना पकाता है। जानी-मानी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण निर्माता कंपनी फिलिप्स द्वारा निर्मित 'एयरफ्रायर' एक ग्रिल और उच्च क्षमता वाले पंखे से लैस है। उपभोक्ताओं को ग्रिल पर सभी सामग्रियाँ रखने के बाद मशीन चालू करनी पड़ेगी। फिर इसमें लगा पंखा गर्म आँच छोड़ेगा, जिससे खाना पकेगा। निर्माताओं के मुताबिक 'एयरफ्रायर' में खाने पर चारों ओर से बराबर आँच लगती है। लिहाजा इसमें खाना कच्चा रह जाने या फिर उसके जलने की आशंका न के बराबर होगी।

जल्द मिलेगी उम्र बढ़ाने वाली 'जादुई गोली'

लंदन। वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को कम करने वाली और आपके जीने की उम्र 150 वर्ष तक पहुँचाने वाली 'जादुई' दवा अब बस कुछ सालों में हासिल हो सकती है। वैज्ञानिकों ने सिडनी में एक सम्मेलन में कहा कि शरीर को गठीला बनाने वाली यह 'जादुई गोली' विकसित होने के शुरुआती चरण में है और इसके सेवन के बाद 100 वर्ष से अधिक जीवन जीने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि इस दवा के सेवन से स्टेम कोशिका थैरेपी जीवन की गुणवत्ता बढ़ा देगी। न्यूसाउथ वेल्स विश्वविद्यालय में 'डीन आफ मेडिसिन' के प्रोफेसर पीटर स्मिथ ने कहा कि मैडिसिन डीन ने ढलती उम्र में खुश और स्वस्थ रहने की संभावनाओं पर व्याख्यान दिया जो व्यक्ति की उम्र बढ़ाने की दिशा में अहम कड़ी साबित होगा। उनके हवाले से 'डेली मेल' ने कहा, 'मुझे पूरी आशा है कि हम मानव जीवन को कुछ दशकों के लिए बढ़ा सकते हैं। लेकिन उद्देश्य केवल आयु बढ़ाना नहीं बल्कि लम्बा स्वस्थ जीवन जीना है।' हार्वर्ड के वैज्ञानिक प्रोफेसर डेविड सिनक्लेयर ने दावा किया, 'हम ऐसी नई तकनीक की शुरुआत देख रहे हैं जिससे एक दिन 150 वर्ष तक जीवन देख सकते हैं।'

अब इंजेक्शन से गायब होंगे मुहांसे

नई दिल्ली। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के वैज्ञानिक ऐसा टीका इजाद करने में जुटे हैं जो युवाओं में मुहांसे की समस्या से निजात दिलाएगा। इस समस्या से दुनियाभर के युवा परेशान रहते हैं। वैज्ञानिकों ने इसकी पूरी तैयारी कर ली है। दुनिया की वैक्सीन बनाने वाली एक बड़ी कम्पनी ने यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया के वैज्ञानिकों से सम्पर्क किया है। लैब के एक वैज्ञानिक ने बताया कि वैज्ञानिकों का मानना है कि जल्द ही मुहांसों से मुक्ति दिलाने वाले टीके सच्चाई बनकर बाजार में आ जाएंगे और हमें कई तरह की क्रीमों से आजादी मिल सकेगी। वैज्ञानिक इसके लिए नए तरीके से सीधे उस प्रोटीन का उपचार कर रहे हैं। जिसे बैक्टीरिया मुहांसे बनाने में इस्तेमाल करते हैं।

भूख भुला देने वाली दवा जल्द

लंदन। मोटापा बिन बुलाए मेहमान की तरह होता है। एक बार गले पड़ जाए तो आसानी से पीछा नहीं छोड़ता। पर क्या आप जानते हैं कि मोटापे से छुटकारा पाना इतना मुश्किल क्यों होता है। मोनाश यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने अपने नए अध्ययन में इसी रहस्य से पर्दा उठाने का दावा किया है। वैज्ञानिकों के मुताबिक शरीर द्वारा 'लेप्टिन' के खिलाफ प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर लेने पर इंसान मोटापे का शिकार हो जाता है। यह हारमोन मस्तिष्क तक पेट भरा होने का संदेश भेजता है, जिससे इंसान कम खाता है।

ग्लास रुई से भरेंगे जख्म

ग्लास की एक किस्म बोरात से तैयार रुई से डायबिटीज पीड़ित लोगों के घाव भरने में सफलता हासिल की गई है। यह शरीर के प्राकृतिक तंत्र को तेजी से सक्रिय कर घाव जल्दी भरती है।

डायबिटीज से ग्रस्त लोगों के घावों को

भरने में काफी मुश्किलें आती हैं। लेकिन जल्द ही ग्लास मटेरियल से बनी रुई उन्हें इस समस्या से हमेशा-हमेशा के लिए निजात दिला देगी। मिसुरी यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी द्वारा तैयार किया गया यह खास मटेरियल डायबिटीज पीड़ित लोगों के गहरे जख्मों को भरने में मदद करेगा। इसके अलावा इसकी मदद से युद्ध और प्राकृतिक या मानव जनित अन्य आपदाओं में बुरी तरह से घायल लोगों के उपचार में भी मदद मिलेगी।

कैसा है मटेरियल : यह रुई बोरात ग्लास के नैनोफाइबर्स से तैयार की गई है। इस पर पिछले पाँच सालों से काम चल रहा था, जो अब कहीं सफल हो पाया है। हालांकि पहले से बायोएक्टिव ग्लास मटेरियल से काम चलाया जा रहा है। इससे सिलिका बेस्ड रुई और पट्टियाँ बनाई गईं, जो हड्डियों को जोड़ने के काम में इस्तेमाल लाई जा रही हैं।

ऐसे काम करता है : बोरात ग्लास शरीर के द्रव के साथ मिलकर तेजी से सक्रिय होता है। यह घुलने के साथ ही ऐसे पदार्थों का उत्सर्जन करता है, जो नई रक्त वाहिनियों के निर्माण में तेजी लाते हैं। इससे घाव तक रक्त संचार बेहतर बनता है। इससे शरीर का प्राकृतिक तंत्र घाव को सामान्य तरीके से भरने में सफल रहता है।

सफल रहा ट्रायल : इस नए मटेरियल से तैयार रुई के चिकित्सकीय परिणाम जानने के लिए 12 लोगों पर क्लीनिकल ट्रायल किए गए। ये सभी डायबिटीज से पीड़ित थे और पिछले एक वर्ष से घावों के न भरने की समस्या से जूझ रहे थे। इस खास रुई के इस्तेमाल के बाद इनके जख्म कुछ हफ्तों से लेकर कुछ महीनों में ही पूरी तरह से ठीक हो गए। खास बात यह देखने में आई कि इस नए मटेरियल से तैयार रुई के संपर्क में आते ही घाव में कुछ ही दिनों में फर्क पड़ना शुरू हो गया।

आगे क्या : अब इस रुई का इस्तेमाल सामान्य मरीजों के घावों पर किया जाएगा। इनमें भी जलने से हुए घाव पर ज्यादा जोर होगा।

चूहों में उगाई गई मानव किडनी

इजराइल के वैज्ञानिकों ने स्टेम सेल्स की मदद से चूहों में छोटे आकार की मानव किडनी उगाने में सफलता प्राप्त की है। उनकी यह सफलता इस बात का संकेत है कि भविष्य में प्रत्यारोपण के लिए नई किडनी विकसित करना संभव होगा, जिससे इस महत्वपूर्ण मानव अंग के लिए किसी दानकर्ता की जरूरत नहीं होगी। चूहों में मानव किडनी उगाने का यह कारनामा किया इजराइल के वीजमैन इंस्टीट्यूट आफ साइंस के प्रो. येर रीजनर और उनके सहयोगियों ने।

वैज्ञानिकों की इस टीम ने मानव और सूअर की कोशिकाओं से चूहों में उक्त किडनियां विकसित करने में सफलता प्राप्त की। इस अनोखे प्रयोग के पश्चात् वैज्ञानिकों ने पाया कि दोनों ही किडनियाँ सामान्य रूप से विकसित हुई और सामान्य रूप से कार्य कर रही है। वैज्ञानिकों ने पाया कि इस प्रकार नई किडनी विकसित करने के लिए मानव कोशिका 7 से 8 सप्ताह की होनी चाहिए। यदि इस समय से पूर्व की कोशिकाएं ली जाएं तो वे हड्डियों और कार्टिलेज में विकसित हो जाती है जबकि इससे पुरानी कोशिकाओं से विकसित अंग को शरीर की प्राकृतिक प्रतिरोधक प्रक्रिया अस्वीकृत कर देती है। वैज्ञानिकों का कहना है कि फिलहाल यह शोध 'प्री क्लीनिकल स्टडी' की अवस्था में है और अगर सब कुछ ठीक-ठाक रहा तो आने वाले कुछ वर्षों में यह एक हकीकत बन जाएगी।

बिना चीर-फाड़ के मुमकिन होगी ब्रेन ट्यूमर की सर्जरी

वाशिंगटन। चौंकिए मत। ब्रिटिश वैज्ञानिक वाकई एक ऐसी तकनीक विकसित करने में कामयाब रहे हैं, जिससे ब्रेन ट्यूमर का ऑपरेशन नाक के रास्ते से किया जा सकेगा। वो भी सिर या चेहरे में कोई भी चीर-फाड़ किए बगैर।

शेफिल्ड हैलमशायर के वैज्ञानिक एक कंपनी के सेवानिवृत्त निदेशक पर इस तकनीक को सफलतापूर्वक आजमा चुके हैं। उन्होंने नाक के जरिए एंडोस्कोप डालकर मरीज के दिमाग में मौजूद ट्यूमर को बाहर निकाल दिया। इस प्रक्रिया में नाक के रास्ते खोपड़ी के निचले हिस्से की ओर एक बारीक छेद किया गया था। फिर टेलीस्कोपिक बाहों के जरिए ट्यूमर को हटाया गया। वैज्ञानिकों की मानें तो नई तकनीक से ब्रेन ट्यूमर का ऑपरेशन बहुत आसान हो जाएगा। इसमें लगभग दो घंटे कम समय लगता है। यही नहीं, मरीज के जीवित बचने की संभावना भी बढ़ जाती है। उन्होंने बताया कि आमतौर पर ब्रेन ट्यूमर का ऑपरेशन क्रैनियोटोमी पद्धति से किया जाता है। इसमें खोपड़ी में चीरा लगाकर उसे खोला जाता है और फिर ट्यूमर निकाला जाता है। इस दौरान मरीज को संक्रमण लगने का खतरा रहता है।

बाल काले रखेंगे फलों के छिलके

लंदन। सफेद बाल अब बीते दिनों की बात होंगे। ब्रिटिश वैज्ञानिकों ने एक फल के छिलके से ऐसी जादुई दवा बनाने का दावा किया है, जो बालों की रंगत बनाए रखने में कारगर होगी। इसके इस्तेमाल से ढलती उम्र के साथ बाल सफेद होने की चिंता से छुटकारा मिल जाएगा।

'डेली एक्सप्रेस' के मुताबिक वैश्विक स्तर पर सौंदर्य प्रसाधन बनाने वाली कंपनी लॉरियाल के एक दल ने इस दवा का निर्माण किया है। उम्मीद की जा रही है कि आने वाले चार सालों में यह दवा बाजार में उपलब्ध हो जाएगी। लॉरियाल में केश विज्ञान के प्रमुख डॉक्टर ब्रूनो बरनार्ड ने बताया कि नई दवा को एक अज्ञात फल से प्राप्त तत्वों से विकसित किया गया है। इस फल में टायरोसिनासे एंजाइम से सम्बन्धित प्रोटीन-2 पाया जाता है, जो रंगों में होने वाले बदलावों को रोकता है। इसके अलावा यह प्रोटीन हानिकारक एंटी ऑक्सीडेंट से बाल की कोशिकाओं में होने वाले ऑक्सिडेटीव तनाव को भी कम करता है। बरनार्ड की मानें तो दवा के बाजार में जाने से कम से कम एक दशक बाद ही वह इसके प्रभावों का सही आकलन कर पाएंगे। इसके फॉमूले को मई 2013 के विज्ञान कांफ्रेंस में पेश किए जाने की उम्मीद है। द लंदन स्कूल ऑफ मेडीसिन एंड डेंटिस्ट्री के प्रोफेसर माइक फिलपोट ने कहा कि इस दवा का बाजार बहुत बड़ा है, पर यह स्पष्ट नहीं है कि यह लोकप्रिय होगी या नहीं। हालांकि विशेषज्ञों का मानना है कि बरनार्ड का दल इस तरह के अनुसंधान में लगा विश्व का सबसे बड़ा दल है। उसके पास इस तरह की प्रक्रिया के बारे में अच्छी जानकारी है।

भामाशाह

हनुमानगढ़

राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय, मुन्सरी (भादरा) में सर्वश्री जगदीश बिश्नोई, रणसिंह नेहरा से प्रत्येक से 11,000 रुपये नकद, श्री लक्ष्मीनारायण व उनके भाइयों द्वारा माईक सेट लागत 7500 रुपये, श्री लालचन्द थालोड़ से 4000 रुपये नकद, सर्वश्री कृष्ण थालोड़, शुभकरण अग्रवाल से प्रत्येक से 3100 रुपये नकद, सर्वश्री दीपाराम नायक, हरपत खाती से प्रत्येक से 2100 रुपये नकद, सर्वश्री गंगाराम कस्वां, डा. मैनपाल, जयचन्द पटवारी, भरतसिंह बैनीवाल, लीखमाराम पटीर, रामकुमार बैनीवाल, देवीलाल से प्रत्येक से 1100 रुपये नकद, सर्वश्री हरिसिंह बुडाबिया, केहरसिंह गोदारा से प्रत्येक से 500 रुपये नकद, श्री सुभाष बेनीवाल से चार वीआईपी कुर्सियाँ लागत 3500 रुपये, श्रीचन्द फगेड़िया से एक मूविंग चेयर, श्री सत्यनारायण बेनीवाल से एक वी.आई.पी. कुर्सी, सर्वश्री रामलाल बेनीवाल, हवासिंह बेनीवाल से प्रत्येक से दो-दो कुर्सी, सर्वश्री राम प्रताप बेनीवाल, बलवीर पड़गड़, रूलीचन्द बेनीवाल, सुरेन्द्र कुम्हार तथा छबीलदास से प्रत्येक से एक-एक कुर्सी, श्री रामप्रताप खीचड़ व भाइयों द्वारा एक पंखा व 2100 रुपये नकद, श्री हरिदत्त नाई से एक पंखा व एक लेक्चर स्टैण्ड, सर्वश्री चन्द फगेड़िया, रामप्रताप बेनीवाल, ऋषिलाल कासनिया, विजयसिंह थोरी, ओमप्रकाश कस्वां, श्रीचन्द भील, सांवलराम कुलड़िया, बीझांराम शर्मा, बलवीर सोनी, ओमप्रकाश बेनीवाल से प्रत्येक से एक-एक पंखा, श्री केसराराम पूनिया से दो पंखे, श्री नत्थूराम गोदारा से एक अलमारी व 400 रुपये नकद, श्री राजेन्द्र थोरी से एक अलमारी लागत 4,000 रुपये, श्री हरसिंह जांगड़ा से दरी लागत 4000 रुपये, श्री मनीराम दुशाद से विद्युत मोटर व पाइप लागत 3600 रुपये, श्री हरिदत्त श्योराण से एक ऑफिस मेज लागत 3200 रुपये, श्रीमती सुरसती से एक अनाज की टंकी लागत 1300 रुपये, प्राप्त हुए। **रा.उ. प्रा.वि., बीबीपुर** को सर्वश्री मदनपाल प्र.अ. नत्थूराम, प्रतापसिंह, बलबीर सिंह पूनियाँ, पवन कुमार, राधेश्याम से एक-एक छत पंखा प्रत्येक की लागत 1050 रुपये। **रा.मा.वि., जोड़किया** में श्री बलदेव सिंह ने अपने भाइयों के सहयोग से 1,25,000 रुपये की लागत से कक्षा-कक्ष साइज (22×15 फिट) (कमरा मय बरामदा) का निर्माण करवाया। **रा.मा.वि., करनपुरा** को श्री गोपालकृष्ण शर्मा (प्र.अ.) से एक वाटर कूलर लागत 28,500 रुपये प्राप्त हुए।

करौली

रा.उ.मा.वि., जोडली को श्री रामस्वरूप मीना से 50 सैट स्टूल टेबल लागत 21,000 रुपये, नेगीराम मीना द्वारा फर्श की लागत 2,100 रुपये, हरजी बैरवा द्वारा फर्श की लागत 1500 रुपये, सर्वश्री काडू मीना, रामविलास (वार्ड पंच) द्वारा एक-एक कमरे का फर्श बनवाया लागत प्रत्येक की 11,000 रु., सर्वश्री लखन लाल मीना, प्रह्लाद सेठ द्वारा 2 जोड़ी लोहे के किवाड़ प्रत्येक की लागत 4,100 रुपये, रोजाराम मीना से 19 दीवार घड़ी लागत 1,100 रुपये, पृथ्वीराज रवारा से नल फिटिंग (1,000 फिट) लागत 10,000 रुपये, सिट्टू पटेल से 15 हाथ घड़ी लागत 1,100 रुपये, सीताराम खारा द्वारा कुएं में बोरिंग लागत 5,100 रुपये, सिट्टू पटेल से बोरिंग हेतु पाइप लागत 2,100 रुपये तथा रामस्वरूप मीना से 10 सैट स्टूल टेबल लागत 4,100 रुपये प्राप्त हुए।

अजमेर

रा.उ.मा.वि., हरमाड़ा में श्री दीपचन्द जी टाटा (डायरेक्टर एम.एम. मार्बल, किशनगढ़) द्वारा माँ सरस्वती की मार्बल मूर्ति लागत 25,000 रुपये, श्री काजी हैदर अली द्वारा एक्वागार्ड लागत 16,000 रुपये, सर्व श्रीमती सीता देवी काला वार्ड पंच, इन्द्रा देवी रामरतन जी, हरचन्द जी, गोपाल सिंह खंगारोत से प्रत्येक से 1,100 रुपये नकद प्राप्त हुए। श्री रतनलाल चोट्या से 500 रुपये नकद प्राप्त हुए। श्री छुट्टन खां जी से 100 रुपये नकद, श्री अमरचन्द कुमावत से एक अलमारी लागत 5,100 रुपये प्राप्त हुई। **रा. मॉडल बा.उ.मा.वि., अजमेर** से रोटरी क्लब राउण्ड टाउन द्वारा 52 जरूरत मंद छात्राओं को गणवेश वितरित, श्रीमती कमला पेसवानी से छात्राओं की फीस हेतु 3,500 रु. प्राप्त हुए। श्रीमती सुशीला शर्मा (क.लि.) से एक छत पंखा प्राप्त हुआ।

अलवर

रा.उ.मा.वि., बहरोड़ में श्री प्रसादी लाल (पूर्व प्रधानाध्यापक) द्वारा माँ सरस्वती की मूर्ति की स्थापना करवाई जिसकी लागत 1,25,000 रुपये। **रा. बालिका उ.मा.वि., गण्डाला** में श्री बस्तीराम यादव (से.नि.अ.) द्वारा 50,000 रुपये की लागत से पेयजल टंकी का निर्माण करवाया गया। **रा.मा.वि., मोहम्मदपुर** में श्री यादराम प्रजापत द्वारा 2,05,000 रु. की लागत से मुख्यद्वार का निर्माण, गेट पर सरस्वती जी की प्रतिमा लगाई। श्री यादराम गुर्जर से हारमोनियम, ढोलक व माईक लागत 6,500 रुपये।

उदयपुर

रा.मा.वि., चन्देसरा में श्री बस्तीमल जी बोकड़िया द्वारा 71,000 रुपये की लागत से एक कमरे का जीर्णोद्धार, श्री देवीलाल देराश्री से 25,000 रुपये नकद, श्री बंशीलाल भावत से 11,000 रुपये नकद, विकास गेगराज शर्मा से 50 कट्टे सीमेन्ट, सर्वश्री राजेन्द्र गुजराती चेतन कुमार नागदा, चेतन कुमार डुंगावत से आर.सी.सी. हेतु लोहे के सरिये, श्री देवीलाल सोनावत से एक रेती ट्रक, श्री हरिश सोनावत से 5,000 रुपये नकद, श्री देवीलाल भावत से गिट्टी ट्रक, सर्वश्री पुरुषोतम नागदा, श्याम जी बोकड़िया से प्रत्येक से 10-10 कट्टे सीमेन्ट, गोवर्धन जी सोनावत से 5 कट्टे सीमेन्ट तथा विष्णु कुमार सेवक से 1,100 रुपये नकद **रा.मा.वि., मातासूला** को सर्वश्री प्रकाश जी सेठ, रघुनंदन जी शर्मा, प्रदीप कोठारी, भगवती लाल, जीतमल, पंचाल सा. द्वारा 50 छात्रों को ड्रेस तथा 10 छात्रों को कम्बल सप्रेम भेंट, भेराजी मीणा (सरपंच) से 3 टेबल स्टूल लागत 3,000 रुपये, श्री मगन बुनकर से 3 टेबल-स्टूल लागत 3000 रुपये रूपाजी मीणा से 2 टेबल-स्टूल लागत 1800 रुपये, श्री तेजा मीणा से एक टेबल-स्टूल लागत 900 रुपये, श्री नाथूलाल मीणा से नकद 1,000 रुपये प्राप्त हुए। **रा.मा.वि., उमरड़ा** को सुविधि महिला मण्डल हिरणमगरी सेक्टर नं. 4 से 56 स्वेटर छात्र/छात्राओं को भेंट, भूतपूर्व मंत्री श्रीमान् देवेन्द्र कुमार धींग, अध्यक्ष श्रीमती अजना जी धींग द्वारा निर्धन छात्र-छात्राओं को स्वेटर वितरण किये गये।

प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक आलोक गुप्ता द्वारा डिपार्टमेंट ऑफ एज्यूकेशन गवर्नमेंट ऑफ राजस्थान, बीकानेर के लिए माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर से प्रकाशित एवं कोटावाला ऑफसेट, 82, सुदर्शनपुरा, इण्डस्ट्रियल एरिया, जयपुर से मुद्रित। © प्रधान सम्पादक : आलोक गुप्ता